

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमच्छतानन्द विरचिता

भास्वती

श्रीमज्ज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्रीदछत्रधरसूरिसूनुना मिरजा-
पुरमण्डलान्तर्गताहीग्रामस्थशङ्करपाठशालायाः प्रधा-
नाध्यापकेन सनातनधर्म्मोपदेशकेन गणक
श्रीमातृप्रसाद (दैवज्ञभूषण) पाण्डेयेन
कृता छात्रबोधिनीनाम संस्कृत-
सोदाहरण भाषा टीका-
सहिता
तेनैव संशोधिता च

Published and Sold by H. D. Gupta & Sons,
PROPRIETORS,
THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE.
BENARES CITY.

*Printed by Gauri Shankar Lal Manager, at
the Chandraprabha Press and by
Jai Krishna Das Gupta, at
the Vidya Vilas Press,*
BENARES.

1917.

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमाञ्छतानन्द विरचिता

भास्वती

श्रीमज्ज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्री ६ छत्रधरसूरिसूनुना मिरजा-
पुरमण्डलान्तर्गताहीग्रामस्थशङ्करपाठशालायाः प्रधा-
नाध्यापकेन सनातनधर्म्मोपदेशकेन गणक
श्रीमातृप्रसाद (दैवज्ञभूषण) पाण्डेयेन
कृता छात्रबोधिनीनाम संस्कृत-
सोदाहरण भाषा टीका-
सहिता

तेनैव संशोधिता च

Published and Sold by H. D. Gupta & Sons,
PROPRIETORS,
THE CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE,
BENARES CITY.

Printed by Gauri Shankar Lal Manager, at
the Chandraprabha Press and by
Jai Krishna Das Gupta, at
the Vidya Vilas Press,
BENARES.

1917.

सूची

—:०:—

छपी

वास्तुसारणी	पं० मातृप्रसादकृत			।=)
अहिवलचक्र	,,	,,	भा.टी.	=)
सरयूपारीणसर्वस्व	,,	,,	,,	≡)

विनाछपी (ग्रन्थालयस्थ)

तिथि चिन्तामणि(करण)	पं० मातृप्रसादकृत	सोदाहरण	भा.टी.
चन्द्रार्की (करण)	,,	,,	,,
तिथि सारणी (करण)	,,	,,	,,
कामधेनु (करण)	,,	,,	,,
करणमञ्जरी (करण)	,,	,,	,,
मकरन्दविवरण (करण)	,,	नूतनोदाहरण	,,
ग्रहचिन्तामणि खण्डन(करण)	,,	सोदाह०	भा.टी.
लोमश संहिता (जातक)	,,	,,	भा.टी.
प्रात्याहिककृत्यकौमुदी (नित्यकर्म)	,,	,,	,,
मिमांशुकण्ठाभरण (धर्मशास्त्र)	,,	सान्वय	भा. टी.
मुहूर्तमञ्जीर (मुहूर्त)	,,		

विवाह पञ्चरत्न (कर्मकाण्ड) पं० छत्रधरकृत भा० टी० सहित

समर्पण ।

—०:-०—

श्रीद्तातचरण,

आपकी ही आज्ञा को शिरोधार्य करके मैने इस भास्वती की संस्कृत तथा सोदाहरण भाषा टीका बनाई है, अन्य विद्वान् लोग तो इसकी यथोचित समालोचना करेहींगे परन्तु इसे अविकल सुनने से आपको विशेष आनन्द होगा ।

जौं बालक कर तोतरि बाता,
सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ।

अत एव आपके ही श्रीचरणों में अर्पण करते हुए मुझे विशेष आनन्द होता है । इति शम् ।

सम्वत् १९६८ वैक्रम
अक्षैतृतीया

भवदीय वात्सल्य भाजन—
मातृप्रसाद पाण्डेय

सूची

—:०:—

छपी

वास्तुसारणी	पं० मातृप्रसादकृत			।=)
अहिबलचक्र	"	"	भा.टी.	=)
सरयूपारीणसर्वस्व	"	"	"	≡)

विनाछपी (यन्त्रालयस्थ)

तिथि चिन्तामणि(करण)	पं० मातृप्रसादकृत	सोदाहरण	भा.टी.
चन्द्रार्की (करण)	"	"	"
तिथि सारणी (करण)	"	"	"
कामधेनु (करण)	"	"	"
करणमञ्जरी (करण)	"	"	"
मकरन्दविवर्ण (करण)	"	नूतनोदाहरण	"
ग्रहचिन्तामणि खण्डन(करण)	"	सोदाह०	भा.टी.
लोमस संहिता (जातक)	"	"	भा.टी.
प्रात्याहिककृत्यकौमुदी (नित्यकर्म)	"	"	"
मिमांशुकण्ठाभरण (धर्मशास्त्र)	"	सान्वय	भा. टी.
मुहूर्तमञ्जीर (मुहूर्त)	"		
विवाह पञ्चरत्न (कर्मकाण्ड)	पं० छत्रधरकृत	भा० टी० सहित	

समर्पण ।

—०:-०—

श्री१तातचरण,

आपकी ही आज्ञा को शिरोधार्य करके मैंने इस भास्वती की संस्कृत तथा सोदाहरण भाषा टीका बनाई है, अन्य विद्वान् लोग तो इसकी यथोचित समालोचना करेहींगे परन्तु इसे अविकल सुनने से आपको विशेष आनन्द होगा ।

जौं बालक कर तोतरि बाता,
सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ।

अत एव आपके ही श्रीचरणों में अर्पण करते हुए मुझे विशेष आनन्द होता है । इति शम् ।

सम्वत् १९६८ वैक्रम
अक्षैतृतीया

भवदीय वात्सल्य भाजन—
मातृप्रसाद पाण्डेय

भूमिका।

—:-o-:—

सत्स्वादुमोदकमदन्नपि भक्तहस्ताद्-
दूर्वादलं कृषति जेमनहेतवे यः।
तं ज्ञप्ति वैभववशाद्विबुधादि पूज्यं
वन्दे महागणपतिं निजबुद्धिवृद्ध्यै ॥ १ ॥

प्रियपाठकगण,

अपनी भाषा की उन्नतिही सब प्रकारके उन्नतियों का मूलहै। अत एव देशोन्नति साधन के लिये, साक्षर लोगों का यह कर्त्तव्य है कि पहले अपने यहां के प्राचीन ज्ञान विज्ञानों से भाषा के भण्डार को पुष्ट करें तत्पश्चात् नवीन विज्ञानों के समावेश-से समलंकृत करें।

साधारण कृषक से लेकर बड़े २ नरपति तक सभी इस बात को जानते हैं कि कार्य के सफलता में काल (समय) एक असा-धारणकारण है। समय पर किया हुआ कार्य थोड़े से प्रयत्न में ही ऐसी सफलता प्राप्त करता है, कि वैसी सफलता असमय में कोटि यत्न करने पर भी असंभव है समय के प्रतिकूल होने से किसी की कुछ नही चलती और समय के अनुकूल होन से सिद्धि करतलगतसी रहती है।

प्राचीन काल में समय पर कार्य करने का इतना ध्यान दिया गया, कि इसका एक पृथक् विज्ञान (Science) ही ब-नगया। समय विज्ञान ज्योतिष मुहूर्त विज्ञानादि उसी के नाम हैं। इस विज्ञानकी भी दो शाखाए हुई (१) गणित और (२) फलित, फलित में इस विषय का वर्णन है कि किस मुहूर्त में कौनसा कार्य करना चाहिये और गणीत में समय का निर्धारण किया जाता है।

समय निर्धारण एक गहन विषय है और इस के लिये सूर्य सिद्धान्त ब्रह्मसिद्धान्त आदि बहुत से बड़े २ सिद्धान्त ग्रन्थ बन चुके हैं परमकारुणीक पंडितों ने अल्पबोध लोगों के लिये करणकुतूहल-ग्रहलाघव-मकरन्दादि अनेक ग्रन्थ बनाकर उस विज्ञान को और भी सुलभकर दिया, और इन्ही ग्रंथों के आधार पर सब पञ्चाङ्ग बनते हैं जिस्से कि सर्व साधारण को लौकिक वैदिक कार्य्य करने का समय निश्चित करने में अत्यन्त सुभीता होगयाहै ।

धर्म्मानुरागी आर्य्य सन्तानको कार्य करने के लिये सिवाय पञ्चाङ्ग के अन्य गति नही है ।

यह "भास्वती" ग्रन्थभी पञ्चाङ्ग बनाने में करणकुतूहल-ग्रहलाघव-मकरन्दादि के श्रेणी का है परन्तु विशेषता इसमे इतनी है कि यह सूर्य सिद्धान्त* का अनुसरण करती है इसी से इस्का नाम (भास्वती) रक्खा गया है ।

इस ग्रन्थको बने हुए ८१२ वर्ष हुए और वराहमिहिर+के उपदेशानुसार वेधकरके ग्रहों की ठीक स्थिति जानकर इस्की रचना की गई है इसी से लोकोक्तिभी प्रसिद्ध है कि 'ग्रहणे भास्वती धन्या' ग्रहण का समय निकालने में भास्वती धन्या है । और ज्योतिषशास्त्र के प्रत्यक्ष होने में सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहणही प्रधान साक्षी है । यथा-प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्र चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ।

इस ग्रन्थ की तीन छपी हुई प्रतियां मुझे बडे यत्न करने पर मिलीं, एकतो 'अखबार प्रेस' की सम्वत् १९२३ की छपी हुई प्रति. दूसरी 'विनायक प्रेस' की सम्वत् १९४२ की छपी हुई प्रति, और तीसरी 'भारतजीवन प्रेस' की सम्वत् १९४९ की छपी हुई प्रति, और मेरे वृद्ध प्रपितामह श्री ६ पं० शङ्कर पाण्डेयजीके पिता श्री ६ पं० सदाशिव पाण्डेय जी की एक हस्तलिखित प्रति सम्वत् १८३२ की स्वयम् मेरे पास वर्तमानथी सुहृद्वर पं० श्रीराधाकान्त

* श्रीसूर्य सिद्धान्त समं समासात् । भा०

+अथ प्रवक्ष्ये मिहिरोपदेशात् । भा०

पाण्डेय जी नव्वावगंज काशी से मुझे सम्वत् १९२३ की लिखी उनके पूर्वज अखिलज्योतिषशास्त्र पारावारीण प० श्रीकाशी प्रसाद पाण्डेय जी की लिखी हुई प्राप्त हुई और पं० श्रीशारदा प्रसाद तिवारी भदैनी बनारस से उन के पूर्वज पं० आत्माराम त्रिपाठी की लिखी हुई संवत् १८३५ की एक खण्डित प्रति प्राप्त हुई अत एव उक्त महानुभावों को अनेकानेक धन्यवाद देताहूँ।

इसी प्रकार मैने इन छवों प्रतियों को मिलाया और जहाँ पर इन में भेद पड़ा वहाँ पर जिस ग्रन्थ का पाठ मुझे प्राचीन तथा शुद्धजान पड़ा उसी का ग्रहण किया और उस पर अपनी भाषा की उन्नति तथा छात्रों के उपकारार्थ उदाहरणों के सहित 'छात्रबोधिनी' नामकी संस्कृत तथा हिन्दी टीका बनाई और निजनिर्मित 'करणमञ्जरी' नामक ग्रन्थ से सारणी भी देदिया और वर्षादिक का विश्वा कलादिक का गतवर्षसंख्या तथा दिन गण संख्या और अधिमास जानने का प्रकार भी रख दिया है।

अव यदि इस पुस्तक से छात्रों का कुछभी उपकार होगा तो मैं अपने को कृतकार्य समझूगा। इति शम्।

सम्वत् १९६८ वैक्रम
कार्त्तिक शुक्ला
एकादशी

भवदीय कृपापात्र
मातृप्रसाद पाण्डेय
शङ्कर पाठशाला
मौ. आही, पो. कछवा
जि. मिर्जापुर

भास्वतीस्थविषयसूची

तिथ्यादि ध्रुवाधिकार

ग्रहध्रुवाधिकार

पञ्चाङ्गस्पष्टाधिकार

ग्रहस्पष्टाधिकार

त्रिप्रश्नाधिकार

चन्द्रग्रहणाधिकार

सूर्यग्रहणाधिकार

परिलेखाधिकार



❀ शोधन पत्र ❀

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति		अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
स्थाप्यः	स्थाप्या	४	१६		५३	५२	२४	९
शास्रब्द	शास्राब्द	४	२०		३०	२८	,,	,,
शुद्धे चन्द्राष्ट	शुद्धेश्चन्द्राष्ट	५	२१		८	९	,,	,,
नखाश	नखांश	७	३		४५	४१	,,	,,
केन्द्रात्	केन्द्राद्	८	७		२३	१८	,,	,,
खगो	खग	९	११		०	५४	,,	,,
काशी का	काशी की	१०	१८		३८	३१	,,	,,
गणिता	गणितात्	१२	१४		६२१	६२०	,,	१२
शास्राब्द	शास्त्रादि	१५	३		५६९	५३८	,,	१२
१९७८	१९७७	१८	२०	}	१५	७	,,	१३
२००२	२००१	,,	२०	}	५३	४४	,,	,,
२० २६	२० २५	१९	१	}	३१	२१	,,	,,
२० ५०	२० ४९	,,	,,	}	८	५७	,,	,,
२० ७४	२० ७३	,,	,,	}	४६	३४	,,	,,
२० ९८	२० ९७	,,	,,	}*	२३	१०	,,	,,
२१ २२	२१ २१	,,	,,	}	१	४७	,,	,,
२१ ४६	२१ ४५	,,	,,	}	३८	२३	,,	,,
२१ ७०	२१ ६९	,,	,,	}	८	७	,,	२२
२१ ९४	२१ ९३	,,	,,	}	४५	४४	,,	२२
को	में	२०	१२		२१	२०	,,	२६
में	को	,,	,,		५८	५७	,,	,,
बनाई	दी	,,	२६		३४	३३	,,	,,
३०८	३०७	२४	८		११	१०	,,	,,

❀ येह अशुद्धियां 'संवत्सर अब्दादि निर्माणाय शकांक' में हुई हैं, १९७७ के जगह १९७८ छप गया और आगे भी २४ चालन देकर एक अंक की अशुद्धियां बराबर होती गई, इसी प्रकार २२-२४ के पृष्ठ में भी भौम और बुध के शङ्कांक में हुई हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति
४७	४६	२४	२६	१६	१७	६२	६
२४	२३	,,	,,	१७	१८	६६	९
१	०	,,	,,	१८	१९	,,	१३
३७	३६	,,	,,	१७-१८	१८-१९	,,	२१
९२७	१०२७	२६	७	१७-१८	१८-१९	६९	१७
अभिष्ट	अभीष्ट	४२	१०	१७-१८	१८ १९	७०	७
मध्यमास	मध्यममास	४२	१६	४४	४०	७२	५
रिप्वभ्र	रिप्वभ्र	४४	४	१७	९	७२	१२
कले:	कले: "	४५	८	बु. शु. शी.	बु. शु. म.	८४	१५
ता	तो	४८	४	मं.गु.श.म.	मं.गु.श शी.	८४	१५
रशा	रसा	५३	२	फलवच्छीघ्र-फलं	फलवच्छीघ्र-फलं	८६	१८
नक्षत्र	योग	५९	६				
भुक्त	भोग्य	५९	१८	होता	होतो	८८	१८
१४	१५	६०	३	छायाशङ्कु-घटीविषय:	शङ्कुघटी-विधी	१२७	२०
१४	१५	६०	८				
१४	१५	६०	२२				
१५	१६	६१	३	त्रिशाद्धि:	त्रिंशाद्धि:	१३३	१५
१५	१६	,,	६	योग्य	याम्य	१३७	१४
१५	१६	,,	११	११	१०	१४६	१४
१६	१७	,,	१६	पवणि	पर्वणि	१५०	१२
१६	१७	,,	२०	शरस्तना	शरस्तता	१५२	१९

नोट ८ वे पृष्ठ में ८ वीं पंक्ति के नीचे यह श्लोक चाहिये—

"त्रिवदशेषैर्नयदास्तिकिञ्चित्तदा खखागैरदमेवभक्तम् ।
लब्धं तु दत्वा रदमेव केन्द्रं शुद्ध्यष्टभागाठदनखांश युक्तम्" ॥१॥

१३४ वे पृष्ठ मे ११ वें श्लोक के नीचे यह चाहिये कि—

इतिश्रीमच्छनानन्द विरचितायां भास्वत्यां सूर्यग्रहणाधिकार: षष्ठ: ॥६॥

१४९ वें तथा १४९ वें पृष्ठ में सूर्यग्रहणाधिकार के जगह चन्द्र-ग्रहणाधिकार छप गया है ।

इसके संस्कृत टीका में विशेष अशुद्धी होंगी व द्वितीया वृत्ति में ठीक की जायगा ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भास्वती

संस्कृत भाषा टीकोदाहरण सम्वलिता ।

गौरीविलासिनः पादौ ध्यायं ध्यायं पुनःपुनः ।
भास्वत्याः क्रियते टीका मयेयं छात्रबोधिनी ॥१॥

मङ्गलं ग्रन्थसमयश्च-

नत्वा मुरारेश्चरणारविन्दं
श्रीमाञ्छतानन्द इति प्रसिद्धः ।
तां भास्वतीं शिष्य हितार्थमाह
शाके विहीने शशिपक्षखैकैः ॥१॥

सं० टी०-ग्रन्थादौग्रन्थमध्येग्रन्थान्ते ग्रन्थ निर्विघ्न समाप्त्यर्थं तथा शिष्येभ्य आनुषङ्गिक मङ्गलार्थञ्च मङ्गलाचरणमाचरणीयमिति शिष्टाचारः, श्रीमाञ्छतानन्द संज्ञकेनेति प्रसिद्धः य आचार्यवर्यः सः मुरारेश्चरणारविन्दं श्री कृष्णस्यपादपद्मं नत्वा शिष्यहितार्थं तां भास्वतीमाह कदा शशिपक्षखैकैर्विहीनेशाके, अत इष्टशाकमध्ये शशिपक्षखैकैर्विहीने, ऊनितेसति ग्रन्थोत्पत्तेरब्दाभवन्ति ॥ १ ॥

भा० टी०-श्रीमान् शतानन्द इस नाम से प्रसिद्ध जो आचार्य वह श्रीकृष्णजी के चरण कमलों को नमस्कार कर शिष्यों के हित के लिये भास्वती नाम का ग्रन्थ बनाते हैं। वर्तमान शाका में १०२१ घटाने से इस ग्रन्थ के उत्पत्ति का वर्ष होता है। (इसी का नाम शास्त्राब्द भी है) ॥ १ ॥

उदाहरण—वर्तमान शाका १८३३ में १०२१ घटाया तो शास्त्राब्द ८१२ हुआ ॥ १ ॥

गतकलिः प्रकारान्तरेण शास्त्राब्द विधिश्च-

शाको नवाद्रीन्दुकृशानु युक्तः
कलेर्भवत्यब्द गणास्तु वृत्तः।
वियन्नभोलोचनवेद हीनः
शास्त्राब्दपिण्डः कथितः स एव ॥ २॥

सं० टी०—इष्टशकमध्ये नवाद्रीन्दुकृशानुयुक्ते सति कलेर्गताब्दा गतवर्षा भवन्ति तेषु कलिगत वर्षेषु वियन्नभोलोचनवेद हीने सति स एवाब्दपिण्डोभवति तमेव शास्त्राब्द पिण्डं कथयन्ति दैवज्ञाः ॥ २ ॥

भा०टी०—वर्तमान शाका में ३१७९ युक्त करने से गत कलि होता है। गतकलि में ४२०० को घटाने से शास्त्राब्द पिण्ड कहाता है ॥ २ ॥

उदाहरण-वर्तमान शाका १८३३ में ३१७९ युक्त किया तो गतकलि ५०१२ हुआ और गतकलि ५०१२ में ४२०० घटाया तो शास्त्राब्द ८१२ हुआ ॥२॥

संवत् शाक विधिः—

कृतयुगाम्बर वह्निभिरुज्झितो
गतकलिः किल विक्रमवत्सरः ।
शरहुताशनचन्द्र वियोजिते
भवति शाक इह क्षितिमण्डले ॥ ३ ॥

सं०टी०-गतकलिमध्ये कृतयुगाम्बरवह्निभिरुज्झिते सति श्रीमद्विक्रमादित्यसम्वत्सरो भवति तस्मिन् वत्सर मध्ये शरहुताशनचन्द्र वियोजिते विगते सति इह क्षितिमण्डले भूमण्डले शालिवाहनीयः शाको भवतीति नियमः ॥ ३ ॥

भा० टी०-गतकलि में ३०४४ घटाने से विक्रमसंवत्सर होता है । और विक्रम संवत्सर में १३५ घटाने से इस भूमण्डल में शाका होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण—गतकल ५०१२ में ३०४४ घटाया तो विक्रम संवत् १९६८ हुआ । इस सम्वत् १९६८ में १३५ घटाया तो शालिवाहन का शाका* १८३३ हुआ ॥ ३ ॥

---

* वर्तमान शाकामें ७८ युत करने से ईसवी सन्, ५१५ हीन करने से फसली सन्, ५०४ हीन करने से हिजरी सन् (१०० वर्ष कुमरी में तीन वर्ष बढता है तहां पर अन्तर का ध्यान रक्खै) होता है । जैसे शाके १८३३ में ७८ युत किया तो ईसवी सन् १९११ हुआ । शाका १८३३ में ५१५ हीन किया तो फसली और बंगला सन् १३१८ हुआ । शाका १८३३ मे ५०४ हीन किया तो हिजरी सन् १३२९हुआ ॥

सम्वत्सरपालक-शुद्धि सूर्य्यध्रुव विषयः—

अथ प्रवक्ष्ये मिहिरोपदेशा-
च्छ्रीसूर्य्यसिद्धान्तसमं समासात् ।
शास्त्राब्दपिण्डः स्वरशून्यदिग्घ्न-
स्तानाग्नियुक्तोष्टशतैर्विभक्तः ॥ ४ ॥
लब्धन्नगैः शेषितमङ्गयुक्तः
सूर्य्यादिसम्वत्सरपालकः स्यात् ।
शेषं हरे प्रोह्यपृथग् गजाशा
लब्धं रवेरौदयिको ध्रुवः स्यात् ॥ ५ ॥

सं०टी०—अथानन्तरं मिहिरोपदेशात् सूर्यशिक्षातः समासात् संक्षेपात्, श्रीसूर्यसिद्धान्तसमं तुल्यं यथास्यात् तथा वक्ष्ये पूर्वोक्त शास्त्राब्द पिण्डः स्वरशून्यदिग्भिर्गुणित-स्तानाग्निभिर्युक्तस्तदष्टशतैर्विभक्तो लब्धं ग्राह्यम्।पूर्वानितं यल्लब्धं तत्राङ्गयुक्तं सप्तभिः शेषितं सूर्य्यादिसंवत्सर पालकः स्यात् यदष्टशतविभक्तेऽवशिष्टं शेषं तद्धरेप्रोह्य शोध्य शेषं शुद्धि संज्ञा स्यात् सा शुद्धिर्द्विधास्थाप्यः गजाशाभि-र्भक्तैकत्र लब्धः सूर्यस्योदयकालिको ध्रुवः स्यात् ॥४॥५॥

भा० टी०—अब मैं मिहिराचार्य के उपदेश से संक्षेपतः श्री सूर्य्यसिद्धान्त के समान (सूर्य आदिक के स्पष्ट करने की विधि) कहता हूं। शास्त्रब्द पिंड को १००७ से गुणा कर

उसमें ३४९ युक्त करके उसमें ८०० भाग दे फिर लब्ध में ६ युक्त करके ७ का भाग देने से जो शेष बचे वह सूर्य्यादि सम्वत्सर का पालक होता है। और पूर्व शेष को भाजक में घटाने से शुद्धि होती है। उसको दो जगह धरे एक जगह १०८ का भाग देने से जो लब्ध फल मिले वह मध्यम सूर्य का ध्रुवा होता है ॥ ४ ॥ ५ ॥

उदाहरण—शास्त्राव्द ८१२ को १००७ से गुणा किया तो ८१७६८४ हुए इस में ३४९ युत किया तो ८१८०३३ हुएइसमें ८०० का भाग देने से लब्ध १०२२ शेष ४३३ मिले लब्ध १०२२ में ६ युक्त किया तो १०२८ हुए इसमें ७ का भाग दिया तो शेष ६ बचे इस से सूर्य से छठवाँ शुक्र सम्वत्सर का पालक हुआ। हर ८०० में पूर्व शेष ४३३ को घटाया तो शुद्धि ३६७ हुई शुद्धि ३६७ में १०८ का भाग दिया तो लब्ध ३ मिले शेष ४३ को ६० से गुणा किया तो २५८० हुए इसमें हर १०८ का भाग दिया तो लब्ध २३ मिले शेष ९६ को ६० से गुणा किया तो ५७६० हुए इसमें १०८ का भाग दिया तो लब्ध ५३ मिले इस प्रकार चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के प्रातः काल सूर्य का अंशादि ध्रुवा ३।२३।५३ हुआ ॥४॥५॥

चन्द्र ध्रुव विधिः—

सहस्रनिघ्नः खविधूनितोऽधः
खसिद्धि भागोन भचक्रशेषः।
खपञ्च संयुक्तदशघ्नशुद्धे चन्द्रा-
ष्टभागाभ्यधिकः शशाङ्कः ॥ ६ ॥

सं० टी०—अब्दपिण्डः शास्त्राब्दः सहस्रगुणितः

खविधूनितोऽधः स्थानद्वये प्रस्थाप्यः तले खसिद्धिभागा-
प्तफलेनोनस्तदेव भचक्र २७०० शेषः तदेवशुद्धे खप-
ञ्चयुक्तो दशघ्नः चन्द्राष्टभागेन यल्लब्धं तद्भचक्रशेष-
मध्ये युते सति चन्द्र ध्रुवः स्यात् ॥ ६ ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को १००० मे गुणा कर उसमें १० घटाय दो स्थान में स्थापित कर एक स्थान में २४० का भाग देने से जो लब्ध मिले उसको दूसरे स्थान पर रक्खे हुए अंक में घटावै फिर उसको भचक्र २७०० से शेषित करैं। शुद्धि में ५० युत कर के १० से गुणि उसमें ८१ का भाग देने से जो लब्ध मिलै वह भचक्र के भाग से जो शेष वचा है उसमें युक्त करने से मध्यम चन्द्रमा का ध्रुवा स्पष्ट होता है॥ ६ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १००० से गुणा तो ८१२००० हुए इसमें १० घटाया तो ८११९९० हुए इसको दो स्थान में स्थापित किया एक स्थान ८११९९० में २४० का भाग दिया तो अंशादि लब्ध ३३८३।१७।३० मिले इसको दूसरे स्थान ८११९९० में घटाया तो ८०८६०६।४२।३० हुए। इसको भचक्र २७०० से शेषित किया तो शेष १३०६।४२।३० बचे। शुद्धि ध्रुवा ३६७ में ५० युक्त किया तो ४१७ हुए इसको १० से गुणा किया तो ४१७० हुए इसमें ८१ का भाग देने से लब्ध अंशादि ५१।२८।५३ मिले इसमें भचक्र से शेषित अंक १३०६।४२।३०। को युक्त किया तो मध्यम चन्द्रमा का ध्रुवा १३५८।११।२३ हुआ ॥ ६ ॥

केन्द्र ध्रुव विधिः—

रुद्राहतोवेदयुतास्त्रिवेद-

शेषश्चतुःषष्टिगुणो रदाढ्यः।
पृथक् [illegible]
शुद्धयष्टभागाब्दनखांशयुक्तः॥ ७॥

सं. टी.-अब्दपिण्डः रुद्राहत एकादशगुणितोवेदचतुर्भिर्युतस्त्रिवेदैः शेषितस्तदेवचतुःषष्टिगुणितो रदाढ्यः द्वात्रिंशद्युतः तत्पृथक् स्थान द्वयेस्थाप्यः तले खखागाप्तफलेनोपरिपुनः पुनः शुद्ध्यष्टभागेनचाब्दनखांशेन युतइन्दुकेन्द्रोभवति॥ ७॥

भा० टी०-शास्त्राब्द को ११ से गुणि के ४ युत करै फिर उसमें ४३ का भाग देने से जो शेष बचै उसको ६४ से गुणि के उसमें ३२ युक्त करके दो स्थान में स्थापित करै एक स्थान में ७०० का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसे दूसरे में युत करै फिर शुद्धि में ८ का और शास्त्राब्द में २० का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसको भी उसमें युक्त करने से चन्द्रमा का केन्द्रध्रुवा स्पष्ट होता है॥ ७॥

उदाहरण-शास्त्राब्द ८१२ को ११ से गुणा किया तो ८९३२ हुए इसमें ४ युक्त किये तो ८९३६ हुए इसमें ४३ का भाग दिया तो शेष ३५ बचे इसको ६४ से गुणा किया तो २२४० हुए इसमें ३२ युत किया तो २२७२ हुए इसको दो जगह स्थापित किया एक जगह २२७२ में ७०० का भाग दिया तो अंशादि लब्ध ३।१४।४४ मिले इसको दूसरे जगह २२७२ में युक्त किया तो अंशादि २२७५।१४।४४ हुए शुद्धि ३६७ में ८ का भाग दिया तो अंशादि लब्ध ४५।५२।३०

मिले और शाकाब्द ८१२ में २० का भाग दिया तो लब्ध अंशादि ४०।३६।० मिले सबको एकत्र जोड़ दिया तो मध्यम चन्द्र केन्द्र का ध्रुवा २३६१।४३।१४ हुआ ॥ ७ ॥

चन्द्र ध्रुवे केन्द्रसंस्कारविधिः—

केन्द्रे भवघ्नादिषु नेत्रचन्द्रै-
र्लब्धोनितो मध्य विधुः ध्रुवःस्यात् ॥८॥

सं० टी०—चन्द्रकेन्द्रात् भवघ्नादिषुनेत्रचन्द्रैर्यल्लब्धं तेनोनितो मध्य विधुः स्पष्ट मध्य चन्द्र ध्रुवः स्यात् ॥८॥

भा० टी०—चन्द्रमा के केन्द्र ध्रुवाको ११ से गुणिकर १२५का भाग देय जो लब्ध मिलै वह चन्द्रमा के ध्रुवा में घटाने से चन्द्रमा का स्पष्ट ध्रुवा होता है ॥ ८ ॥

उदाहरण—चन्द्रमाके केन्द्रध्रुवा २३६१। ४३ । १४ । को ११ से गुणातो २५९७८। ५१।३४ हुए इसमें १२५ काभाग दिया तो लब्ध २०७। ४९।५३। मिले इसको चन्द्रमा के ध्रुवा १३९८। ११।२३ में घटाया तो मध्यम चन्द्रमा का ध्रुवा ११९०।२१।३०हुआ ॥८॥

राहु ध्रुव विधिः—

पातः शरघ्नो नगनेत्रयुक्त-
स्त्रिनन्दशेषो गगनाङ्क निघ्नः ।
द्विरिन्दु रामाप्तखरामहीनः
सांशोब्द बृन्दात्पुनरङ्कचन्द्रैः ॥ ९ ॥

सं० टी०—अब्दपिण्डःशरघ्नः पञ्चगुणितः नगनेत्रैः सप्तविंशतिभिर्युतस्त्रिनन्दैः शेषितः गगनाङ्केन निघ्नः द्विस्थः तत्रइन्दुरामांशैश्चन्द्ररामैर्भक्तः यल्लब्धं तत्खरामसंयुक्तं तेनोपरि हीनं पुनरब्दपिण्डादङ्कचन्द्रैर्भक्ते यल्लब्धं तेन युतः पातध्रुवः स्यात्। त्रिनन्दशेषेयदाशून्यंस्यात्तदाचतुःपञ्चशतानि संयोज्य ततोगगनाङ्कानिघ्नेति क्रियाकार्या किन्त्वत्र-चतुःपञ्चाशत् योजिते सति पातध्रुवो भवतीतिनियमः॥९॥

"न प्राप्यते यत्र त्रिनन्द शेष-
स्तदाखखाब्धीषुयुतं प्रकुर्यात्।
तदा बुधैः षष्टिगुणं विधेयम्
पूर्वोक्तवत्पात खगोध्रुवः स्यात्" ॥१॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को ५ से गुणि उसमें २७ युक्त कर के ९३ का भाग देवै शेषको ६० से गुणि दो जगह रक्खै एक जगह ३१ के भाग से जो लब्ध मिलै वह दूसरे जगह घटावै फिर उसमें ३० घटाय शास्त्राब्द में १९ का भाग देने से जो लब्ध मिलै वह उसमें युक्त करने से राहु का ध्रुवा स्पष्ट होता है ॥ ९ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ५ से गुणातो ४०६० हुए इस में २७ युक्त किया तो ४०८७ हुए इसमें ९३ का भाग दिये तो शेष ८८ बचे इसको ६० से गुणातो ५२८० हुए फिर इसको दो स्थानमें स्थापित्त किया एक स्थान ५२८० में ३१ का भाग देने स लब्ध अंशादि १७०।१९।२१ मिले इसको दूसरे स्थान में रक्खे हुए

५२८० में घटाया तो ५१०९।४०।३९। हुए इसमें ३० घटाया तो ५०७९।४०। ३९ हुए शाकाब्द ८१२ में १६ का भाग देनेसे लब्ध अंशादि ५०।४५।० मिले इसको ५०७९।४०।३९ में युत किया तो राहुका ध्रुवा ५१३०।२५। ३९ हुआ ॥ ९ ॥

सूर्य चन्द्रयोः चन्द्रकेन्द्रस्य वीज विधिः

पलप्रभा षण्णिहता दशाप्ता
पुनश्च भुक्त्या गुणितः क्रमेण ।
शतोद्धृतं तदृणकं रवेः स्याद्
धनं च चन्द्रे खलु केन्द्रके च ॥१०॥

सं० टी०--पलप्रभाषड्भिर्गुणितादशभिर्भक्ता पुनः स्वस्वभुक्त्या क्रमेण गुणिता शताप्ता यल्लब्धं तत्सूर्य्यस्य ऋणाभिधानं चन्द्रचन्द्रकेन्द्रयोः धनाभिधानं देशान्तरं भवति ॥ १० ॥

भा०टी०—पलभाको ६ से गुणिके १० काभागदेवै लब्ध को अपनी २ भुक्तिसे गुणा करके १०० का भाग देने से लब्ध सूर्य का ऋण और चन्द्र-चन्द्र केन्द्र का धन संज्ञक अंशादि वीज होता है ॥ १० ॥

उदाहरण —काशीका पलभा ५।४५ को ६ से गुणातो ३४।३० हुए इसमें १० का भागदिया तो लब्ध ३।२७ मिले इसको सूर्यके भुक्ति ७ से गुणा किया तो २४।९ हुए इसमें १०० का भाग दिया तो लब्ध सूर्यका वीज अंशादि ऋण ०।१४।२९ हुआ । पूर्वके लब्ध ३।२७ को चन्द्रमा के भुक्ति ९७ से गुणा किया तो ३१०।३० हुए

इसमें १०० का भाग देनेसे चन्द्रमाका बीज अंशादि धन ३।६।१८ हुआ। पूर्वके लब्ध ३।२७ को चन्द्रकेन्द्र के भुक्ति १०० से गुणा किया तो ३४९।० हुए इसमें १०० का भाग दिया तो चन्द्रकेन्द्र का बीज अंशादि धन ३।२७।० हुआ ॥ १० ॥

"मेषादिगे सायनभाग सूर्ये
दिनार्द्धभा या पलभा भवेत्सा ।
त्रिष्टा हतास्युर्दशाभिर्भुजङ्गै-
र्दिग्भिश्चराद्धानि गुणो धृतान्त्या ॥ १ ॥
कलासप्त ७ रवेर्भुक्तिः
खनन्दाश्च ९० विधोः स्मृताः ।
शतं १०० कलानि केन्द्रस्य
राहोश्चैव जिना २४ गतिः" ॥ २ ॥

देशान्तर विधिः-

रेखा स्वदेशान्तर योजनघ्नी
गतिर्ग्रहस्याभ्रगजैर्विभक्ता ।
लब्धा हि लिप्ता खचरे विधेयाः
प्राच्यामृणं पश्चिमतो धनन्ताः ॥११॥

सं० टी०-रेखाजनितस्वदेशान्तरयोजनं ग्रहभुक्त्या-गुणितोऽभ्रगजैर्बिभक्ता लब्धं रेखायाः पूर्वपश्चिमक्रमेण-ऋणधनसंज्ञकं देशान्तरं भवति ॥ ११ ॥

"पुरीरक्षसां देवकन्याथ काञ्ची

सितः पर्वतः पर्यली वत्सगुल्मौ ।
पुरी चोज्जयिन्याह्वयं गर्गराटं
कुरुक्षेत्रमेरू भुवो मध्य रेखा ॥ १ ॥

यल्लङ्कोज्जयिनीपुरीपरि कुरुक्षेत्रादि देशान् पृशत् ।
सूत्रं मेरु गतं बुधैर्निगदिता सा मध्य रेखा भुवः" ॥२॥

भा० टी०---रेखा के योजनको भुक्ति से गुणा कर ८० का भाग देने से जो लब्ध मिलै वह कलादि रेखा के पूर्व पश्चिम क्रमसे ऋण धन संज्ञावाला देशान्तर होता है ॥११॥

उदाहरण—कुरुक्षेत्र से ६४ योजन काशी है इस को सूर्य की भुक्ति ७ से गुणा तो ४४८ हुए इसमें ८० का भाग दिया तो सूर्य का देशान्तर कलादि ५।३६ हुआ । एवं चन्द्रमा का ७२।० चन्द्र-केन्द्रका ८०।० रेखा से काशी पूर्व है अतः देशान्तर ऋण संज्ञक हुआ ॥ ११ ॥

देशान्तरं दृग्गणिता प्रसाध्य
इतीह कल्पान्त समोध्रुवःस्यात् ॥१२॥

इति श्रीमच्छतानन्द विरचितायां भास्वत्यां
तिथ्यादि ध्रुवाधिकारः प्रथमः ॥ १ ॥

सं०टी०—रेखायां स्वदेश संस्कारोनास्तितस्मात्प्राक् पश्चाद् भागे देशान्तरो नास्तीति सा रेखाकस्मिन् कस्मिन् देश इत्याकांक्षयां श्रीसूर्यसिद्धान्त उक्तं राक्ष-सालयदिवोकशैलयोर्मध्यसूत्रगारोहितकपर्वती च सन्नि-

हितंशर इत्यादिशेषाज्ज्ञातव्या रेखेति देशान्तरंदृग्गणितमि-
त्यत्रदृग्गणितग्रहणं तस्माद्देशान्तरं साध्यम् तेन संस्कृता
स्वदेशेदृग्गोचराः सन्तीत्युक्तम् तद्यथा यदा ग्रहणेखग्रा-
सो भवति तदा देशान्तरसंस्कारं विना ग्रहणगणितं कृत्वा
तद्देशान्तरं रेखाजनितं ज्ञेयम् तत्रोन्मीलनकालः साध्यः
स्वदेशेच यन्त्रादिनोन्मीलनकालः साध्यः तयोरन्तरं रेखा-
स्वदेशान्तर घटिका ज्ञातव्या ताभिर्घटिकाभिरनुपातेन दे-
शान्तरयोजनानि साध्यानि तानि रेखास्वदेशान्तरयोजना-
नि सन्तिरेखोन्मीलनकालात्स्वदेशोन्मीलनकालं यदाधिकं
स्वदेशरेखातः प्राग् ज्ञेयम् यद्यन्यं तदापश्चाद्ज्ञेयम् (दे-
शान्तरं तु प्राग् ऋणं पश्चाद्धनमितिबोद्धव्यम्) अथा-
नुपातप्रकारं स्वदेशजनित अक्षांशेनोनानवति ९० लम्बां-
शास्युःतेषां ज्यालंबज्या अतोनुपातः त्रिज्ययाभूपरिधि
र्लभ्यते तदा लंबज्यायाः. किमितियल्लब्धंतत्स्वदेशज-
निताभूपरिधिर्लभ्यते पुनरनुपातः यदिषष्टि घटिकाभिः
स्वदेशपरिधि प्राप्यते तदा रेखास्वदेशोन्मीलनकालयो-
रन्तरघटिकाभिः किं फलं यल्लब्धंतद्रेखास्वदेशान्तरयो-
जनानि तैर्योजनैर्ग्रहाणांदेशान्तर संस्कारःकार्य्यः तत्पूर्वं
स्वदेशजभूपरिधियोजनैर्ग्रहगतिकला लभ्यते तदादेशा-
न्तर योजनैः किं फलं लब्धं ग्रहाणांदेशान्तरकलास्तैः
संस्कृताः खेटा देशान्तर संस्कृता भवन्त्येव यथोन्मील-

न कालात्कृतं तथोन्मीलन कालादपि कृतं तथैव भवतीति विशेषतः सूर्यग्रहण एव देशान्तर संस्कारकृते सति भास्वत्याः कल्पान्त पर्यन्तं समध्रुवः स्यात् ॥१२॥

"रसघ्नदेशान्तर योजनेभ्यो
लब्धं फलं पक्षरसैः कलाद्यम् ।
रेखा परप्राक् स्वमृणं प्रकुर्य्या-
दर्कध्रुवोऽस्मिन्करणेशतांशे ॥ १ ॥

देशान्तरं खाङ्क निघ्नं विभजेदभ्र भूधरैः ।
चन्द्रेर्कवत्फलं पाते योजनेभ्यः खखेन्दुभिः॥२॥

उज्जयिनी रोहित ककुब्हर्ये मुनि-
हिमानिवासमेरूणां देशांतरं न कार्यम् ।
तद्रेखा मध्यसंस्थानदेशेषु तद्देशांतरं
योजनात्मकं दृग्गणितात्प्रसाध्यम्" ॥ ३ ॥

भा० टी०—दृग् गणितसे देशान्तर क्रिया करने पर कल्पान्त के समान ध्रुवा होता है और देशान्तर संस्कार विना स्वदेश में ग्रहणगोचर होने में असंभव रहता है अतएव देशान्तर संस्कार अवश्य करना चाहिये खग्रास में देशान्तर संस्कार के विना भी ग्रहण दृष्टिगोचर होता है ॥ १२ ॥

इति श्री ज्यौतिषीन्द्र मुकुटमणि श्री छत्रधर सूरि सूनुना गणक मातृ प्रसादेन विरचितायां भास्वत्याः छात्र बोधिनी नाम टीकायां तिथ्यादि ध्रुवाधिकारः प्रथमः ॥ १ ॥

अथ ग्रहध्रुवाधिकारः ।

वर्षाधिप विधिः—

शास्त्राब्द सौराब्द गणात्कलेर्वा
वर्षाधिपाः सप्त हृतावशेषाः ।
शुक्रेन्दुवाचस्पति सूर्यसौम्याः
शनिश्चरारौ क्रमशो भवन्ति ॥ १॥

सं० टी०--शास्त्रं भास्वती तस्यादिः शास्त्रादिरिति शास्त्रादि सौराब्दगणाद् अब्दपिण्डाद् अथ वा गत कलिवर्षात् सप्तावशेषे सति गत वर्षाधिपतिः शुक्रेन्दुवाचस्पतीति क्रमेण वर्षाधिपतिर्भवति यथा—शून्यशेषेशुक्र एकेनचन्द्रः द्वाभ्यांगुरुर्त्रिभिः सूर्यः चतुर्भिर्बुधः पञ्चभिः शनिः षड्भिः भौमः क्रमेण ज्ञेयम् । प्रकारान्तरेण शास्त्राब्दपिण्डमेकविंशतिभिरूनितं कृत्वाष्टषड्भिर्हरेत् यल्लब्धन्तेनैकोनेनयुतोवर्षाधिपतिः । वाब्दापिण्डमनुनितमष्टषड्भिर्भजेल्लब्धान्वितो वर्षाधिपतिर्ब्रह्मसिद्धान्ततुल्यः सावनवर्षाधिपशुक्रेन्दुवाचस्पतीति क्रमेण भवतीति सूर्यसिद्धान्ते प्रदर्शिताः गोलक्रमेण शनीज्यारोर्कोशनेन्दुजेन्दव इति ॥

अत्र करणारम्भे शुक्रो वर्षाधिपतिरभूत्तस्माच्छुक्रादिगणना कृताशुक्रात्तृतीयः चन्द्र, चन्द्रात्तृतीयो गुरुरित्यादि ॥१॥

भा०टी०-शास्त्राब्द या गतकलि में ७ का भाग देने से क्रमशः शुक्र-चन्द्र-गुरु-सूर्य बुध-शनि मङ्गल सौर वर्षाधिपति होते हैं (शून्यशेष में शुक्र एक शेष में चन्द्र इत्यादि) ॥१॥

उदाहरण-शास्त्राब्द ८१२ में ७ का भाग दिया तो शेष शून्य बचा। और गतकलि ५०१२ में ७ का भाग दिया तो भी शेष शून्य बचा यह दोनों प्रकार से गतवर्षाधिपति शुक्र और वर्तमान वर्षाधिपति चन्द्रमा हुआ ॥१॥

मासाधिपविधिः-

अब्दोऽर्क निघ्नोरविमासयुक्तः
सप्तावशेषे रविमासनाथाः।
ज्ञ शुक्रसूर्य्यारसुरेज्यसौरि
चन्द्रा युगात्सावन मासतोऽन्ये ॥२॥

सं० टी०---अब्दपिण्डोऽर्कनिघ्नो द्वादशाभिर्गुणितः, गतरविमासयुक्तः सप्तावशेषे सति बुध-शुक्र-सूर्य्याद्येकान्तरेण रविमास नाथाः सौरमासाधिपा भवन्ति-तद्यथा शून्यावशिष्टेबुध एकेनशुक्रो द्वाभ्यांरविस्त्रिभिर्भौमश्चतुर्भिर्गुरुः पञ्चभिःशनिः षड्भिश्चन्द्रइत्येकान्तरक्रमेण रविमासनाथाभवन्ति, अन्येयुगात्सावनमासनाथा भवन्तीति कथयन्ति। अत्रापि करणारम्भे मासाधिपोबुधोऽभूत्तस्माद्बुधादितोगणनेति ॥२॥

भा०टी० शास्त्राब्द को १२ से गुणा करके गत सौरमास युक्त करि उस में ७ का भाग देने से शेष क्रमशः बुध-शुक्र-

सूर्य-मङ्गल-बृहस्पति-शनि-चन्द्र-गतसौर मासाधिपति होते हैं । और किसी के मत से गतकलि को भी १२ से गुणा कर सावन मास युक्त कर हर का भाग देने से वर्तमान मासाधिप बुध-शुक्र-आदिक होते हैं ॥ २ ॥

उदाहरण—शाकाब्द ८१२ को १२ से गुणा किया तो ९७४४ हुए इस में गत सौरमास शून्ययुत किया तो ९७४४ हुए इस में ७ का भाग दिया तो शून्य शेष बचा इस से गत सौरमासाधिप बुध वर्तमान मासाधिप शुक्र हुआ ॥

गतकलि ५०१२ को १२ से गुणा तो ६०१४४ हुए इस में वर्तमान मास वैशाख का संख्या एक जोड़ा तो ६०१४५ हुए इस में ७ का भाग दिया तो शेष एक बचा इस सें वर्तमान मासाधिप शुक्र हुआ॥२॥

संवत् विधिः—

अब्दः पृथक् खेशगुणः शराग-
रामाङ्कलब्धेन्द्रियचन्द्रयुक्तः ।
तत्षष्टि शेषादिपुभिर्युगानि
लब्धानि शेषेऽङ्गिरसः समाः स्युः॥३॥

सं०टी०—अब्दपिण्डः पृथक् स्थानद्वये स्थाप्यस्तले खेशगुणस्तत्रवक्ष्यमाणश्लोकोक्त पञ्चचन्द्रेषुलोचनाः क्षेपका देयास्ततः शरागरामाङ्कैर्लब्धं वर्षादिर्वर्षैपञ्चदशभिः १५ सहितमुपरियुक्तं तत् षष्टिशोषिते सति गत सँव्वत्सरं वर्षाद्यं भवति ॥

"अब्दे खेशगुणोदेयाः पञ्चचन्द्रेषुलोचनाः ।
भास्वतीकरणे नित्यं वत्सरं मिहिरोदितम्" ॥१॥

भा०टी०–शास्त्राब्द को दो स्थान में स्थापित करके एक स्थान में ११० से गुणि उस में क्षेपक २५१५ युक्त करि के ९३ ७५ का भाग देवै लब्ध वर्ष होता है, शेष को १२ से गुणि हर ९३७५ का भाग देने से लब्ध मास होता है, शेष को ३० से गुणि उक्त हर का भाग देने से लब्ध दिन होता है, शेष को ६० से गुणि उक्त हर का भाग लेने से घटी पलादि होते हैं। वर्ष में १५ युक्त कर दूसरे जगह रक्खे हुए शास्त्राब्द में युक्त करके ६० का भाग देने से जो शेष बचै वह गुरुमान से भुक्त वर्षादि स्पष्ट होता है ॥ २ ॥

उदाहरण–शास्त्राब्द ८१२ को दो स्थान में स्थापित किया एक स्थान के अङ्क ८१२ को ११० से गुणा तो ८९३२० हुए इस में क्षेपक २५१५ युत किया तो ९१८३५ हुए फिर इस में ९३७५ का भाग दिया तो वर्षादि लब्ध ९।९।१६।२७।५१। मिले, वर्ष ९ में १५ युत किया तो २४।९।१६।२७।५१। हुए, इस को दूसरे जगह रक्खे हुए शास्त्राब्द ८१२ में युत किया तो ८३६।९।१६।२७।५१। हुए वर्ष ८३६ में ६० का भाग देने से शेष वर्षादि ५६।९।१६।२७।५१। हुए ॥ २ ॥

अब्दादि निर्माणाय शकाङ्काः ।

१८३३	१८५७	१८८१	१९०५	१९२९	१९५३	१९७८	२००२	शक
५६	२१	४५	९	३४	५८	२२	४६	वर्ष
९	०	४	७	०	३	६	१०	मास
१६	२७	९	२०	१	१३	२४	६	दिन
२७	५०	१२	३४	५८	२०	४३	५	घटी
५१	२४	५७	३१	४	३८	१२	४५	पल

२०२६	२०५०	२०७४	२०९८	२१२२	२१४६	२१७०	२१९४	शाक
११	३५	५९	२३	४८	१२	३६	१	वर्ष
१	४	८	११	३	६	९	१	मास
१७	२९	१०	२१	२	१४	२६	७	दिन
२८	५१	१४	३७	५९	२२	४४	७	घटी
१९	५२	२६	०	३३	७	४८	१४	पल

शेषाङ्काः।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
१	२	३	४	५	६	७	८	वर्ष
०	०	०	०	०	०	०	१	मास
४	८	१२	१६	२१	२५	२९	३	दिन
१३	२६	४०	५३	७	२०	३४	४७	घटी
२६	५३	१९	४६	१२	३८	५	३१	पल

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	शेष
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	वर्ष
१	१	१	१	१	१	२	२	मास
८	१२	१६	२०	२४	२९	३	७	दिन
०	१४	२७	४१	५४	८	२१	३५	घटी
५८	२४	५०	१६	४३	१०	३६	२	पल

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	शेष
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	वर्ष
२	२	२	२	२	३	३	३	मास
११	१६	२०	२४	२८	२	७	११	दिन
४८	१	१५	२८	४२	५५	९	२२	घटी
२९	५५	२२	४८	१४	४१	७	३३	पल

भा० टी०—इष्टशाका में पुस्तकीय शक तब तक घटावै जब तक कि आगे का पुस्तकीय शक न आवै। यदि इष्ट शक पुस्तकीय शक के बाद का होय तो उस इष्ट शक के पूर्व जो पुस्तकीय शक होय उस को इष्ट शक में घटावै। यदि इष्ट शक और पुस्तकीय समान (बराबर) होय तो पुस्तकीय शक ही से कार्य हो जाता है, या उस इष्ट शक के समानता करने वाले पुस्तकीय शक के पूर्व जो पुस्तकी शक होय उसको इष्ट शक में घटा के बनावै। इष्ट शक में पुस्तकीय शक घटाने से जो शेष मिलै उसके तुल्य शेष कोष्ठ का और पुस्तकीय शक के कोष्ठ का अंक एक जगह जोड़ने से संवत्सर वर्षादिक होता है। * पंच तारा में भी उक्त क्रिया करने से अंशादि ध्रुवा होता है॥

उदाहरण—इष्ट शाका १८४० को पुस्तकीय शाका १८३३ में हीन किया तो शेष ७ बचे, इस शेष के नीचे का वर्षादि ७।०।२९।३४। ५ है और पुस्तकीय शाका के नीचे का वर्षादि ५६।९।१६।२७।५१ है, इन दोनों को जोड़े तो इष्ट शाका में संवत्सर वर्षादिक ६३।९। ४६।१।५६ हुए, वर्ष ६३ हैं इससे इसको ६० से शेषित किया तो संवत्सर वर्षादिक ३।९।४६।१।५६ हुए॥ जब तक इष्ट शाका १८९७ न आवै तब तक इष्ट शाका में पुस्तकीय शाका १८३३ ही घटावै,

---

* शुद्धि प्रत्येक वर्ष २०७ घटती है। सूर्य के ध्रुवा मे १।५५ हीन करने से, चन्द्रध्रुवा में ९१०।३० और चन्द्र केन्द्रध्रुवा में ६७९। ११ युत करने से अग्रिम वर्ष का ध्रुवा होता है। जिस वर्ष शुद्धि चक्र से संवन्ध करती है उस वर्ष उक्त ग्रहों का ध्रुवा, न्यूनाधिक होता है। और राहु कलादि ३।१०।४५ सदा न्यून होता है, जिसके स्थान पर इस ग्रन्थ में प्रति वर्ष का २९०।२४ कलादि लिखा है (और यह प्रति वर्ष एतना घटता है) इसी कारणों से उक्त ग्रहों की सारणी नहीं बनाई गई है॥

इष्ट शाका १८९७ के बाद होने पर इष्ट शाका में १८९७ पुस्तकीय शाका घटावै जब तक पुस्तकीय शाक १८८१ न आवे इसके बाद भी इसी प्रकार किया करै और इष्ट शाका १८५७ है और पुस्तकीय शाका भी १८५७ ही है तो इसमें इस के पहिले के पुस्तकीय शाका १८३३ को हीन किया तो शेष २४ बचे पुस्तकीय शाका १८३३ के नीचे का अंक ५६।०।१६।२७।५१ है और शेष २४ के नीचे का अंक २४।३।११।२२।३३ है, इन दोनों का जोग किया तो संवत्सर वर्षादिक २१।०।२७।५०।२४ हुए, और इष्ट शाका १८५७ में पुस्तकीय शाका १८५७ को घटाया तो शेष ० बचा पुस्तकीय शाका १८५७ के नीचे का अंक २१।०।२७।५०।२४ है, और शून्य के अभाव से अंक का भी अभाव है, इससे संवत्सर वर्षादिक २१।०।२७।५०।२४ हुए ॥

भौमध्रुवविधिः—

शास्त्राब्दपिण्डो वसुवह्निषट्घ्नः
सशीतरश्मीज्वलनो महीजः ।
शताहतद्वादशराशिचक्रैः
शेषोऽब्धिबाणैश्च युतोऽब्दवृन्दात् ॥४॥

सं० टी०—शास्त्राब्दपिण्डो वसुवह्निषट्घ्नः गुणितः सः शीतरश्मीज्वलनेन सहित एकत्रिंशद् युक्तश्च पुनरब्दपिण्डादब्धिबाणैः प्राप्त फलेन युतश्शताहतद्वादशराशि चक्रैः द्वादशशतेन शेषितः महीजः, भौमोभवति ॥४॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को ६३८ से गुणि उसमें ३१ युत करै फिर शास्त्राब्द में ५४ का भाग देने से जो लब्ध मिलै

उसको भी उसमें युक्त करके १२०० का भाग देवै शेष मङ्गल का ध्रुवास्पष्ट होता है ॥ ४ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ६३८ से गुणा किया तो ५१८०५६ हुए इसमें ३१ युत किया तो ५१८०८७ हुए और शास्त्राब्द ८१२ में ५४ का भाग दिया तो लब्ध अंशादि १५।२।१३ मिले इसको पूर्व अङ्क ५१८०८७ में युत किया तो ५१८१०२।२।१३ हुए इसको १२०० से शेषित किया तो शेष मंगल का ध्रुवा अंशादि ९०२।२।१३ स्पष्ट हुआ ॥ ४ ॥

शकाङ्काः ।

१८३३	१८५७	१८८१	१९०५	१९२९	१९५३	१९७८	२००२	शक
९०२	६१४	३२६०	३९	९५१	६६४	३७६	८९	अंश
२	२८	५५	२२	४८	१५	४२	८	कला
१३	५३	३३	१३	५३	३३	१३	५३	विकला

२०२६	२०५०	२०७४	२०९८	२१२२	२१४६	२१७०	२१९४	शक
१००१	७१४	४२६	१३८	१०५१	७६३	४७६	१८८	अंश
३५	२	२८	५५	२२	४८	१५	४२	कला
३३	१३	५३	३३	१३	५३	३३	१३	विकला

शेषाङ्काः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
६३८	७६	७१४	१५२	७९०	२२८	८६६	३०४	अंश
१	२	३	४	५	६	७	८	कला
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	विकला

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	शेष
९४२	३८०	१०१८	४५६	१०९४	५३२	११७०	६०८	अंश
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	कला
०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	विकला

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	शेष
४६	६८४	१२२	७६०	१९८	८३६	२७४	९१२	अंश
१८	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	कला
५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	विकला

बुधोच्चध्रुव विधिः—

ज्ञोच्चं खखाश्विघ्नमथो दशघ्नं
तिथीन्दुलब्धाङ्गरसाश्वि हीनम् ।

सं० टी०—अब्दपिण्डं खखाश्विगुणितं द्विस्थं तले दशभिर्गुणितं तस्मात् तिथीन्दुभिर्भक्तं लब्धमुपरि हीनं पुनः, अङ्गरसाश्वि हीनं (शताहत द्वादशराशिचक्रैः शेषितं) अंशाद्यं बुधशीघ्रम् भवति ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को २०० से गुणा करके दो स्थान में स्थापित करै, एक स्थान के अङ्क को १० से गुणा कर ११५ का भाग देने से जो लब्ध मिलै वह दूसरे स्थान में घटाकर फिर उसमें २६६ घटावै (बाद १२०० का भाग देने से) जो शेष बचै वह बुध का शीघ्र ध्रुवा होता है ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को २०० से गुणा किया तो १६२४०० हुए इसको दो जगह रक्खे एक जगह १० से गुणा तो

१६२४००० हुए इसमें ११५ का भाग दिया तो लब्ध अंशादि १४१ २१।४४।२० मिले इसको दूसरे जगह रक्खे हुए १६२४०० में हीन किया तो १४८२७८।१९।४० हुए फिर इस में २६६ हीन किया तो १४८०१२।१९।४० हुए इस में १२०० का भाग दिया तो शेष अंशादि बुध का उच्च ध्रुवा ४१२।१५।४० हुआ ॥

शकाङ्काः ।

१८३३	१८५७	१८८१	१९०५	१९२९	१९५३	१९७८	२००२	शक
४१२	११९४	७७७	३६०	११४२	७२५	३०८	१०९०	अंश
१५	५३	३०	८	४५	२३	०	३८	कला
४०	१२	४४	१६	४८	२०	५२	२४	विकला

२०२६	२०५०	२०७४	२०९८	२१२२	२१४६	२१७०	२१९४	शक
६७३	२५५	१०३८	६२१	२०३	९८६	५६९	१५१	अंश
१५	५३	३१	८	४६	२३	१	३८	कला
५६	२८	०	३२	४	३६	८	४०	विकला

शेषाङ्काः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
१८२	३६५	५४७	७३०	९१३	१०९५	७८	२६०	अंश
३६	१३	४९	२६	२	३९	१५	५२	कला
३१	३	३४	६	३७	९	४०	११	विकला

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	शेष
४४३	६२६	८०८	९९१	११७३	१५६	३३९	५२१	अंश
२८	५	४१	१८	५४	३१	८	४५	कला
४३	१४	४५	१७	४८	१९	५०	२२	विकला

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	शेष
७०४	८८६	१०६९	५२	२३४	४१७	६००	७८२	अंश
२१	५८	३४	११	४७	२४	१	३७	कला
५३	२४	५६	२७	५८	३०	१	३२	विकला

गुरुध्रुवविधिः–

शताहतोऽधः खनवाप्तनेत्र–
सूर्य्याढ्यजीवोऽब्दनखांशयुक्तः ॥५॥

सं० टी०–अब्दपिण्डः शताहतः शतगुणितः, अधः स्थानद्वयेस्थाप्यः तले खनवाप्तः, लब्धेन सहितः नेत्रसूर्य्यास्तैरुपरियोज्यः पुनरब्दपिण्डःनखांशयुक्तः गुरुध्रुवको भवति (द्वादशशतेन शेषितोऽत्रापि ज्ञातव्यः)॥५॥

भा० टी०–शास्त्राब्द को १०० से गुणि दो स्थान में स्थापित करै, एक स्थान में ९० का भाग देने से जो अंशादि फल मिलै वह दूसरे स्थान में युक्त करके उसमें १२२ और युत करै, फिर शास्त्राब्द में २० का भाग देने से जो लब्ध मिलै वह भी उसी में युक्त करने पर (उसमें १२०० का भाग देने से जो शेष बचै वही) मध्यम वृहस्पति का अंशादि ध्रुवा होता है ॥ ९ ॥

उदाहरण–शास्त्राब्द ८१२ को १०० से गुणा तो ८१२०० हुए इसको दो जगह रक्खे एक जगह ९० का भाग दिया तो लब्ध अंशादि ९०२ । १३ । २० मिले, इसको दूसरे जगह धरे हुए ८१२०० में युत किया तो ८२१०२।१३।२० हुए, इसमें १२२ युक्त किया तो ८२२२४।१३।२० हुए, फिर शास्त्राब्द ८१२ में २० का भाग दिया तो लब्ध अंशादि ४०।३६।० मिले, इसको ८२२२४।१३।२० में युत किया तो ८२२६४।४९।२० हुए, इसमें १२०० का भाग दिया तो शेष मध्यम वृहस्पति का अंशादि ध्रुवा ६६४।४९।२० हुआ ॥ ९ ॥

शकाङ्काः ।

१८३३	१८५७	१८८१	१९०५	१९२९	१९५३	१९७७	२००१	शक
६६४	६९२	७२०	७४८	७७६	८०४	८३२	८५९	अंश
४९	४१	३३	२५	१७	९	१	५३	कला
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	विकला

२०२५	२०४९	२०७३	२०९७	२१२१	२१४५	२१६९	२१९३	शक
८८७	९१५	९४३	९७१	९९९	९२७	१०५४	१०८२	अंश
४५	३७	२९	२१	१३	५	५७	४९	कला
२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	विकला

शेषाङ्काः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
१०१	२०२	३०३	४०४	५०५	६०६	७०८	८०९	अंश
९	१९	२९	३८	४८	५८	७	१७	कला
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	विकला

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	शेष
९१०	१०११	१११२	१३	११५	२१६	३१७	४१८	अंश
२७	३६	४६	५६	५	१५	२५	३४	कला
०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	विकला

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	शेष
५१९	६२०	७२२	८२३	९२४	१०२५	११२६	२७	अंश
४४	५४	३	१३	२३	३२	४२	५२	कला
२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	विकला

शुक्रोच्चध्रुवविधिः—

खेषुस्वरघ्नोऽङ्कशराग्नियुक्तः
सितोच्चमाद्यं कुनृपैः शतघ्नात् ।

सं० टी०—अब्दपिण्डः खेषुस्वरघ्नः कार्य्योऽङ्कशराग्निभिर्युक्तः, पुनरब्दापिण्डाच्छतघ्नात्—कुनृपैर्भक्तेयल्लब्धं तत् पूर्वाङ्के युक्तं (द्वादशशतेन शेषितं) शुक्रोच्चं भवति ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को ७५० से गुणा कर के उस में ३५९ युक्त करै, फिर शास्त्राब्द को १०० से गुणा करके १६१ का भाग देने से जो फल मिलै उसको पूर्व अङ्क में युक्त करने पर (उसमें हर का भाग देने से शेष) शुक्र के उच्च का ध्रुवा होता है ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को ७५० से गुणा तो ६०९००० हुए इस में ३५९ युक्त किया तो ६०९३५९ हुए, फिर शास्त्राब्द ८१२ को १०० से गुणा किया तो ८१२०० हुए इस में १६१ का भाग देने से लब्ध अंशादि ५०४।२०।५२ मिले, इसको ६०९३५९ में युक्तकिया तो ६०९८६३।२०।५२ हुए, इस में १२०० का भाग दिया तो शेष शुक्र का उच्चध्रुवा अंशादि २६३।२०।५२ हुआ ॥

शकाङ्काः ।

१८३३	१८५७	१८८१	१९०५	१९२९	१९५३	१९७७	२००१	शक
२६३	२७८	२९३	३०८	३२२	३३७	३५२	३६७	अंश
२०	१५	९	४	५८	५२	४७	४१	कला
५२	१७	४२	७	३२	५७	२२	४७	विकला
२०२५	२०४९	२०७३	२०९७	२१२१	२१४५	२१६९	२१९३	शक
३८२	३९७	४१२	४२७	४४२	४५७	४७२	४८६	अंश
३६	३०	२५	१९	१३	८	२	५९	कला
१२	३७	२	२७	५२	१७	४२	७	विकला

शेषाङ्काः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
७५०	३०१	१०५१	६०२	१५३	९०३	४५४	४	अंश
३७	१४	५१	२९	६	४३	२०	५८	कला
१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	विकला
९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	शेष
७५५	३०६	१०५६	६०७	१५८	९०८	४५९	९	अंश
३५	१२	४९	२७	४	४१	१९	५६	कला
२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१७	विकला
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	शेष
७६०	३११	१०६१	६१२	१६३	९१३	४६४	१४	अंश
३३	१०	४८	२५	२	३९	१७	५४	कला
३३	४९	५	२१	३७	५३	९	२५	विकला

मध्यमशनिध्रुवविधिः—

खवेदनिघ्नोऽब्धिनवेषु युक्तः ।
शनिर्दशघ्नात् सहितश्च शक्रैः ॥ ६ ॥

सं० टी०—अब्दपिण्डः खवेदनिघ्नः कार्य्योऽब्धिनवेषुयुक्तः पुनरब्दपिण्डाद् दशघ्नाद् दशभिर्गुणिताच्छक्रैश्चतुर्दशभिर्भजेत् यल्लब्धमंशादिः तेनाधिकः कर्तव्यः, (अत्रापिद्वादशशतशेषितः) मध्यमशनिध्रुवो भवतीति॥६॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को ४० से गुणिके उसमें ५९४ युक्त करै, फिर शास्त्राब्द को १० से गुणा कर के १४ का भाग देने से

जो अंशादि फल मिलै वह पूर्व के अङ्क में युक्त करने पर (हरका भाग देने से शेष) मध्यम शनि का ध्रुवा अंशादि होता है ॥६॥

उदाहरण–शास्त्राब्द ८१२ को ४० से गुणा किया तो ३२४८० हुए इस में ५९४ युत किया तो ३३०७४ हुए, फिर शास्त्राब्द ८१२ को १० से गुणा तो ८१२० हुए इस में १४ का भाग दिया तो लब्ध अंशादि ५८०।०।० मिले, इस को ३३०७४ में युक्त किया तो ३३६५४।०।० हुए, इस में १२०० का भाग देने से शेष मध्यम शनि का ध्रुवा अंशादि ५४।०।० हुआ ॥ ६ ॥

शकाङ्काः ।

१८३३	१८५७	१८८१	१९०५	१९२९	१९५३	१९७७	२००१	शक
५४	१०३१	८०८	५८५	३६२	१३९	१११६	८९३	अंश
०	८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	कला
०	३४	८	४२	१६	५०	२४	५८	विकला

२०२५	२०४९	२०७३	२०९७	२१२१	२१४५	२१६९	२१९३	शाका
६७१	४४८	२२५	२	९७९	७५६	५३३	३११	अंश
८	१७	२५	३४	४२	५१	५९	८	कला
३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	विकला

शेषाङ्काः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
४०	८१	१२२	१६२	२०३	२४४	२८५	३२५	अंश
४२	२५	८	५१	३४	१७	०	४२	कला
५१	४३	३४	२६	१७	९	०	५१	विकला

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	शेष
३६६	४०७	४४७	४८८	५२९	५७०	६१०	६५१	अंश
२५	८	५१	३४	१७	०	४२	२५	कला
४३	३४	२६	१७	९	०	५१	४३	विकला

१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	शेष
६९२	७३२	७७३	८१४	८५५	८९५	९३६	९७७	अंश
८	५१	३४	१७	०	४३	२५	८	कला
३४	२६	१७	९	०	५१	४३	३४	विकला

शास्त्राब्दागतस्पष्टमध्यमग्रहाः ।

सू.	चं.	चं. कं	रा.	मं.	बु शी.	बृ.	शु शी	श	ग्र.
३	११५०	२३६१	५१३०	९०२	४१२	६६४	२६३	५४	अं.
२३	२१	४३	२५	२	१५	४९	२०	०	क.
५३	३०	१४	३९	१३	४०	२०	५२	०	वि.

भौमादि ग्रहणां वीजविधिः—

शास्त्राब्दपिण्डाद् गुणितात्कुजादे-
स्सूर्य्याम्बराक्षीषुकुखेषुवेदैः ।
लब्धं क्रमेणाष्टशतैः फलं य-
च्चन्द्राष्ट तत्त्वाब्धि शशाङ्क शिष्टम् ॥७॥

इति श्रीमच्छतानन्दविरचितायां भास्वत्यां ग्रहध्रुवा-
धिकारो द्वितीयः ॥ २ ॥

सं० टी०—शास्त्राब्दपिण्डात् पञ्चधास्थाप्यात् क्रमेण सूर्य्याम्बराक्षीषुकुखेषुवेदैर्गुणिताद् अष्टशतैर्यत्

यत्फलंतत्तत् क्रमेण चन्द्राष्टतत्वाब्धिशशाङ्कशिष्टम् शेषितं कुजादेर्बीजं भवति ॥ ७ ॥

भा० टी०—शास्त्राब्द को १२।२०।१९।५०।४ से गुणि ८०० का भाग देने से जो लब्ध प्राप्त होवै उसको १।८।२५।४।१ से शेषित करने से क्रमशः मङ्गल आदि का कलादि बीज होता है ॥७॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १२ से गुणा तो ९७४४ हुए इस में ८०० का भाग दिया तो लब्ध १२।११ मिले ॥

शास्त्राब्द ८१२ को २० से गुणा तो १६२४० हुए इस में ८०० का भाग दिया तो लब्ध २०।१८ मिले ॥

शास्त्राब्द ८१२ को १९ से गुणा तो १२१८० हुए इस में ८०० का भाग दिया तो लब्ध १९।१३ मिले ॥

शास्त्राब्द ८१२ को ५० से गुणा तो ४०६०० हुए इस में ८०० का भाग दिया तो लब्ध ५०।४५ मिले ॥

शास्त्राब्द ८१२ को ४ से गुणा तो ३२४८ हुए इसमें ८०० का भाग दिया तो लब्ध ४।३ मिले ॥

मङ्गल के लब्ध १२।११ को १ से शेषित किया तो भौम का कलादि बीज ०।११ हुआ ॥

बुध के लब्ध २०।१८ को ८ से शेषितकिया तो बुध का कलादि बीज ४।१८ हुआ ॥

बृहस्पति के लब्ध १९।१३ को २५ से शेषित किया तो बृहस्पति का कलादि बीज १९।१३ हुआ ॥

शुक्र के लब्ध ५०।४५ को ४ से शेषित किया तो शुक्र का कलादि बीज २।४५ हुआ ॥

शनि के लब्ध ४।३ को १ से शेषित किया तो शनि का कलादि बीज ०।३ हुआ ॥ ७ ॥

भौमादीनां बीजनिर्माणाय शकाङ्काः ।

श्रीः	१८३३	१८५७	१८८१	१९०५	१९२९	१९५३	१९७७	२००१	शक
भौ.	० १० ४८	० ३२ २४	० ५४ ०	० १५ ३६	० ३७ १२	० ५८ ४८	० २० २४	० ४२ ०	कलादि
बु.	४ १८ ०	४ ५४ ०	५ ३० ०	६ ६ ०	६ ४२ ०	७ १८ ०	७ ५४ ०	० ३० ०	कलादि
बृ.	१५ १३ ३० ०	१५ ४० ३० ०	१६ ७ ३० ०	१६ ३४ ३० ०	१७ १ ३० ०	१७ २८ ३० ०	१७ ५५ ३० ०	१८ २२ ३० ०	कलादि
शु.	२ ४५ ०	० १५ ०	१ ४५ ०	३ १५ ०	० ४५ ०	२ १५ ०	३ ४५ ०	१ १५ ०	कलादि
श.	० ३ ३६	० १० ४८	० १८ ०	० २५ १२	० ३२ २४	० ३९ ३६	० ४६ ४८	० ५४ ०	कलादि

श्रीः	२०२५	२०४९	२०७३	२०९७	२१२१	२१४५	२१६९	२१९३	शक
भौ.	० ३ ३६	० २५ १२	० ४६ ४८	० ८ २४	० ३० ०	० ५१ ३६	० १३ १२	० ३४ ४८	कलादि
बु.	१ ६ ०	१ ४२ ०	२ १८ ०	२ ५४ ०	३ ३० ०	४ ६ ०	४ ४२ ०	५ १८ ०	कलादि
गु.	१८ ४९ ३० ०	१९ १६ ३० ०	१९ ४३ ३० ०	२० १० ३० ०	२० ३७ ३० ०	२१ ४ ३० ०	२१ ३१ ३० ०	२१ ५८ ३० ०	कलादि
शु.	२ ४५ ०	० १५ ०	१ ४५ ०	३ १५ ०	० ४५ ०	२ १५ ०	३ ४५ ०	१ १५ ०	कलादि
श.	० १ १२	० ८ २४	० १५ ३६	० २२ ४८	० ३० ०	० ३७ १२	० ४४ २४	० ५१ ३६	कलादि

शेषाङ्काः ।

श्रीः	१	२	३	४	५	६	७	८	शेष
मं.	० ० ५४	० १ ४८	० २ ४२	० ३ ३६	० ४ ३०	० ५ २४	० ६ १८	० ७ १२	कलादि
बु.	० १ ३०	० ३ ०	० ४ ३०	० ६ ०	० ७ ३०	० ९ ०	० १० ३०	० १२ ०	कलादि
बृ.	० १ ७ ३०	० २ १५ ०	० ३ २२ ३०	० ४ ३० ०	० ५ ३७ ३०	० ६ ४५ ०	० ७ ५२ ३०	० ९ ० ०	कलादि
शु.	० ३ ४५	० ७ ३०	० ११ १५	० १५ ०	० १८ ४५	० २१ ३०	० २६ १५	० ३० ०	कलादि
श.	० ० १८	० ० ३६	० ० ५४	० १ १२	० १ ३०	० १ ४८	० २ ६	० २ २४	कलादि
श्रीः	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	शेष
मं.	० ८ ६	० ९ ०	० ९ ५४	० १० ४८	० ११ ४२	० १२ ३६	० १३ ३०	० १४ २४	कलादि
बु.	० १३ ३०	० १५ ०	० १६ ३०	० १८ ०	० १९ ३०	० २१ ०	० २२ ३०	० २४ ०	कलादि
बृ.	० १० ७ ३०	० ११ १५ ०	० १२ २२ ३०	० १३ ३० ०	० १४ ३७ ३०	० १५ ४५ ०	० १६ ५२ ३०	० १८ ० ०	कलादि
शु.	० ३३ ४५	० ३७ ३०	० ४१ १५	० ४५ ०	० ४८ ४५	० ५२ ३०	० ५६ १५	१ ० ०	कलादि
श.	० २ ४२	० ३ ०	० ३ १८	० ३ ३६	० ३ ५४	० ४ १२	० ४ ३०	० ४ ४८	कलादि

श्री:	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	शेष
मं.	० १५ १८	० १६ १२	० १७ ६	० १८ ०	० १८ ५४	० १९ ४८	० २० ४२	० २१ ३६	कलादि
गु.	० २५ ३०	० २७ ०	० २८ ३०	० ३० ०	० ३१ ३०	० ३३ ०	० ३४ ३०	० ३६ ०	कलादि
बु.	० १९ ७ ३०	० २० १५ ०	० २१ २२ ३०	० २२ ३०	० २३ ३७ ३०	० २४ ४५ ०	० २५ ५२ ३०	० २७ ० ०	कलादि
शु	१ ३ ४५	१ ७ ३०	१ ११ १५	१ १५ ०	१ १८ ४५	१ २२ ३०	१ २६ १५	१ ३० ०	कलादि
श.	० ५ ६	० ५ २४	० ५ ४२	० ६ ०	० ६ १८	० ६ ३६	० ६ ५४	० ७ १२	कलादि

वर्षाद्यानयनम् ।

*"शाकस्त्रिगुण्यो नगभाजितश्च शेषं द्विनिघ्नं शरसंयुतं च ।
वर्षा च धान्यं तृण शीततेजो वायुश्च वृद्धिः क्षयविग्रहौ च १।

* **उदाहरण**–शाका १८३३ को ३ से गुणा किया तो ५४९९ हुए इसमें ७ का भाग देने से लब्ध ७८५ मिले, शेष ४ बचे इस शेष ४ को २ से गुणा किया तो ८ हुए इसमें ५ युत करने से वर्षा का विश्वा १३ हुए, लब्ध ७८५ को ३ से गुणा किया तो २३५५ हुए इसमें ७ का भाग देने से लब्ध ३३६ मिले, शेष ३ बचे इस शेष ३ को २ से गुणा तो ६ हुए इसमें ५ मिलाया तो धान्य का विश्वा ११ हुए इसी प्रकार से तृण आदिक को भी निकालै ॥

*शाकं च वेदगुणितं सप्तभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं द्विघ्नं त्रिभिर्युक्तं भुक्तविश्वाख्य सङ्ख्यया ॥ २ ॥
क्षुधा तृषा च निद्रा च आलस्योद्यममेव च ।
शान्तिः क्रोधस्तथा दम्भो लोभमैथुनयोः क्रमात् ॥३॥
ततश्च रसनिष्पत्तिः फलनिष्पतिरेव च ।
उत्साहः सर्व लोकानां फलान्येतानि चिन्तयेत् ॥ ४ ॥
†शाकं च वसुभिर्निघ्नं नवभिर्भागमाहरेत् ।
शेषं द्विघ्नं रूपयुक्तं प्राप्तविश्वाख्य संज्ञकम् ॥ ५ ॥
उग्रत्व पाप पुण्यानि व्याधिश्च व्याधिनाशनम् ।
आचारश्चाप्यनाचारो मृत्युर्जन्म यथा क्रमम् ॥ ६ ॥
देशोपद्रवस्वास्थ्यञ्च चौरभिश्चौरनाशनम् ।
वह्निभिर्वह्निशान्तिश्च ज्ञातव्यानि यथा क्रमम् ॥ ७ ॥

---

* **उदाहरण**–शाका १८३३ को ४ से गुणा तो ७३३२ हुए इसमें ७ का भाग देने से लब्ध १०४७ मिले, शेष ३ बचे इस शेष ३ को २ से गुणा किया तो ६ हुए इसमें ३ युक्त किया तो क्षुधा का विश्वा ९ हुए लब्ध से पूर्व प्रक्रिया के अनुसार तृषा आदिक को बनावैं ॥

† **उदाहरण**–शाका १८३३ को ८ से गुणा तो १४६६४ हुए इसमें ९ का भाग दिया तो लब्ध १६२९ मिले, शेष ३ बचे इस शेष ३ को २ से गुणा किया तो ६ हुए इसमें १ युक्त किया तो उग्र का विश्वा ७ हुए, लब्ध से पापादिक का विश्वा भी उक्त प्रकार से बनावैं ॥

*सप्तघ्नशाकनवभिर्भाजितं शेषकं तथा ।
लोचनघ्नं युतं रामैर्जीवियाच्च यथा क्रमम् ॥ ८ ॥
शलभाश्च शुका अग्रे मुषका स्वर्णताम्रकौ ।
स्वचक्रं परचक्रं च वृष्टिवृष्टिविनाशनम् ॥ ९ ॥
†शकः पञ्चभिः सप्तभिर्गोभिरीशै—
श्चतुर्धाहतः सप्तभक्तावशिष्टः ।
द्विनिघ्नं त्रिभिर्युक्तमुद्भिज्जरा अ—
ण्डजास्वेदजानां हि विंशोपकाः स्युः" ॥१०॥

जलाढक विधिः—

‡"युग्माजगोमीनगते शशाङ्के यदा रवौ कर्कटकं प्रयाति ।

---

*उदाहरण—शाका १८३३ को ७से गुणा किया तो १२८३१ हुए, इस में ९ का भाग देने से लब्ध १४२५ मिले शेष ६ बचे, इस शेष ६ को २ से गुणा किया तो १२ हुए, इस में ३ को युत किया तो शलभ का विश्वा १५ हुए, लब्ध से शुकादि का भी विश्वा बनावैं।

†उदाहरण—शाका १८३३ को क्रमशः ५, ७, ९, ११ से गुणा तो ९१६५, १२८३१, १६४९७, २०१६३ हुए, सब में ७ का भाग देने से शेष २, ०, ५, ३ बचे इन्हों के २ से गुणा तो ४, ०, १०, ६ हुए इन सभो में ३ मिलाने से उद्भिज का ७ जरायुज का ३ अंडज का १३ स्वेदज का ९ विश्वा हुए ॥

‡ उदाहरण—शाका १८३३ में कर्क की संक्रान्ति कुम्भ राशि के चन्द्रमा में हुई, इससे जल का आढक सङ्ख्या ९६ है, इसको तीन जगह धरि के क्रमशः १०, ६, ४ से गुणा किया तो ९६०, ५७६, ३८४ हुए इनमें २० का भाग देने से लब्ध ४८, २८।४८, १९।१२ मिले । समुद्र में ४८ पर्वत पर २८।४८ पृथ्वी पर १९।१२ आढक जल जानैं ॥

शताढमम्भो हरिकार्मुकेऽर्धे-
मुक्तं हि कन्यामृगयोरशीति ॥ १ ॥
तुलालिकुम्भेन्दुगते तमीशे
कर्के रवौ षण्णवतिस्तदानीम् ।
त्रिधाहतं दिग्रसवेदसङ्ख्यै-
र्जलाढकं विंशति भागलब्धम् ॥ २ ॥
भवेत्समुद्रादिषु वृष्टिकं त-
ज्जलाढसङ्ख्या कथितो मुनीन्द्रैः ।
अर्द्धार्द्धमर्द्धं च क्रमेण तेषाम्
स्यात्पर्वते शेषमिलातले च ॥ ३ ॥

जलाढक बोधकचक्रम् ।

कर्कऽर्कऽधो लिखितराशाविन्दौ	जलाढक सङ्ख्या	समुद्रे	पर्वते	भूमौ
मे.वृ.मि.मी.	१००	५०	३०	२०
सिं.ध.	५०	२५	१५	१०
कन्या. म.	८०	४०	२४	१६
क.तु.वृ.कुं.	९६	४८	२८ ४८	१९ १२

*"राशीश वर्षेशयुतं त्रिगुण्यं शरेण युक्तं तिथि शेषलाभम् ।
लाभं त्रिगुण्यं च शरेण युक्तं तिथ्यावशेषं व्ययमाननन्ति॥१॥
विंशोत्तर्यनुसारेण रव्यादीनां क्रमाद् ध्रुवाः ।
रसदिक् शैलमेघोऽष्टिर्नखस्त्वेकोनविंशतिः ॥ २ ॥
रसानि वाणेन्दुमितानि चाष्टौ घनानि वैचाङ्कधरामितानि ।
भूपक्षसंज्ञानि खरूपकानि त्वष्टोत्तरीणां रवितो ध्रुवानि" ॥३॥
विंशोत्तरीमनेनार्कादीनां नृपेषु-आयव्ययबोधकचक्रम् ।

मे.	वृ	मि.	कं.	सिं.	क.	राशयः	
१४	८	१४	८	११	१४	आ.	सूर्यनृपे
११	५	२	१४	११	२	व्य.	
११	५	११	५	८	११	आ.	चन्द्रनृपे
१४	८	५	२	१४	५	व्य	
२	११	२	१४	१४	२	आ.	भौमनृपे
१४	५	५	१४	११	५	व्य	
२	११	२	११	१४	२	आ.	बुधनृपे
५	११	११	५	२	११	व्य.	
१४	८	१४	८	११	१४	आ.	गुरुनृपे
२	११	८	५	२	८	व्य.	
११	५	११	५	८	११	आ.	शुक्रनृपे
५	१४	११	८	५	११	व्य.	
८	२	८	२	५	८	आ.	शनिनृपे
५	१४	११	८	५	११	व्य.	

* **उदाहरण**–शाका १८१३ में राजा शुक्र है, विंशोत्तरी के मत से शुक्र का ध्रुवा २० है, और मेष राशि का स्वामी मङ्गल है उक्त रीति से मङ्गल का ध्रुवा ७ है, इन दोनों के ध्रुवा को एक जगह जोड़ देने से २७ हुए इसको ३ से गुणा किया तो ८१ हुए फिर इसमें ५ युक्त किया तो ८६ हुए इसमें १५ का भाग देने से लब्ध ५ मिले शेष ११ बचे शेष तुल्य ११ लाभ हुए, लब्ध ५ को ३ से गुणा किया तो १५ हुए इसमें ५ और युक्त किया तो २० हुए इसमें १५ का भाग देने से शेष ५ व्यय हुए ॥

तु.	वृ.	ध	म.	कु.	मी	राशयः	
८	१४	११	५	५	११	आ.	सूर्यनृपे
५	११	२	५	५	२	व्य.	
५	११	८	२	२	८	आ.	चन्द्रनृपे
८	४	५	८	८	५	व्य	
११	२	१४	८	८	१४	आ.	भौमनृपे
५	१४	२	५	५	२	व्य	
११	२	१४	८	८	१४	आ	बुधनृपे
११	[illegible]	८	११	११	८	व्य	
८	१४	११	५	५	११	आ.	गुरुनृपे
११	२	८	११	११	८	व्य.	
५	११	८	२	[illegible]	८	आ.	शुक्रनृपे
१४	५	११	१४	१४	११	व्य	
२	८	५	१४	१४	५	आ.	शनिनृपे
१४	५	११	१४	१४	११	व्य	

अष्टोत्तरीमतेनार्कादीनां नृपेषु—आयव्ययबोधकचक्रम् ।

मे.	वृ.	मि	क	सिं.	क.	राशयः	
२	११	१४	८	१४	१४	आ.	सूर्यनृपे
१४	५	२	२	५	२	व्य.	
१४	८	११	५	८	११	आ.	चन्द्रनृपे
२	११	८	८	२	८	व्य	
८	२	५	१४	२	५	आ.	भौमनृपे
१४	८	५	२	१४	५	व्य.	
५	१४	२	११	१४	२	आ.	बुधनृपे
५	११	११	८	२	११	व्य.	
११	५	८	२	५	८	आ.	गुरुनृपे
५	१४	११	११	५	११	व्य.	
२	११	१४	८	११	१४	आ.	शुक्रनृपे
८	१४	११	११	५	११	व्य.	
१४	८	१४	५	८	११	आ	शनिनृपे
१४	८	५	२	१४	५	व्य.	

तु	वृ.	ध	म.	कुं	मी.		राशयः
११	२	५	८	८	५	आ	सूर्यनृप
५	१४	५	१४	१४	५	व्य	
८	१४	२	५	५	२	आ.	चन्द्रनृपे
११	२	११	५	५	११	व्य.	
२	८	११	१४	१४	११	आ	भौमनृपे
८	१४	५	१४	१४	५	व्य.	
१४	५	८	११	११	८	आ.	बुधनृपे
११	५	११	५	५	११	व्य.	
५	११	१४	२	२	१४	आ	गुरुनृपे
१४	५	११	८	८	११	व्य.	
११	२	५	८	८	५	आ	शुक्रनृपे
१४	८	१४	८	८	१४	व्य.	
८	१४	२	५	५	२	आ.	शनिनृपे
८	१४	८	२	२	८	व्य.	

इति श्रीज्यौतिर्विन्द्रमुकुटमणि श्रीछत्रधरसूरिसूनुना गणक मातृप्रसादेन
विरचितायां भास्वत्याश्छात्रबोधिनी नाम टीकायां
ग्रहध्रुवाधिकारो द्वितीयः समाप्तः ॥२॥



अथ पञ्चाङ्गस्पष्टाधिकारः ।

दिनगणानयनविधिः-

त्रिंशद् गुणा मेषमुखार्कमासा
　दिनैस्समेता ऋतुवासरोनाः ।
युवृन्दमेतद्गगमर्कशेषम्
　वारा भवन्त्यब्द मुखादि नाथात् ॥१॥
चन्द्राश्विवह्नियुगभूतरसाश्वतर्क
　षड् वाणभूतविषयाश्च यथा क्रमेण ।
मेषादिराशिषु स्वरामगुणेषु देया
　भास्वत्यहर्गण इनांशकसंयुतःस्यात् ॥२॥

सं०टी०—दिनगणः शून्यं तस्मात् तृतीय तिथिमारभ्यपरमसंक्रान्तिपर्यन्तं मेषस्तदारभ्याग्रिमसंक्रान्ति पर्यन्तं वृष इतिप्रकारेणाग्रेऽपि ज्ञातव्याः सौरमासाः, ते मेषमुखार्क मासाः मेषादि सौरमासाः त्रिंशद् गुणाः कार्यास्तत्रक्षमाणमासस्य गतेनांशैर्गतदिनैः समेताः सहिताः कर्तव्यास्तेषु मेषाद्यर्कमासेषु चन्द्राश्विवह्नियुगभूतरसाश्वतर्कषड्वाणभूतविषयाश्च यथाक्रमेण योज्याः, तत्र मेषे १ वृषे २ मिथुने ३ कर्के ४ सिंहे ५ कन्यायां ६ तौलिके ७ वृश्चिके ६ धनुषि ६ मकरे ५ कुम्भे ५ मीने ५ योजिते सति भास्वत्यहर्गणो भवति । मेषादिराशिषु मेषादि

गत सावन मासेषु (यस्यां तिथौ मेषसंक्रान्तिर्भवति तदारभ्याग्रिममासस्य सैवतिथिर्यावदयं मेष इत्यनेन क्रमेण सावन मासा भवन्ति) खरामगुणेषु त्रिंशद् गुणेषु प्राप्त मासस्य गत तिथयः योज्याःतेषु ऋतुवासरेनाः कार्या एवं कृते पूर्वानित दिनगण तुल्यो द्युवृन्दो भवति तन्नगभक्तशेषम्—अब्द मुखादि नाथाद् वारा भवन्तीति (शून्यादि शेषे वर्षेशादयो ज्ञातव्याः) ॥१॥२॥

"अहर्गणेऽस्मिन्नगभक्तशेषे—
समाधिपा वारमुसन्ति यातम् ।
अभिष्टवारार्थमहर्गणोऽयं—
कुहीनयुक् स्यादिति सम्प्रदायः" ॥१॥

"*द्व्यब्धीन्द्रोनितशक ईशहृत् फलं स्या—

* उदाहरण—शाका १८३३ में १४४२ को घटायातो वर्ष समूह ३९१ हुआ, इसमें ११ का भाग दिया तो फल चक्र ३५ मिला, और शेष ६ बचे इसको १२ से गुणा किया तो ७२ हुए इसमें चैत्र से १ मास गत है इसको युत किया तो ७३ हुए (यह मध्यमासगण हुआ) इसको दो जगह रक्खे एक जगह इस में द्विगुणित चक्र ७० को जोड़ा तो १४३ हुए फिर इस में १० और युक्त किया तो १९३ हुए फिर इसमें ३३ का भाग दिया तो फल अधिमास ४ मिले, इसको दूसरी जगह धरे हुए ७३ में युक्त किया तो मास गण ७७ हुआ, इसको ३० से गुणा किया तो २३१० हुए इसमें गत तिथि १२ युत किया तो २३२२ हुए इस में चक्र का छठवां भाग ५ युक्त किया तो २३२७ (मध्यमगण हुआ) इसको दो जगह धरा एक जगह इसमें

चक्राख्यं रविहतशेषकं तु युक्तम् ।
चैत्राद्यैः पृथगमुतः सदग्निचक्राद्
दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम् ॥१॥
खत्रिघ्नं गततिथियुग्भिरग्रचक्रा—
ङ्गांशाढ्यं पृथगमुतोऽब्धिषट्कलब्धैः ।
ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै वारः
स्याच्छरचक्रयुग्गणोऽब्जात् ॥२॥
* " रामेन्दुभूवह्निकरक्षमाभि-
र्यतो दिनौघोग्रहलाघवीयः ।

---

६४ का भाग दिया तो फल (क्षय दिन) ३६ मिले इसको दूसरी जगह धरे हुए २३२७ में हीन किया तो दिन गण २२९१ हुआ इससे अभीष्ट वार नहीं आवता है अतः इसमें एक युक्त किया तो दिन गण २२९२ हुआ ॥

चक्र ३५ को ५ से गुणा तो १७५ हुए इसको दिन गण २२९२ में युक्त किया तो २४६७ हुए इसमें ७ का भाग दिया तो शेष ३ बचे (शून्य शेष में चन्द्र एक में भौम इत्यादि) इससे इष्ट गुरुवार आगया ॥

* **उदाहरण**—ग्रहलाघव के दिन गण २२९२ में १२३११२ को युत किया तो १२५४०५ हुए, चक्र ३५ से ४०१६ को गुणा किया तो १४०५६० हुए इसको १२५४०५ में युत किया तो ब्रह्म तुल्य दिन गण २६५९६५ हुए, इसमें ७२०६३६००७४५२ को युत किया तो कल्प से दिन गण ७२०६३६२७३४१७ हुए, ब्रह्म तुल्य दिन गण २६५९६५ में ७१४४०३८६१३६५ को युत किया तो सृष्टि गण ७१४४०४१२७३३० हुए, ब्रह्म तुल्य गण २६५९६५ में १५६४७३८ को युक्त किया तो कलि गण १८३०७०३ हुए ॥

चक्राभ्रतर्कक्षितिखाब्धियुक्तः
स्याद् ब्रह्मतुल्यो द्युगणो विधिज्ञ ! ॥ १ ॥
[illegible]द्रिखखाङ्क वह्नि–
रिष्पभ्रयुग्माचलसंयुतश्चेत् ।
स्याद् ब्रह्मतुल्यः द्युगणस्तदानीम्
भवत्ययं कल्पदिनान्ववायः ॥ २ ॥
बाणाङ्करामेन्दुरसाष्टवह्नि–
व्योमाब्धिवेदक्षितिशैलयुक्तः ।
चेद् ब्रह्मतुल्योदिवसव्रजं स्यात्
तदा भवेत् सृष्टिदिनौघ एषः ॥ ३ ॥
चेद् ब्रह्मतुल्योदिवसव्रजोऽहि–
रामाद्रिवेदाङ्क शरेन्दुयुक्तः ।
भवेत्तदा भोगणकप्रवीण !
नूनं कलिप्राप्तिदिनौघ एषः ॥ ४ ॥
+ नन्दाद्रिचन्द्राचलवेदरत्न–
युग्मागखेटेन्दुयुताः शकाब्दाः ।

+ उदाहरण–शाका १८३३ में १९७२९४७१७९ को युत किया तो कल्प से गत वर्ष १९७२९४९०१२ हुआ, शाका १८३३ में १९५५८८३१७९ को युक्त किया तो सृष्टि से गत वर्ष १९५५८८५०१२ हुआ, शाका १८३३ में ३१७९ को युक्त किया तो गत कालि ५०१२ हुआ ॥

यदाभवेयुर्गणिताधिराज !
तदा मिलेत् कल्पगताब्दसङ्ख्याः ॥ ५ ॥
अङ्काद्रिभूरामभूजङ्गसर्प-
बाणेषुनन्देन्दुयुताः शकाब्दाः ।
सृष्ट्यब्दतां यान्ति विधिज्ञ ! मूर्ध-
मालाललामार्चितपादपद्म ! ॥ ६ ॥
निधिशैलेन्दुरामैश्चेद् युताः स्युः शकवत्सराः ।
तदा सम्पद्यते सङ्ख्यातीनां शरदां कलेः ॥ ७ ॥

भा. टी.—गत सावन मास को ३० से गुणा कर के गत तिथि युक्त कर फिर उसमें ऋतु वासर घटाने से दिन गण होता है। गत सौर मास (वीती हुई सूर्य की संक्रान्ति) ३० से गुणि उसमें सूर्य के गत अंश को युत करै फिर उस में मेषादि संक्राति का क्रम से १।२।३।४।५।६।७।६।६।५।५।५ यह क्षेपक युत करने से दिनगण होता है। दिन गण में ७ का भाग देने से शेष अब्दनाथ से गणना करने पर वार होता है ॥ १ ॥ २ ॥

उदाहरण-श्री सम्बत् १९६८ शाका १८३३ वैशाख शुक्ल १२ वार वृहस्पति के सूर्य्योदय पर स्पष्टी है। गत सावन मास० को ३० से गुणा तो ० हुआ इसमें गत दिन २७ युक्त किया तो २७ हुए इसमें ऋतु वासर ०घटाया तो अहर्गण २७ हुआ। गत सूर्य की राशि० को ३०से गुणा तो ० हुआ इसमें गत अंश २६ युत किया तो २६ हुए फिर क्षेपक १ युक्त करने पर दिन गण २७ हुआ। इसमें ७ का भाग देने से शेष ६ बचे अतः वर्षेश शुक्र से गनने पर छठवाँ वृहस्पति वार आया (अभिष्ट वार के लिये एक न्यूनाधिक करै) ॥ १ ॥ २ ॥

सूर्य स्पष्ट विधिः—

सूर्ये स्वरघ्नास्तिथयः प्रदेयाः
पृथक् शताप्ताः क्रमशश्चखण्डाः ।
शेषाच्चभुक्तोनितभोग्यनिघ्नाच्छताप्त
युक्तोऽप्यधिकः स्फुटः स्यात् ॥ ३ ॥

सं० टी०—स्वरघ्नाः सप्तगुणिताः तिथयः सूर्यध्रुवके प्रदेया योजनीया (ततो वीजदेशान्तराभ्यां संस्कारितः) एवं कृतेसति मध्यम सूर्यो भवति, मध्यमसूर्यः पृथक् स्थानद्वये संस्थाप्यैकत्र शताप्ताः शतभागेन क्रमशः खण्डा लभ्यते तदग्रेभोग्यः शेषाच्चभुक्तोनित भोग्यनिघ्नाच्छताप्त युक्तः—अर्थाद्भुक्तभोग्य योरन्तरेण शतभाग-शेषं गुणितं शतेन विभाजितं प्राप्तफलं भुक्तखण्डके सं-योज्य मध्यमार्कें योजयेद् योजिते सति-अधिकः स्फुटः स्यात् स्पष्ट सूर्यो भवतीति ॥ ३ ॥

भा० टी०—दिन गण को ७ से गुणा करके उसमें सूर्य के ध्रुवा को युक्त करै फिरि देशान्तर और बीज से संस्कार करके दो स्थान में स्थापित करै एक स्थान में १०० का भाग देने से जो फल मिलै उतने संख्या वाले कोष्ठ के अङ्क को और उसके अग्रिम कोष्ठ के अंक को अन्तर करै फिर शेष को अन्तर से गुणिके १०० का भाग देने से जो फल मिलै उस को गत खण्डा में युक्त करके फिर उसको दूसरे जगह धरे हुए अंक में युक्त करने से स्पष्ट सूर्य होता है ॥ ३ ॥

सूर्यखण्डाङ्काः—

सूर्यस्य पञ्चाङ्करवीन्द्रभूपाः
घनानवेन्दुः कुयमा जिनाश्च ।
सप्ताश्विनश्चन्द्रगुणा रसाग्नी
द्व्यब्धी मरुत् सप्तशराः शराङ्गाः ॥४॥
पञ्चाद्रयो वेदगजाः कृताङ्का-
स्त्रिखेन्दवो भानुभुवः कुसूर्य्याः ।
अष्टाश्विचन्द्राः शररामचन्द्रा-
श्चन्द्राब्धिचन्द्राः शरवह्निणश्च ॥५॥

सं० टी०—सूर्यस्य दिनेशस्य पञ्चाङ्क रवीन्द्रभूपाः घनानवेन्दुः कुयमा जिनाः सप्ताश्विनः चन्द्रगुणा रसाग्नी द्व्यब्धी मरुत् सप्तशराः शराङ्गाः च पञ्चाद्रयो वेदगजाः कृताङ्कास्त्रिखेन्दवो भानुभुवः कुसूर्य्या अष्टाश्विचन्द्राः शररामचन्द्राश्चन्द्राब्धिचन्द्राश्शरवह्निणश्चेति खण्डाङ्का भवन्ति ॥ ४ ॥ ५ ॥

भा० टी०—सूर्य का ५।९।१२।१४।१६।१७।१९।२१।२४।२७।३१।३६।३२।४९।५७।६६।७५।८४।९४।१०३।११२।१२१।१२८।१३५।१४१।१४५ खण्डाङ्क है, एक लब्ध में ५ दो में ९ इत्यादि क्रमसे जानै ॥ ४ ॥ ५ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ७ से गुणा तो १८९ हुए इसको मध्यम सूर्य के ध्रुवा ३।२३।५३ में युत किया तो तत्कालिक

मध्यम सूर्य १९२।२३।१३ हुआ इसमें बीज ऋण ०।१४।२९ को घटाया तो १९२।९।२४ हुआ इसमें देशान्तर ऋण ०।५।३६ को घटाया तो बीज देशान्तर संस्कारित मध्यम सूर्य १९२।३।४८ हुआ इसको दो जगह स्थापित कर एक जगह में १०० का भाग दिया ता फल १ मिले अतः पहिला गत खण्डा ५ और दूसरा भोग्यखण्डा ९ इन दोनों का अन्तर धन ४ हुए इस से शेष ९२ । ३ । ४८ को गुणा तो ३६८ । १५ । १२ हुए इस में १०० का भाग दिया तो लब्ध ३।४०।५७ मिले, इस को गत खण्डा ५ में युक्त किया तो ८।४०। ५७ हुए इसको दूसरी जगह स्थापित किये हुए १९२।३।४८ में युत किया तो स्फुटसूर्य २००।४४।४५। हुआ ॥३॥४॥५॥

सूर्यखण्डा-अन्तर-भुक्तिबोधकचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	संख्या
०	५	९	१२	१४	१६	१७	१९	२१	खण्डा
५	४	३	२	२	१	२	२	३	अन्तर
७ २१ ०	७ १६ ४८	७ १२ ३६	७ ८ २४	७ ८ २४	७ ४ १२	७ ८ २४	७ ८ २४	७ १२ ३६	भुक्ति

९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	संख्या
२४	२७	३१	३६	४२	४९	५७	६५	७५	खण्डा
३	४	५	६	७	८	८	१०	९	अन्तर
७ १२ ३६	७ १६ ४८	७ २१ ०	७ २५ १२	७ २९ २४	७ ३३ ३६	७ ३३ ३६	७ ४३ ०	७ ३७ ४८	भुक्ति

१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	संख्या
८४	९४	१०३	११२	१२१	१२८	१३१	१४१	१४५	खण्डा
१०	९	९	९	७	३	६	४	०	अन्तर
७ ४२ ०	७ ३७ ४८	७ ३७ ४८	७ ३७ ४८	७ २९ २४	७ २२ २४	७ २१ १२	७ १६ ४८	७ ० ०	कलादि भुक्तिः

सूर्य गतिस्पष्ट विधिः —

भुक्तिं च धृत्वा गुणयेत्स्वभुक्त
भोग्येन हृत्वाम्बरशून्यचन्द्रैः ।
लब्धं फलं मध्यगतौ प्रदद्या-
दहः परं स्यात्परकर्म कार्यम् ॥ ६ ॥

सं० टी०—भुक्तीं धृत्वा भुक्त भोग्य खण्डान्तरेण गुणयेदम्बरशून्यचन्द्रैर्हृत्वा लब्धं फलं मध्य गतौ प्रदद्यात् परकर्मकार्यमहः परं स्यात् । (स्पष्टार्कगतिरष्टभिर्गुणिते सति ग्रहलाघव तुल्या गतिर्भवति) ॥ ६ ॥

"भोग्यारवेः सप्तगुणाच्छताप्ता
सप्तान्विता स्यात् स्फुटसूर्यभुक्तिः" ।

भा० टी०-सूर्य की भुक्ति को खण्डान्तर से गुणि १०० का भाग देने से जो लब्ध मिलै वह मध्यम भुक्ति में युत करने से स्पष्ट गति होती है ॥६॥

उदाहरण—सूर्य की भुक्ति ७ को खण्डान्तर ४ से गुणा तो
७

२८ हुए इस में १०० का भाग दिया तो फल ० । १६ मिले इसको मध्यम गति ।७।० में युक्त किया तो स्पष्टगति ७ । १६ हुई ॥६॥

"तात्कालिक मध्यमचन्द्र-चन्द्रकेन्द्र-स्पष्ट चन्द्रविषयः—

खनन्द निघ्नास्तिथयः शशाङ्के
केन्द्रे शतघ्नास्तिथयः प्रदेयाः ।
केन्द्रे क्रमात्खट् शरसप्तदस्त्रैः
शोध्यो विधुश्चागशराब्धिदस्त्रैः ॥७॥
इन्दुर्द्युवृन्दात्सहितः खसूर्य्यै-
श्चरार्द्धभागोन युतः समार्द्धात् ।
चरार्द्ध भागा विषुवादिमासैः
खचन्द्र नेत्रद्वयचन्द्रखांशाः ॥ ८ ॥
पुनर्द्युवृन्दाद्गगनेषु लब्धम्
शीतांशुकेन्द्रे तु युतं प्रकुर्यात् ।
तत्प्रत्यहं स्युः शतशश्चखण्डा
भोग्योद्भवांशैश्च धनं स्फुटः स्यात् ॥९॥

सं० टी०—खनन्दनिघ्नाः तिथयः शशाङ्के ध्रुवके प्रदेयाः शतघ्नास्तिथयः केन्द्रध्रुवके प्रदेयास्ततः क्रमात् केन्द्रे षट्शरसप्तदस्त्रैः षट्पञ्चाशताधिकसप्तविंशतिशतैः शोध्यो विधुश्चागशराब्धिदस्त्रैः सप्तपञ्चाशताधिकचतुर्विंशतिशतैः शोध्यः पुनर्द्युवृन्दाद् दिनगणात् खसूर्यै-

यल्लब्धं तेनान्वित इन्दुश्चन्द्रः कर्त्तव्यश्चगर्द्धेति समाद्धाद् अव्दाद् मेषतुलादितश्च-उनः-युतः कार्यः, मेषादि षण् मासेषु-ऊनः तुलादिषट् मासेषु युतः कर्त्तव्यः (विषुव मेषतौलिकम्) विषुवादि मासेषु खचन्द्रनेत्रद्वयचन्द्र-खांशाश्चरार्द्ध भागा भवन्ति चरार्द्ध भागसंस्कारिते सति (वीजदेशान्तराभ्यां संस्कारितः) पुनः दिनगणाद् गगने-षुभिर्यल्लब्धं तच्छीतांशुकेन्द्रे योज्यं तत्प्रत्यहं स्युः (ततो वीजदेशान्तराभ्यां संस्कारितः) केन्द्रो भवति। तस्मा-च्छतशः भागेन खण्डाः सन्ति। भोग्योद्भवांशैर्धनं स्फुटः स्याच्च केन्द्रे शतशः भागेन चन्द्रखण्डाङ्केषु भुक्तः खण्डः प्राप्यते तदग्रे भोग्यः शतभागादवशिष्टं भुक्तभोग्यख-ण्डान्तरेण गुणितं शतास्तं भुक्तखण्डके युक्तं कृत्वा चन्द्रे योजयेद् योजिते सति, औदयिकमध्यमेन्दुः स्फुटः स्यात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

भा० टी०-दिन गण को ९० से गुणा करके मध्यमचन्द्र ध्रुवा में युक्त करै, फिर दिन गण में १२० का भाग देने से जो अंशादि फल मिलै उसे भी उसी में युक्त करै, मेषादि छः राशि-यों का ०।१।२।२।१।० यह ऋणचरार्द्ध है और एही तुलादि छः राशियों का धन चरार्द्ध है। चरार्द्ध को युक्त वा हीन करके २४५७ से शोषित करने से शेष मध्यम चन्द्र होता है, फिर उसको वीज और देशान्तर से संस्कार करने पर वीज देशा-न्तर संस्कारित मध्यम चन्द्रमा होता है। दिन गण को १००

से गुणि चन्द्र केन्द्र ध्रुवा में युत करके फिर दिन गण में ५० का भाग देने से जो फल मिलै उस को भी उसी में युक्त करै फिर उसको २७५६ से शोषित करने से शेष तत् कालिक चन्द्र केन्द्र होता है फिर उस को बीज और देशान्तर से संस्कार करने पर बीज देशान्तर संस्कारित चन्द्र केन्द्र होता है। केन्द्र में १०० का भाग देने से जो लब्ध मिलै वही संख्या वाला भुक्त खंडा और उस के आगे का अङ्क भोग्य खण्डा होता है, भुक्त भोग्य खण्डा का अन्तर करके शेष को अन्तर से गुणा करै फिर उसमें १०० का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसे भुक्त खण्डा में युक्त करै बाद २४५७ का भाग देने से जो शेष है उसमें उस को युत करने से स्पष्ट चन्द्र होता है। (सुगमता के लिये संस्कृत टीका से भाषा टीका में भेद किया गया है) ॥७॥८॥९॥

चन्द्रखण्डाङ्काः—

इन्दोः खरूपाग्निरसाः खचन्द्रा
नृपा जिनाः पञ्चगुणा रसाब्धयः।
षष्ठिः शरागाः कुनवाष्टकाष्ठाः
षड्भानवो राममनुर्नवाहाः ॥१०॥
पञ्चाम्बुदा खाङ्कभुवो द्विखाश्वि
विश्वाश्वि जात्यश्वि खरामदस्राः।
पञ्चाग्निदृग् गोऽग्नियमाः कुसिद्धा
नेत्राब्धिदृग् वह्निजिनास्त्रिसिद्धाः॥११॥

सं० टी०—इन्दोश्चन्द्रस्य खरूपाग्निरसाः खचन्द्रा नृपा जिनाः पञ्चगुणा रशाब्धयः षष्ठिः शरागाः कुनत्राष्ट-काष्ठा षड्भानवो राममनुर्नेत्राहाः पञ्चाम्बुदा खाङ्कभुत्रो द्विखाश्वि विश्वाश्वि जात्यश्वि खरामदस्राः पञ्चाग्निदृग् गोऽग्नियमाः कुसिद्धा नेत्राब्धिदृग् वह्निजिनास्त्रिसिद्धा-खण्डाङ्का भवन्ति ॥ १० ॥ ११ ॥

भा० टी०—चन्द्रमाका ० । १ । ३ । ६ । १० । १६ । २४ । ३५ । ४६ । ६० । ७६ । ९१ । १०८ । १२६ । १४३ । १५९ । १७५ । १९० । २०२ । २१३ । २२२ । २३० । २३५ । २३९ । २४१ । २४२ । २४३ । २४३ खण्डांक हैं ॥ १० ॥ ११ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ९० से गुणा किया तो २४३० हुए इसको चन्द्रमा के ध्रुवा ११५० । २१ । ३० में युत किया तो ३५८० । २१ । ३० हुए, फिर दिन गण २७ में १२० का भाग दिया तो अंशादिक ० । १३ । ३० मिले, इसको ३५८० । २१ । ३० में मिलाया तो ३५८० । ३५ । ० हुए इस में चरार्द्ध० को हीन किया तो ३५८० । ३५ । ० बचे इस में २४५७ का भाग दिया तो शेष ११२३ । ३५ । ० । रहे, इस में चन्द्रमा का अंशादि वीज ३ । ६ । १८ को युक्त किया तो ११२६।४१।१८ हुए इसमें अंशादि देशान्तर ऋण । १ । १२ । ० घटाया तो वीज देशान्तर संस्कारित मध्यम चन्द्रमा ११२९ । २९ । १८ हुआ ॥

दिन गण २७ को १०० से गुणा किया तो २७०० हुए इस को चन्द्र केन्द्र ध्रुवा २३६१ । ४३ । १४ में युत किया तो ५०६१ । ४३ । १४ हुए फिर दिनगण २७ में ५० का भाग दिया तो फल अंशादि ० । ३२ । २४ मिले इसको ५०६१ । ४३ । १४ में युत किया तो ५०६२ । १५ । ३८ हुए इसमें २७१६ का

भाग देने से शेष २३०६ । १९ । ३८ रहे इसमें चन्द्र केन्द्र का बीज धन ३।२७।० को युक्त किया तो २३०९।४२।३८ हुए इसमें चन्द्र केन्द्र का देशान्तर ऋण अंशादि १।२०।० को घटाया तो बीज देशान्तर संस्कारित चन्द्रमा का मध्यम केन्द्र २३०८।२२।३८ हुआ ॥

चन्द्रमा के केन्द्र २३०८।२२।३८ में १०० का भाग दिया तो फलगत खण्डा २३ मिला इससे तेइसवाँ गतखण्डा २३५ है, इसके बाद चौविसवाँ भोग्य खण्डा २३९ है, इन दोनों का अन्तर धन ४ हुआ इस से शेष ८।२२।३८ को गुणा किया तो ३३।३०।३२ हुए इसमें हर १०० का भाग दिया तो फल ०।२०।६ मिले, इस को भुक्त-खण्डा २३५ में मिलाया तो २३५।२०।६ हुए इस को मध्यम चन्द्रमा ११२९।२८।१८ में युक्त किया तो स्फुट चन्द्रमा १३६०।४९।२४ हुआ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥

चन्द्र खण्डा-अन्तर-भुक्ति बोधक चक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	संख्या
०	०	१	३	६	१०	१६	२४	३५	४६	खण्डा
०	१	२	३	४	६	८	११	११	१४	अन्तर
९० ०	९१ ०	९२ ०	९३ ०	९४ ०	९६ ०	९८ ०	१०१ ०	१०१ ०	१०४ ०	कलादि गतिः

१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	संख्या
६०	७५	९१	१०८	१२६	१४३	१५९	१७५	१९०	२०२	खण्डा
१५	१६	१७	१८	१७	१६	१६	१५	१२	११	अन्तर
१०५ ०	१०६ ४८	१०७ ०	१०८ ०	१०७ ०	१०६ ०	१०६ ०	१०५ ०	१०२ ०	१०१ ०	कलादि गतिः

२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	संख्या
२१३	२२२	२३०	२३५	२३९	२४१	२४२	२४३	२४३	खण्डा
९	८	५	४	२	१	१	०	०	अन्तर
९९ ०	९८ ०	९५ ०	९४ ०	९२ ०	९१ ०	९१ ०	९० ०	९० ०	चन्द्र गतिः

चन्द्रगति विधिः—

भुक्तिर्नवत्यान्वितभोग्यमिन्दोः ।

सं० टी०—इन्दोश्चन्द्रस्य खण्डान्तरं नवत्यान्वितं युक्तं भुक्तिर्भवति ॥

भा० टी० -चन्द्रमा के खण्डा के अन्तर में ९० को युक्त करने से चन्द्रमा की गति होती है ॥

उदाहरण—चन्द्रमा के खण्डा का अन्तर ४ है, इस में ९० को युक्त किया तो चन्द्रमा की गति ९४।० हुई ॥

तिथि विधिः—

अर्कोनचन्द्रात्तिथयः खनन्दैः ।
शेषोन खाङ्काङ्गनाङ्गनिघ्नाद्
भुक्त्यन्तराप्ता घटिका भवन्ति ॥१२॥

सं० टी०—अर्कोनचन्द्रात् खनन्दैर्लब्धंशुक्लप्रतिपदादयोगत तिथयो भवन्ति, यदा चन्द्राद्रविर्नशुध्यति तदा भगणं दत्वा शोधयेत्, शोधने यत्र शून्यं भवेच्छेषं

न भवति तत्र शुक्लप्रतिपत्तिथिर्भवति, शेषोन खाङ्काद् गगनाङ्ग निघ्नात् षष्ठिगुणिताद् भुत्यन्तराप्ता घटिका भवन्ति ॥ १२ ॥

भा० टी०—स्पष्ट चन्द्रमा में स्पष्ट सूर्य को घटाकर (सूर्य से यदि चन्द्रमा न्यून होय तो चन्द्रमा में २७०० को युत करके घटावें) उसमें ९० का भाग देने से फल गत तिथि मिलती है, शेष को ६० से गुणि के उसमें चन्द्रमा और सूर्य की भुक्ति के अन्तर (अर्थात् चन्द्रमा की भुक्ति में सूर्य की भुक्ति घटाने से जो शेष बचे) का भाग देने से वर्तमान तिथि की भुक्त घडी आदि मिलती है, शेष को हर ९० में घटा कर उसको ६० से गुणाकर के उसमें भुक्ति के अन्तर का भाग देने से वर्तमान तिथि की भोग्य घटी आदि होती है ॥ १२ ॥

उदाहरण—स्पष्ट चन्द्रमा १३६० । ४९ । २४ में स्पष्ट सूर्य २०० । ४४ । ४५ को घटाया तो शेष ११६० । ४ । ३९ बचे इसमें ९० को भाग दिया तो लब्धगत तिथि १२वीं मिली, भाग शेष ८०।४।३९ को ६० से गुणा कर के सजाती किया तो भाज्य २८८२७९ हुआ चन्द्रमा कि गति ९४ । ० में सूर्य की गति ७ । १६ को घटाया ता ८६ । ४४ बचे इसको सजाती किया तो भाजक ५२०४ हुआ इसका भाज्य २८८२७९ में भाग दिया तो फल वर्तमान तिथि का भुक्त घडी ५५ पल २४ मिले । पूर्व भाग शेष ८० । ४ । ३९ को हर ९० में हीन किया तो ९ । ५५ । २१ बचे इसको सजाती किया तो ३५७२१ हुए इसमें भाजक ५२०४ का भाग दिया तो फल वर्तमान तिथि की भोग्य घटी ६ पल ५२ मिले वर्तमान तिथि का गत भोग्य का योग ६२ । १६ हुआ ॥ १२ ॥

नक्षत्रविधिः—

शतातमृक्षं शतशोधितांशात्
षष्ट्याहता भुक्ति हतास्तुनाड्यः ।
राशिः शशाङ्काच्छरजाति लब्धम्
नक्षत्रवत् तद् घटिका भवन्ति॥१३॥

सं० टी०—शशाङ्काच्छतातं नक्षत्रं भवति, शतशोधितांशात् षष्ट्याहता भुक्ति हृता नाड्यो भवन्ति, तु शरजाति लब्धं राशिर्भवति, तच्छेषात् नक्षत्रवद् घटिका अंशादयो भवन्ति, एवं सूर्य्यस्पष्टविधावपि—" राशिस्स्फुटार्काच्छरजातिलब्धं खवाह्नि निघ्नादवशेषितोंऽशः"॥१३॥

भा० टी०—स्फुट चन्द्रमा (भचक्र २७०० से अधिक होंय तो भचक्र से शोधि के) में १०० का भाग देने से लब्ध गत नक्षत्र होता है । शेष को ६० से गुणा कर सवर्णित करके चंद्रगति का भाग देने से वर्तमान नक्षत्र की गत घड़ी आदि मिलती है, और पूर्व शेष को १०० में घटा कर उस को ६० से गुणा करके सवर्णित करै, वाद उसमें चन्द्रमा की गति का भाग देने से वर्तमान नक्षत्र की भोग्य घड़ी आदि होती है । स्फुट चन्द्रमा में २२५ का भाग देने से लब्धराशि होती है, अंशादि नक्षत्र की घड़ी के प्रकार से स्पष्ट करै ॥ १३ ॥

उदाहरण—स्फुट चन्द्र १३६० । ४९ । २४ में १०० का भाग दिया तो फल गत नक्षत्र १३ वाँ हस्त मिला, शेष ६० । ४९ । २४ को ६० से गुणा करके सजाती किया तो भाज्य २१८९६४ हुआ,

और चन्द्र गति ९४ को ६० मे गुणा तो भाजक ५६४०हुआ, इस का भाज्य में भाग दिया तो वर्तमान नक्षत्र की भुक्त घड़ी आदि ३८।४९ मिली, पूर्व भाग शेष ६०।४९ २४ को १०० में हीन किया तो शेष ३९।१०।३६ बचे इमको ६० से गुणा कर के सजाती किया तो भाज्य १४१०३६ हुआ इस में भाजक ५६४० का भाग दिया तो लब्ध वर्तमान नक्षत्र का भोग्य घड़ी २५ पल ० मिले, गत ऐष्यका योग ६३।४९ हुआ ॥

स्पष्ट चन्द्र १३६० । ४९ । २४ में २२५ का भाग दिया तो फल गतराशि कन्या ६ मिली, शेष १० । ४९ । २४ को ३० से गुणा कर सजाती किया तो ३४९ । २४ हुए इस में २२५ का भाग दिया तो फलगत अंशादि १ । ३३ । ११ मिले, इस में गतराशि ६ को युत किया तो स्पष्ट चन्द्रमा ६।१।३३।११ हुआ । स्पष्टसूर्य २००। ४४ । ४५ में २२५ का भाग दिया तो फल गतराशि ० मिली, शेष २००।४४।४५ को पूर्वोक्त क्रिया करने से अंशादि फल २६ ५१।५६ मिले इसमें गत राशि ० युत किया तो स्पष्ट सूर्य ०।२६।५१।५६ हुआ ॥ १३ ॥

योग विधिः—

एवं रवीन्दोर्युतितश्च योगाः
सूर्येन्दु भुक्त्यैकहृतस्तु नाड्यः ॥१४॥

सं० टी०—एवममुना प्रकारेण रवीन्दोस्सूर्यचन्द्रयोर्युतितः, योगा भवन्ति च सूर्येन्दुभुक्त्यैकहृतो नाड्यो भवन्ति । एवं रवीन्दोर्युतितश्चयोगाः सप्तान्विताश्चन्द्रगतिस्तुहार इत्यपिपाठः ॥ १४ ॥

"तिथिनक्षत्रयोगानां बृद्धिःपञ्चरसद्विकम् ।
क्रमेणैव तु हृयन्ते रसवेदगजैः क्रमात्" ॥१॥

भा० टी०-इसीप्रकार सूर्यचन्द्र के योग में १०० का भागदेने से फल गत योग होता है, शेषको ६० से गुणाकर सजाती करके सूर्य चन्द्रमा की भुक्ति के योग का भाग देने से लब्ध वर्तमान योग की भुक्तघड़ी होती है, पूर्व शेष को हर १०० में हीन कर उसको सजाती करके भुक्ति के योग का भागदेने से वर्तमान नक्षत्र की भोग्य घड़ी होती है ॥ १४ ॥

उदाहरण-स्फुटसूर्य २००।४४।४९ है, इसमें स्फुट चन्द्र १३६।०। ४९।२४ को युत किया तो १९६१।३४।९ हुए इस में १०० का भाग दिया तो लब्ध गतयोग १९ वां वज्र हुआ, शेष ६१।३४।९ को ६० से गुणा कर के सजाती किया तो भाज्य २२१६४९ हुआ, सूर्य की गति ७। १६ है, चन्द्रमा की गति ९४। ० है, इन दोनों को एक जगह युक्त किया तो १०१। १६ हुए इस को ६० से गुणा करके सजाती किया तो भाजक ६०७६ हुआ, इस को भाज्य २२१६४९ में भाग दिया तो वर्तमान सिद्धि योग की भुक्त घड़ी आदि ३६।२९ मिली, और पूर्व शेष ६१। ३४। ९ को हर १०० में हीन किया तो शेष ३८। २५। ५१ बचे, इस को ६० से गुणा करके सजाती किया तो भाज्य १३८३५१ हुआ, इस में भाजक ६०७६ का भाग दिया तो वर्तमान योग की भुक्त घटी आदि २२। ४६ मिली, भुक्त ऐष्य नाड़ी का योग किया तो ५९। १५ हुआ ॥ १४ ॥

करणविधिः—

अर्कोनचन्द्राच्छरवेदहीनात्
ततोऽपिशेषाच्चशराब्धिलब्धम् ।
सप्तावशेषं करणं ववाद्यम्
तन्नाडिकाद्यास्तिथिवद् भवन्ति ॥१५॥

सं० टी०—अर्कोन चन्द्राच्छरवेदहीनात् ततोऽपि शेषाच्च शराब्धिलब्धं सप्तावशेषं बवाद्यं करणं भवति तन्नाडिकाद्या तिथिवद् भवन्ति ॥ १४ ॥

भा० टी०—स्पष्ट चन्द्रमा में स्पष्ट सूर्यको हीन करके फिर उसमें ४५ को घटाकर उसमें ४५ का भाग देनेसे जो लब्ध मिलै उसमें ७ का भाग देनेमें शेष बवादिगत करण होता है, पूर्वभाग शेष को हरमें घटाकर वर्तमान करण की भुक्त भोग्य घड़ी तिथि की घड़ी की रीति से साधै ॥ १४ ॥

उदाहरण–स्फुट चन्द्र १३६० । ४९ । २४ में स्फुटसूर्य २०० । ४४ । ४५ को घटाया तो ११६० । ४ । ३९ बचे इस में ४५ और घटाया तो १११५ । ४ । ३९ बचे इसमें ४५ का भाग दिया तो फल २४ मिले इसमें ७ का भाग दिया तो शेष गतकरण ३ रा कौलव मिला, पूर्वशेष ३५ । ४ । ३९ को ६० से गुणा करके सजाती किया तो भाज्य १२६२७९ हुआ, चन्द्र गति ९४ । ० में सूर्य गति ७ । १६ को हीन किया तो ८६ । ४४ हुए इस को ६० से गुणा करके सजाती किया तो भाजक ५२०४ हुआ, इसका भाज्य १२६२७९ में भाग दिया तो वर्तमान तैतिल करण की भुक्त घड़ी आदि २४।१६ मिलीं । फिर पूर्वशेष ३५।४।३९ को हर ४५ में हीन किया तो शेष ९।५५।२१ बचे इस को सजाती करने से भाज्य ३५७२१ हुआ इस में भाजक ५२०४ का भाग देने से फल वर्तमान तैतिल करण की भोग्य घड़ी आदि ६ । ५२ मिली, वर्तमान करण का गत ऐष्य योग ३१ । ८ हुआ ॥ १४ ॥

स्थिर करणाः—

परे दले कृष्णा चतुर्दशी या

तिथ्यर्द्धभोगः शकुनिश्चतुष्पात् ।
नागश्च किन्तुघ्नमिति क्रमेण
चत्वारि विद्यात् करणानि नित्यम् ॥१५॥

सं० टी०—कृष्णचतुर्दशी या परे दले तिथ्यर्द्धभोगः शकुनी चतुष्पान्नागश्च किन्तुघ्नं चेति क्रमेण चत्वारि करणानि नित्यं विद्यात् ॥ १५ ॥

भा० टी०- कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के पर दल से तिथि का आधा भोगने वाला शकुनी चतुष्पाद्--नाग- किंतुघ्न नामके करण नित्य होते हैं, अर्थात् चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुनी- अमावस के पूर्वार्द्ध में चतुष्पाद्-उत्तरार्द्ध में नाग-और प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किंतुघ्न होते हैं ॥ १५ ॥

अल्पश्रमेण पञ्चाङ्ग विधिः—

दिने दिनेऽहर्गण रूपयुक्तः
सप्तैव सूर्ये च खनन्दमिन्दौ ।
खखेन्दवः केन्द्रगणे प्रयोज्याः
प्रागवत् स्फुटीकृत्य तिथिः प्रसाध्या ॥१६॥

सं० टी०—दिने दिने कोऽर्थः प्रतिदिनेऽहर्गणरूप युक्तः-सूर्येसप्तैव-इन्दौ चन्द्रे खनन्दं-केन्द्रगणे केन्द्र- समूहे खखेन्दवः प्रयोज्याः प्राग्वत् पूर्ववत् स्फुटीकृत्य तिथिः प्रसाध्या ॥ १६ ॥

भा० टी०—प्रतिदिन दिनगण में १ सूर्य में ७ चन्द्रमा में ९० केन्द्र में १०० को युतकर पूर्ववत् स्पष्ट करके तिथि आदि को साधै, इस श्लोक से और पूर्व के श्लोक से चन्द्र और चन्द्रकेन्द्र में अन्तर पड़ता है। चन्द्रमा में ९०।०।३०। और चन्द्रकेन्द्र में १००।१।१२ को प्रतिदिन युत करने से ठीक होता है ॥ १६ ॥

सूर्यदिनगणसारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई) ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	६३	अंश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	कला
०	०	०	०	०	०	०	०	०	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिनगण
७०	१४०	२१०	२८०	३५०	४२०	४९०	५६०	६३०	अंश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	कला
०	०	०	०	०	०	०	०	०	विकला

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
७००	१४००	२१००	अंश
०	०	०	कला
०	०	०	विकला

चन्द्रदिनगणसारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई) ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
९०	१८०	२७०	३६०	४५०	५४०	६३०	७२०	८१०	अंश
०	१	१	२	२	३	३	४	४	कला
३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिनगण
९००	१८००	०	९००	१८००	०	९००	१८००	०	अंश
५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	कला
०	०	०	०	०	०	०	०	०	विकला

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
९००	१८०१	२	अंश
५०	४०	३०	कला
०	०	०	विकला

चन्द्र केन्द्र दिन गण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
१००	२००	३००	४००	५००	६००	७००	८००	९००	अंश
१	२	३	४	६	७	८	९	१०	कला
१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिनगण
१०००	२०००	३००	१३००	२३०१	६०१	१६०१	२६०१	९०१	अंश
१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	कला
०	०	०	०	०	०	०	०	०	विकला

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
१९०२	११०४	३०६	अंश
०	०	०	कला
०	०	०	विकला

भा० टी०-दिन दिन का दिन गणके अनुकूल मध्यम ग्रह जानने केलिये यह दिन गणसारणी तीन विभाग में बनाई गई है, पहिला विभाग जो ऊपर है उसमें एकादि (एकाईका) याने एकसे नवतक का अंक लिखा है, दूसरा विभाग जो पहिले विभाग के नीचे है उसमें दशादि (दहाई का) अंक १०—२०—३० इस प्रकार से ९० तक लिखा है, तीसरा विभाग जो दूसरे विभाग के नीचे है उसमें शतादि (सैकड़ा का) अंक एक सौ से तीन सौ तक लिखा है ॥

जिस दिन का ग्रहस्पष्ट करना होय उस दिन का पहिले दिन गण बनावे, फिर जिस ग्रह को स्पष्ट करना होय उस ग्रह की दिन गण सारणी के अनकूल अर्थात् दिन गण में जो जो अक एकादिक का होय उस उस अंक के नीचे

जो जो अंशादि फल मिलैं उसको पृथक् पृथक् लिखना जाय पीछे सब अंक को एक जगह जोड़ देने से जो अंशादिक मिलै उसको शास्त्राब्द से ल्याये हुए उस ग्रह के ध्रुवा में युक्त करने से उस दिन के सूर्योदय का मध्यम ग्रह होता है ॥

उदाहरण — श्रीसम्वत् १९६८ शाका १८३३ वैशाखकृष्ण १० गुरुवार के दिन पूर्वोक्त रीति से दिनगण बनाया तो दिनगण ९ हुआ, सूर्य को स्पष्ट करना है और दिनगण में सिर्फ एकाई के अंकों में से ९ है, इसमें सूर्य की दिनगण सारणी के एकाई में से ९ के नीचे देखा तो अंशादि ६३ । ० । ० मिले, इसको शास्त्राब्द से ल्याये हुये सूर्य के ध्रुवा ३ । २३ । ५३ में युक्त किया तो उस दिन का मध्यम सूर्य अंशादि ६६ । २३ । ५३ हुआ ॥ श्रीसंवत् १९६८ शाका १८३३ वैशाख शुक्ल १५ शनिवार के दिन दिनगण २९ है, सूर्य को स्पष्ट करना है, दिनगण में एकाई ९ है दहाई दो इसमें सूर्य की दिन गण सारणी में एकाइ में से नव के नीचे देखा तो अंशादि ६३ । ० । ० मिले, दहाई में दो है इस से बीस के नीचे दहाई के कोष्ठ में देखा तो अंशादि १४० । ० । ० मिले, इन दोनों को जोड़ दिया तो अंशादि २०३।०।० हुआ, इसको सूर्य के ध्रुवा ३।२३।५३ में युत किया तो मध्यम सूर्य अंशादि २०६ । २३ । ५३ हुआ ॥ श्रीसंवत् १९६८ शाका १८३३ भाद्रपदकृष्ण ९ मङ्गलवार के दिनगण १२३ है, सूर्य स्पष्ट करना है दिनगण में एकाई में से तीन दहाई में से दो सैकड़ा में से एक है, पहिले इकाई में से तीन के नीचे देखा तो अंशादि २१ । ० । ० मिले, दहाई में दो है इससे बीस के नीचे देखा तो अंशादि १४० । ० । ० मिले, सैकड़े में एक है इस से एक सौ के नीचे देखा तो अंशादि ७०० । ० । ० मिले, इस तीनों अंशादिक अंक का एकत्रित किया तो अंशादि ८६१ । ० । ०

हुआ, इसमें सूर्य के ध्रुवा ३ । २२ । ९२ को युत किया तो अंशादि मध्यम सूर्य ८६४ । २३ । ९२ हुआ । इसी प्रकार से सब ग्रहों को बनाकर वीज देशान्तर का संस्कार करने से वीज देशान्तर संस्कारित मध्यम ग्रह होते हैं ॥

सङ्क्रान्तिविधिः--

शत तत्वं शतार्द्धं च
पादोनं क्रमशस्त्रिधा ।
द्विहीनं चाब्दगुणितम्
रवेस्सङ्क्रमणं भवेत् ॥ १७ ॥
पुनर्द्विनिघ्नाब्दनगेषुचन्द्रै-
र्लब्धं च घट्यादिषु युक्तमेतत् ।
रेखान्तरेणाग्नियुतोन पूर्वे
परोऽथ मेषे खकृतिश्च देवे ॥१८॥

इति श्रीमच्छतानन्दविरचितायां भास्वत्यां पञ्चाङ्गस्पष्टाधिकारस्तृतीयस्समाप्तः ॥ ३ ॥

सं.टी.--शततत्वं शतार्द्धं पादोनं क्रमशस्त्रिधाब्दगुणितं शताप्तं जातं वाराद्यं सप्ताधिकं सप्ततष्टं द्विहीनं घट्याद्यं भवन्ति, पुनर्द्विनिघ्नाब्द नगेषुचन्द्रैर्लब्धमेतत्पूर्वं घट्यादिषु युतमथ ख कृतिर्देवे च युक्तं रेखापरेणाग्नियुतोन पूर्वे परे-अर्थात् कुरुक्षेत्रात् पूर्वे देशान्तरेण युक्तं परे हीनं पुनः स्व स्व क्षेपकाङ्केन युक्तं मेषादि सङ्क्रान्तिर्भवति॥१७॥१८॥

*"अब्दो भवघ्नः पृथगर्कहीनः
खागैकलब्धेन युतः खरामैः ।
लब्धाधिमासस्य तु योऽस्ति शेष-
स्सैकोऽर्कसङ्क्रान्ति तिथिस्तु चैत्रे" ॥
†"वारे रूपं तिथौ रुद्र नाड्यां पञ्चदशैव हि ।
एकत्रिंशत् पले देया जायते सूर्यसङ्क्रमः" ॥ १ ॥
"अष्टाधिमासाः स्युर्नित्यं प्रोच्यन्ते फाल्गुनादयः ।
सौम्य पौषौ क्षयं नित्यं भवेतामिति निश्चितम् ॥ १ ॥
क्षयो वाप्यधिमासो वा स्यादूर्ज इति निश्चितम् ।
न क्षयो नाधिमासः स्यान्माघो वै परिकीर्तितः ॥२॥

---

* उदाहरण—शाकाब्द ८१२ को ११ से गुणा किया तो ८९३२ हुए इसको दो जगह रक्खे एक जगह १२ घटाया तो ८९२० हुए इसमें १७० का भाग लिया तो लब्ध ५२ मिले, इसको दूसरी जगह ८९३२ में युक्त किया तो ८९८४ हुए इसमें ३० का भाग दिया तो लब्ध अधिमास २९९ मिले, शेष १४ बचे इसमें १ युत किया तो १५ हुए, चैत्र शुक्ल पूर्णिमा गुरुवार के घटी २८ पल २९ पर मेष की संक्रान्ति हुई ॥

† श्रीसंवत् १९६८ शाका १८३३ में मेष संक्रान्ति वार ५ तिथि १५ घटी २८ पल २५ पर हुई है, इस में वार्षिक क्षेपक १।११।१५।३१ को युक्त किया तो शाका १८३४ में मेष की संक्रान्ति वार ६ तिथि २६ घटी ४३ पल ५६ पर हुई इसी प्रकार से वृष आदि सब संक्रान्तियों को स्पष्ट करे ॥

पञ्चमासास्तु वैशाखादधिमासा व्यवस्थिताः ।
भवन्ति चाष्टभिर्वर्षैर्भवै११र्वाङ्क निशाकरैः१९ ॥ ३ ॥
तथैव फाल्गुनश्चैत्रआश्विनः कार्तिकोऽधिका ।
एतेक्रिन्द्रैः१४१ शराङ्गैः६५र्वा कदाचिद् गोकु१९वत्सरे॥४॥
मार्गपौषौ क्षयौ स्यातां कदाचित् कार्तिको भवेत् ।
अधिमासस्तदा भाद्रपदो ज्ञेयश्च फाल्गुनः ॥ ५ ॥
क्षयात् प्रागधिमासः स्यान्नित्यं भाद्रपदत्रये ।
आश्विनोर्जौ सदा स्यातामादौ भाद्रपदः सकृत ॥६॥
द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकाणां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ॥७॥
*व्योमाग्निनागै रहितः शकेन्द्रो नवेन्दुभिर्भाजितशेषकाङ्कैः।
त्रिरुद्रखाष्टाष्टि शराश्च विश्वे हि चैत्रमारभ्य सदाधिमासः॥८॥
†वाणाग्निशक्रोनितशाक मध्ये सूर्याहतावेदयुतामुनीन्द्रैः ।
नवेन्दुभक्ता यदि यत्र शेषश्चैत्रादि मासेषु तदाधिमासः ॥९॥

---

*उदाहरण—शाका १८३४ में ८३० को घटाया तो शेष १००४ बचे इस में १९ का भाग दिया तो शेष १६ बचे अतः आषाढ अधिमास होना चाहिये ॥

† उदाहरण—शाका १८३४ में १४३५ हीन किया तो शेष ३९९ बचे इसको १२ से गुणा किया तो ४७८८ हुए इसमें ४ को युत किया तो ४७९२ हुए इसमें १९ का भाग दिया तो शेष ४ बचे अतः चैत्र से चौथा आषाढ अधिमास हुआ ॥

चन्द्रार्कयोस्तुर्विंबैक्यं प्रतिपद् दर्शे सन्धिषु ।
अमान्तादुभयत्रापि रसनाड्योऽर्कमण्डलात्॥१०॥
तन्मण्डलाच्छशी गच्छेत्ततः सूर्यस्य संक्रमः ।
मासोऽसौ मलिनः प्रोक्तो न तद्दिनोऽधिकः स्मृतः॥११॥
असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्
द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित् ।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्याद्
तदा वर्षमध्येऽधिमास द्वयं च" ॥१२॥

भा०टी०—शास्त्राब्द को १२५।१०।७५ से गुणा करके उसमें १०० का भाग देने से क्रमशः वारादिक होते हैं (वार ७ से अधिक होय तो ७ से शेषित करै) फिर वार में २ घटा देवै, पुनः शास्त्राब्दको २ से गुणा करके उसमें १५७ का भागदेवै जो फलमिलै उसको पूर्व के ल्याए हुए घट्यादि में युत करै, फिर वारादिमें ०।२१।३३ को युत करके उसमें पूर्व पश्चिम के क्रमसे देशान्तर को धन ऋण करै, फिर उसमें जिस २ संक्रान्ति (नक्षत्र) का क्षेपक युक्त करै वह वह संक्रान्ति (नक्षत्र) स्पष्ट होती है ॥ १७ ॥ १८ ॥

उदाहरण—शास्त्राब्द ८१२ को १२५।१०।७५ से गुणा किया तो १०२१९३।३५।०हुए इसमें १०० काभाग दिया तो फल वारादि १०२१।५६।९ मिले वार १०२१ में ७ का भाग देने से शेष ६ बचे इसमें २ घटाया तो वारादि ४।५६।९ हुए, शास्त्राब्द ८१२ को २ से गुणा किया तो १६२४ हुए इसमें १५७ का भाग दिया तो फल घटी आदि १०।२१ मिले इसको पूर्व के ल्याए हुए वारादि के

घटी आदिमें युक्त कियातो वारादि ५।६।३० हुए इसमें ०।२१।२३ को युत किया तो वारादि ५।२८।३ हुए इसमें स्वदेशका देशान्तर पल ४७ को युत किया तो सङ्क्रान्ति का ध्रुवा ५।२८।५० हुआ इसमें मेष राशि का क्षेपक ०।०।० को युक्त किया तो मेष संक्रान्ति वारादि ५।२८।५० हुई। ध्रुवा ५।२८।५० में वृष राशिका क्षेपक ३।५७।१ को युक्त किया तो वृष राशि की संक्रान्ति वारादि १।२५।५१ हुई, इस प्रकार से ध्रुवा में बारहो राशि अट्ठाईसो नक्षत्र का क्षेपक युक्त करके स्पष्ट करै॥१७॥१८॥

शकाङ्काः ।

१८३३	१८५३	१८७३	१८९३	१९१३	१९३३	१९५३	१९७३	शक
५	२	६	३	१	५	२	६	वार
२८	३८	४८	५९	९	१९	३०	४०	घटी
३	२३	४३	३	२३	४३	३	२३	पल

१९९३	२०१३	२०३३	२०५३	२०७३	२०९३	२११३	२१३३	शक
३	१	५	२	६	३	०	५	वार
५०	१	११	२१	३२	४२	५२	३	घटी
४३	३	२३	४३	३	२३	४३	३	पल

२१५३	२१७३	२१९३	२२१३	२२३३	२२५३	२२७३	२२९३	शक
२	६	३	०	४	२	६	३	वार
१३	२३	३४	४४	५४	५	१५	२५	घटी
२३	४३	३	२३	४३	३	२३	४३	पल

शेषांकाः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	शेष
१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	वार
१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	घटी
३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	पल

११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	शेष
६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	वार
५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	घटी
४१	१२	४३	१४	४५	१६	४७	१८	४९	२०	पल

सङ्क्रान्ति क्षेपकाङ्काः ।

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	संक्रान्ति
०	२	६	३	६	२	वार
०	५७	२३	०	३०	३०	घटी
०	१	१	५१	४	२९	पल

तु.	वृ.	ध	म.	कुं.	मी.	सङ्क्रान्ति
४	६	१	२	४	५	वार
५५	४८	१७	३६	३	५३	घटी
४८	३१	११	४	१५	२१	पल

नक्षत्र क्षेपकाङ्काः ।

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ	पुः	पु.	श्ले	म.	नक्ष०
०	६	६	६	६	६	६	६	६	६	वार
०	४१	३०	२४	२३	२४	२९,	३२	३२	३०	घटी
०	३४	०	३५	३६	३७	३८	३९	४४	४	पल

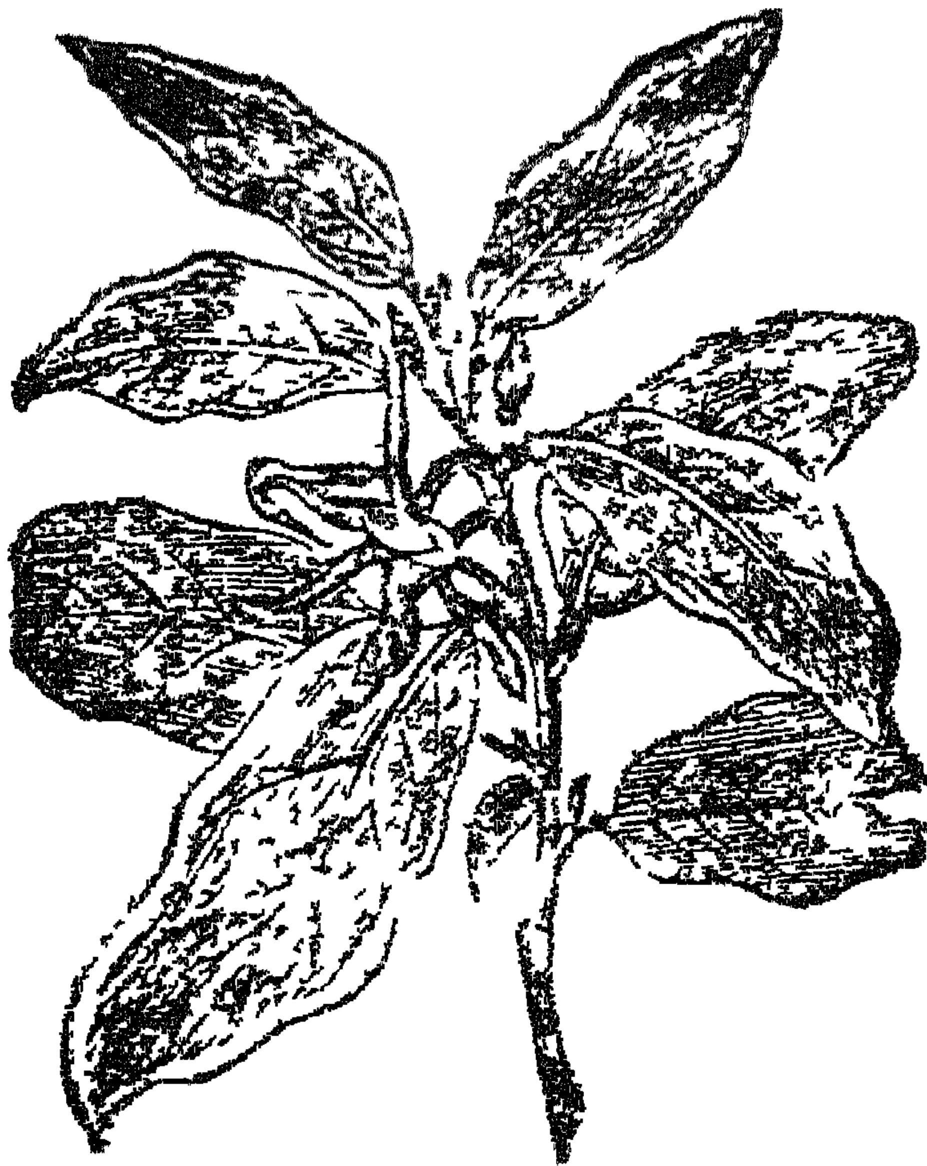
पू.	उ.	ह.	चि	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.	मू.	नक्ष.
६	६	५	५	४	३	३	२	१	वार
१९	५	४३	११	३६	५६	५	१२	१७	घटी
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	११	पल

पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.	नक्षत्र
०	६	२	५	४	३	२	२	१	वार
१९	१९	१७	२६	३०	४०	५१	११	४२	घटी
५०	५१	३५	०	०	०	०	०	०	पल

भाषावार्तिक–सारणी से संक्रान्ति और नक्षत्र स्पष्ट करने की यह विधि है कि शकांक और शेषाङ्क को युक्त करके उस में अपने देश के देशान्तर को धन ऋण करने से वर्ष भर की संक्रान्ति या नक्षत्र साधने का ध्रुवा होता है, फिर जिस २ राशि का क्षेपक उस में युक्त किया जायगा उस २ राशि की संक्रान्ति होगी या जिस २ नक्षत्र का क्षेपक युक्त किया जायगा वह २ नक्षत्र होगा (संक्रान्ति नक्षत्र का क्षेपक मकरन्दसारणी से लिखा गया है)

उदाहरण—शाका १८३९ में पुस्तकीयशक १८३३ को हीन किया तो शेष २ बचे शकके नीचे वारादि ६।२८।३ शेषांक के नीचे वारादि २।३१।२ है, इन दोनों को एक जगह जोड़ने से इस वर्ष की संक्रान्ति नक्षत्र साधने का वारादि ध्रुवा ०।९९।९ हुआ, इस में काशी का देशान्तर पल ४७ को युक्त किया तो ०।९९।९२ हुए इस में सिंह राशि का क्षेपक ६।३०।४ युक्त किया तो सिंह संक्रान्ति वारादि ०।२९।९६ स्पष्ट हुई, इस ध्रुवा ०।९९।९२ में हस्त नक्षत्र के क्षेपक ९।४३।४३ को युक्त किया तो हस्त नक्षत्र वारादि ६।४३।३९ स्पष्ट हुआ (बहुत से लोग काशी का देशान्तर ३।९ मानते हैं) ॥

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्रीदेछत्रधरसूरि सूनुना गणक मातृप्रसादेन विरचितायां भास्वत्यां छात्रबोधिनी नाम टीकायां पञ्चाङ्गस्पष्टाधिकारस्तृतीयस्समाप्तः ॥३॥



अथ ग्रहस्पष्टाधिकारः ।

मध्यमभौम विधिः—

भौमः स्वरघ्नाद्युगणात् कृताप्तम्
पुनर्द्युवृन्दात् त्रिशताप्त हीनम् ।

सं०टी.—स्वरघ्नात् सप्तगुणाद् द्युगणाद् दिनगणात् कृताप्तं चतुर्भिर्भाजितं, पुनर्द्युवृन्दादहर्गणात् त्रिशताप्त हीनम् (शास्त्रशरदागत ध्रुवके युतं) मध्यम भौमो भवति ॥

भा० टी०—दिनगण को ७ से गुणा करके उस में ४ का भागदेने से जो फलमिलै उसफल में, दिनगण में ३०० के भाग-देने से जो फल मिलै उसको घटावै फिर उसको मङ्गलके ध्रुवा में युक्त करने से उस दिन सूर्योदय काल में मध्यम भौम होता है ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ७ से गुणा तो १८९ हुए इसमें ४ का भाग दिया तो फल ४७ । १५ । ० मिले फिर दिन गण २७ में ३०० का भाग दिया तो लब्ध ० । ५ । २४ मिले इस को ४७ । १५ । ० में घटाया तो ४७ । ९ । ३६ हुए फिर इस को मङ्गल के ध्रुवा ९०२ । २ । ११ में युक्त किया तो उस दिन सूर्योदय में मध्यम भौम ९४९ । ११ । ४९ हुआ ॥

भौम दिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई) ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
१	३	५	६	८	१०	१२	१३	१५	अंश
४४	२९	१४	५९	४४	२८	१३	५८	४३	कला
४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिन गण
१७	३४	५२	६९	८७	१०४	१२२	१३९	१५७	अं.
२८	५६	२४	५२	२०	४८	१६	४४	१२	क.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	वि.

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
१७४	३४९	५२४	अंश
४०	२०	०	कला
०	०	०	विकला

बुधशीघ्र विधिः—

अष्टाष्टशेषः खखरामनिघ्नः

पक्षाक्षिभिस्सोम सुतस्यशीघ्रम् ॥ १ ॥

सं० टी०—अहर्गणोऽष्टाष्टशेषः ततः खखरामनिघ्नः शत त्रयेण गुणितः पक्षाक्षिभिर्द्वाविंशतिभिर्भजेत् (शास्त्राब्दागत शीघ्रे युक्तेसति) सोमसुतस्य बुधस्य शीघ्रं भवति ॥ १ ॥

भा० टी०—अहर्गण में ८८ का भागदेने से जो शेष बचै उसको ३०० से गुणि २२ का भागदेने से जो लब्ध मिलै

इसको शास्त्राब्द से आयेहुए शीघ्रमें युक्त करने से उस दिन सूर्योदय के समय बुधका शीघ्र होता है ॥ १ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ में ८८ का भाग देने से शेष २७ बचे, इसको ३०० से गुणातो ८१०० हुए फिर इसमें २२ का भाग देने से लब्ध ३६८।१०।५९ मिले, इसको शास्त्राब्द से ल्याये हुए शीघ्र ४१२।१९।४० में युक्त किया तो बुधका शीघ्र ७८०।२६। ३९ हुआ ॥ १ ॥

बुधदिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई) ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
१३	२७	४०	५४	६८	८१	९५	१०९	१२२	अंश
३८	१६	५४	३२	१०	४९	२७	५	४३	कला
११	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिनगण
१३६	२७२	४०९	५४५	६८१	८१८	९५४	१०९०	२७	अंश
२१	४३	५	२७	४९	१०	३२	५४	१६	कला
५०	३९	३०	१९	१०	५९	५०	३९	३०	विकला

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण.
१६३	३२७	४९०	अंश
३८	१६	५५	कला
२०	४०	०	विकला

मध्यमगुरुविधिः—

गुरुर्गुणघ्नाद्युगणाद्दशाप्तो
वेदाब्धिभिर्लब्ध विवर्जितश्च ।

सं.टी.-गुणाघ्नाद्युगणात् त्रिभिर्गुणिताद् दिनगणाद् दशाप्तो दशभिर्भक्तश्च पुनर्दिनगणाद् वेदाब्धिभिर्लब्ध-विवर्जितः (शास्त्रब्दागतध्रुवके युक्तः) गुरुर्भवति ॥

भा० टी०-दिनगण को ३ से गुणि दश का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसको एक जगह धरि देवै, फिर दिन गण में ४४ का भाग देनेसे जो लब्ध मिलै उसको पहिले के लब्ध में घटा कर बृहस्पति के ध्रुवा में युक्त करने से मध्यमगुरु होता है ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ३ से गुणा तो ८१ हुए इसमें १० का भाग दिया तो लब्ध ८। ६ । ० मिले, फिर दिन गण २७ में ४४ का भाग दिया तो लब्ध ०। ३६ । ४९ मिले, इसको पूर्व के लब्ध ८ । ६ । ० में घटाया तो ७ । २९ । ११ । बचे इसको बृहस्पति के ध्रुवा ६६४ । ४९ । २० में युक्त किया तो मध्यम गुरु ६७२ । १८ । ३१ । हुआ ॥

गुरु दिनगण सारणीयम्। एकाद्यङ्कानि (एकाई)।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण.
०	०	०	१	१	१	१	२	२	अंश
१६	३३	४९	६	२३	३९	५६	१३	२९	कला
३८	१६	५४	३२	११	४९	२७	५	४३	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिनगण
२	५	८	११	१३	१६	१९	२२	२४	अंश
४६	३२	१९	५	५१	३८	२४	१०	५७	कला
२१	४३	५	२७	४९	११	३२	५४	१६	विकला

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण.
२७	५५	८३	अंश
४३	२७	१०	कला
३८	१६	५५	विकला

शुक्र शीघ्रविधिः—

वेदा हतोऽधोगुण भागयुक्तः
सितस्य शीघ्रं सहितः खशक्रैः ॥ २ ॥

सं० टी०—वेदाहतश्चतुभिर्गुऽणीतो दिनगणोऽधः स्थानद्वये स्थाप्यः-एकत्र गुणाप्तः त्रिभिर्भजेल्लब्धमंशादि-रन्यत्र द्वितीय स्थाने युक्तः, पुनर्दिनगणात् खशक्रैः प्राप्त फलेन सहितो युक्तः (शाकाब्दागत ध्रुवके युक्ते सति) सितस्य शुक्रस्य शीघ्रं भवति ॥ २ ॥

भा० टी०-दिनगण को ४ से गुणाकर दो जगह रक्खै, एक जगह ३ का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसको दूसरे जगह जोड़े, फिर दिन गण में १४० का भाग देने से जो फल मिलै, उसको पूर्व अङ्क में युक्त करि शुक्र के ध्रुवा में युक्त करने से शुक्र का शीघ्र होता है ॥ २ ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ४ से गुणा तो १०८ हुए इस को दो जगह धरि के एक जगह ३ का भाग दिया तो लब्ध ३६ । ० । ० मिले, इस को दूसरी जगह युत किया तो १४४ । ० । ० हुए, फिर दिन गण २७ में १४० का भाग दिया तो फल ० । ११ । ३४ मिले इसको १४४ । ० । ० में युत किया तो १४४ । ११ । ३४ हुए, इसको शुक्र के शीघ्रध्रुवा २६३ । २० । ५२ में युत किया तो शुक्र का मध्यम शीघ्र स्पष्ट ४०७ । ३२ । २६ हुआ ॥२॥

शुक्र दिन गणसारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिन गण
५	१०	१६	२१	२६	३२	३७	४२	४८	अंश
२०	४०	१	२१	४२	२	२३	४३	३	कला
२६	५१	१७	४३	९	३४	०	२६	५१	विक०

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिन गण
५३	१०६	१६०	२१३	२६७	३२०	३७३	४२७	४८०	अंश
२४	४८	१२	३७	१	२५	४९	१४	३८	कला
१७	३४	५१	८	२५	४२	५९	१६	३३	विक०

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
५३४	१०६८	४०२	अंश
२	५	८	कला
५०	४०	३०	विकला

मध्यमशनिविधिः—

शनिर्द्युवृन्दान्नव भाग लब्धम्
ध्रुवान्वितं रव्युदयस्य मध्याः ।

सं० टी०—द्युवृन्दाद् दिन समूहान्नव भाग लब्धं ध्रुवान्वितं शनिर्भवति, रव्युदयस्य सूर्य्योदयस्य मध्या भौमादिग्रहा भवन्त्येवम् ॥

भा० टी०—दिन गण में ९ का भाग देने से जो लब्ध मिले उसको शनि के ध्रुवा में युक्त करने से सूर्य्योदय का मध्यमशनि होता है । इस प्रकार से सूर्योदय के समय मङ्गल आदि ग्रह का मध्यम स्पष्ट होता है ॥

उदाहरण—दिनगण २७ में ९ का भाग देने से लब्ध ३ । ० । ० मिले इसको शनि के ध्रुवा ५४।०।० में युत करने से मध्यम शनि ५७ । ० । ० हुआ ॥

शनि दिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई) ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
०	०	०	०	०	०	०	०	१	अंश
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	कला
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिन गण
१	२	३	४	५	६	७	८	१०	अंश
६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	कला
४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	विक०

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
११	२२	३३	अंश
६	१३	२०	कला
४०	२०	०	विकला

बुधशुक्रयोर्मध्यम-भौम गुरु शनीनां शीघ्रविधिः-

दिग्घ्नाद् घनोनात् खनगांश हीनात्
त्रिभिर्भृगुज्ञार्कि कुजेज्यशीघ्रम् ॥ ३ ॥

सं. टी.—दिग्घ्नाद् दशगुणाद् दिनगणाद् घनोनात् सप्तदशभिरूनात् ततः स्थनद्वये धृत्वा, एकत्र खनगांशेन विभाजितफलमन्यत्र हीनात् त्रिभिर्विभाजितं भृगुज्ञमध्यमौ—अर्क्किकुजेज्य शीघ्रं बुधशुक्रयोर्मध्यमौ भवतः, भौमगुरुशनीनां शीघ्रं भवति ॥ ३ ॥

भा० टी०—दिनगण को १० से गुणा कर उसमें १७ घटाकर दो स्थान में स्थापित करके एक स्थान में ७० का भाग

देने से जो फल मिलै उसको दूसरे स्थान में घटाकर फिर उस में ३ का भाग देने से जो फल मिलै वह बुध-शुक्र का मध्यम और मङ्गल-वृहस्पति-शनिश्चर का शीघ्र होता है ॥३॥

उदाहरण—दिनगण २७ को १० से गुणा तो २७० हुए इसमें १७ घटाया तो २५३ हुए इसको दो स्थान में स्थापित किया, एक स्थान २५३ में ७० का भाग देने से लब्ध ३।३६।५१ मिले इसको दूसरे स्थान २५३ में घटाया तो २४९।२३।९ हुए इसमें ३ का भागदिया तो बुध—शुक्र का मध्यम, मङ्गल-वृहस्पति—शनिका शीघ्र ८३।७।४३ हुआ ॥ ३ ॥

(यहाँ एतना विशेषता है कि एकाद्यंक सारणी का अंक केवल नवही दिन गण तक रहैगा, दशाद्यंक तथा शताद्यंक सारणी के साथ दिन गण के एकादि अंक के लिये एक होय वहाँ ३।१७।९ युक्त करै और दो के जगह ३।१७।९ का दूना ६।३४।१८ युक्त करै इसी प्रकार से तीन के जगह ३।१७।९ का तिगुना चार के जगह चौगुना इसी प्रकार से आगे भी जानै) ॥

बुधशुक्र मध्यम भौम गुरु शनि शीघ्र दिनगण सारणीयम् ।
एकाद्यङ्कानि (एकाई) ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
०	०	४	७	१०	१४	१७	२०	२३	अंश
०	५९	१६	३३	५०	७	२५	४२	५९	कला
०	९	१७	२५	३३	४१	५०	५१	८	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिनगण
२७	५४	८१	१०९	१३६	१६२	१९०	२१८	२४५	अंश
१६	३२	४८	५	२१	३७	५२	१०	२६	कला
१७	३३	५०	७	२४	४०	५७	१४	३१	विकला

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
२७२	५४५	८१८	अंश
४२	२५	८	कला
४८	३६	२४	विकला

भौमादीनां देशान्तरम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
०	०	०	०	०	अंश
१	२	०	२	०	कला
२४	३८	१४	३८	६	विकला
ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ	ऋ.	ऋण

भौमादीनां बीजाः ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
०	०	०	०	०	अंश
०	४	१५	२	०	कला
११	१८	१३	४५	३	विकला
ध.	ध	ध.	ध.	ध.	धन

भौमादीनां बीजदेशान्तरयोरन्तरम् ।

मं.	बु	बृ.	शु	श.	ग्रह
०	०	०	०	०	अंश
१	१	१४	०	०	कला
१३	४०	५९	७	३	विकला
ऋ.	ध.	ध.	ध.	ऋ	ध.ऋ.

भाषावार्तिक—बुध शुक्र के शीघ्र में और मङ्गल-बृहस्पति-शनिके मध्यम में बीज देशान्तर को युक्त अथवा हीन (अन्तर धन होयतो युक्त, ऋण होयतो हीन) करने से बीज देशान्तर से संस्कारित ग्रह होते हैं ।

उदाहरण—मध्यम भौम ९४९।११।४९ में बीज देशान्तर के अंतर ऋण ०।१।१३ को घटाया तो संस्कारित भौम ९४९।१०। ३६ हुआ । (ऐसे ही बुध आदिक का भी संस्कार करै) ॥

बीज देशान्तर संस्कारित मध्यम-शीघ्र भौमादिग्रहाः ।

मं.	बु.शी.	बृ.	शु.शी.	श.	बु.शु.शी-मं.गु.श म.	ग्रह
९४९	७८०	६७२	४०७	५६	८३	अंश
१०	२८	३३	३२	५९	७	कला
३६	१५	३०	३३	५७	४३	विकला

पञ्चतारा स्पष्टविधिः—

अष्टेषु षट् नन्द चतुश्शताढ्याः
पृथग् ग्रहाः षड्भ गतैष्य केन्द्राः ।

षड्भादिकाः चक्रगणाद् विशोध्याः
शतेन लब्धाः स्फुटमत्र खण्डाः ॥ ४॥
रुद्रा नवेन्दु द्वियमा नवेन्दु-
रुद्राश्च भोग्योद्भव युक्त हीनाः ।
षड्भोन केन्द्रे खचरे ऋणं स्यात्
षड्भाधिके चेत् धनमत्र कार्य्यम् ॥५॥
घनाग नाग त्रय सूर्य निघ्नाद्
दशोद्धृतं हीन धनं च मध्ये ।
पृथक् स्वशीघ्रोनित केन्द्र खड्भात्
त्रिघ्नात् स्वशीघ्रोनयुतःस्फुटः स्यात् ॥६॥

सं० टी०--वीज देशान्तर संस्कारित भौमादि-ग्रहाः पृथक् स्थान द्वये स्थाप्या एकत्र, अष्टेषु षट् नन्द चतुश्शताढ्याः कर्तव्याः । भौमोऽष्टशताधिकः, बुधः पञ्चशताधिकः, गुरुः षट्शताधिकः, शुक्रो नवशताधिकः, शनिः चतुश्शताधिकः कार्यः, ते षड्भ गतैष्य केन्द्रा भवन्ति, चेत् षड्भाधिकाः चक्रगणाद् विशोध्याः, (द्वादशशताधिके द्वादशशतैः प्रयात्य शेषं गतगम्य केन्द्रो भवति) अत्र शतेन लब्धाः क्रमशः रुद्रा नवेन्दु द्वियमानवेन्दु रुद्राश्चेति खण्डा स्फुटम् लभ्यत

इत्यर्थः, लब्धाङ्क तुल्यगत खण्डको धार्यः तदग्रिम भोग्य खण्डकः स्थाप्यः भोग्योद्भव युक्तहीना भुक्त भोग्य मध्ये यो यस्मिन् पतति सः तस्मिन् पातनीयः शतभागशेषं खण्डान्तरेण संगुण्य शतेन भजेद् यल्लब्धं तद् यदि गतखण्डाद्भोग्य खण्डकोऽधिकः तदा भुक्त खण्डके योज्यं, यदा भुक्तखण्डाद् भोग्य खण्डको न्यूनः तदा भुक्त खण्डके न्यूनं कर्तव्यं, यदान्तिम खण्डको लभ्यते तदान्तिम खण्डैवान्तरो भवति, यदा शतभागात खण्डा न प्राप्यते तदा प्रथमखण्डैवान्तरो भवति। शतभाग शेषमन्तरेण संगुण्य शतेन भजेल्लब्धमशादिकं मन्दफलं भवति । तत्फलं घनागनागत्रय सूर्यनिघ्नाद् गुणिताद् दशोद्धृतं दशभिर्विभाजितं फलं षड्भोन केन्द्रे सति मध्ये मध्यमग्रहे ऋणं स्यात्, यत्र षड् भाधिके चेद् धनं कार्यम्, कृते सति मन्दस्फुटा ग्रहा भवन्ति । मन्दस्फुटा ग्रहाः पृथक् स्थान द्वये स्थाप्या एकत्र स्वशीघ्रेणोनाः (यदा न पतति तदा द्वादशशतं संयोज्य पातयेत) शेषं शीघ्र केन्द्रो भवति । अत्रापि मन्दफलवच्छीघ्रफलं ज्ञेयम्, यत्र शतभागेन पञ्चमखण्डको लभ्यते तत्र लब्धं पृथक् संस्थाप्य शेषं त्रिभिः संगुण्य शतेन हरेद् यल्लब्धं तत्पृथक् स्थापिते संयोज्य योजिते सति यावत्सङ्ख्यको भवति तावत्सङ्ख्यको भुक्त

खण्डके प्राप्यते, त्रिगुणिताच्छेपाच्छतभागेन न किञ्चित प्राप्यते तदा पञ्चमखण्डएव-मन्द स्पष्टग्रहाः शीघ्र फलेन संस्कृताः स्पष्टग्रहा भवन्ति। "भादिः कृतघ्ने" तिवक्षमाण पद्येन—अनुमानं भवतीत्यत्रशतभागेन राश्यादिकाः स्पष्टाग्रहाभवन्ति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

"यदान्त्य खण्डं पतितं तदाशु
स एव भोग्य क्रियते फलोनः।
न प्राप्यते यत्र तदा क्रमं च
तत्पूर्व खण्डोद्भवमभ्र युक्तम् ॥ १ ॥
ग्रहः स्वशीघ्रोनितके यदा स्या-
दृणे धने वा शर राशि सङ्ख्यः।
राशिं विनाङ्कां त्रिगुणी प्रकुर्य्यात
तदा ततः शीघ्रफलं प्रसाध्यम्" ॥ २ ॥

भा० टी०--मङ्गल--बुध--बृहस्पति--शुक्र--शनि का क्रम से ८०० । ५०० । ६०० । ९०० । ४०० मन्दोच्च हैं। संस्कारित मध्यम ग्रहको दो जगह धरके एक जगह मन्दोच्च युक्त करने से मन्द केन्द्र होता है, मन्द केन्द्र ६०० से अधिक हो तो १२०० में घटाने से जो शेष बचे वह मन्द केन्द्र होता है, और यदि १२०० से अधिक होय तो उसको १२०० स शेषि करने से शेष मन्द केन्द्र होता है, मन्द केन्द्र छः राशि से न्यून होय तो ऋण संज्ञक, छः राशि से अधिक होय तो धन संज्ञक कहाजाता है, (शीघ्र केन्द्र मे भी ऐसे ही जानै) मन्द केन्द्र में १०० का भाग देने से

क्रमशः ११ । १९ । २२ । १९ । ११ खण्डाङ्क होता है (अर्थात् एक लब्ध में ११ दो लब्ध में १९ तीन लब्ध में २२ चार लब्ध में १९ पांच लब्ध में ११) भुक्त खण्डा के आगे का अंक भोग्य खण्डा कहाता है, भुक्त भोग्य खण्डा के अन्तर (भुक्त खण्डा से भोग्य खण्डा अधिक होय तो धन, न्यून होय तो ऋण संज्ञक अंतर होता है उस) से शेष को गुणा कर १०० का भाग देने से जो फल मिलै उसको खण्डान्तर धन होय तो भुक्त खण्डा में युक्त करने से खण्डान्तर ऋण होय तो हीन करने से मन्द फल होता है। भौमादिकों के मन्द फल का क्रमशः १७।७।८।३।१२ यह गुणक है। मन्दफल को गुणक से गुणकर १० के भाग से मिले फल को मन्द केन्द्र छः राशि से न्यून होय तो दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यमग्रह में घटाने से और मन्द केन्द्र छः राशि से अधिक होय तो दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यमग्रह में युक्त करने से मन्दस्पष्ट होता है। मन्दस्पष्ट ग्रह दो जगह रक्खकर एक जगह शीघ्रोच्च घटाने से शीघ्र केन्द्र होता है (न घटै तो मन्द केन्द्र में १२०० युक्त करिके घटावै) वह शीघ्र केन्द्र छः राशि से न्यून होय तो उसी में, छः राशि से अधिक होता उसको १२०० में घटाकर उस में १०० का भाग देने से जो लब्ध मिलै उस लब्ध के तुल्य भुक्त खण्डा उसके आगे का भोग्य खण्डा होता है दोनों के अन्तर से शेष को गुणि १०० का भाग देने से जो फल मिलै उस को भुक्त खण्डा में अन्तर ऋण होय तो घटाने से और यदि अन्तर धन होय तो युक्त कर देने से शीघ्र फल होता है। यदि १०० के भाग से ५ वाँ खण्डा मिलै तो शेष को तीन से गुणि १०० के भाग से मिले फल को ५ में युक्त करने से

युक्त खण्डा होता है (आगे पूर्ववत् कर्म करने से शीघ्र फल होता है.) शीघ्र फल को केन्द्र छः राशि से न्यून होय तो दूसरे स्थान में धरे हुए मन्द स्पष्टग्रह में घटाने से यदि छः राशि से अधिक होय तो युक्त करने से संस्कृत स्पष्टग्रह होता है ("भादिःकृतघ्नः" इस श्लोक से अनुमान होता है कि संस्कृत स्पष्ट ग्रह में १०० का भाग देने से राश्यादि स्पष्ट ग्रह होता है) ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

भौमादीनां मन्दोच्चचक्रम् ।

मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
८००	५००	६००	९००	४००	मन्दोच्च

भौमादीनां मन्दकेन्द्र खण्डाङ्काः ।

०	१	२	३	४	५	संख्या
०	११	१९	२२	१९	११	खण्डा
११	८	३	३	८	११	अन्तर
ध.	ध.	ध.	ऋ	ऋ.	ऋ	ध.ऋ.

भौमादीनां गुणकाङ्काः ।

मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
१७	७	८	३	१२	गुणक

शीघ्रखण्डाङ्काः—

भौमस्य खाब्धी नगसप्त खेशा
देवेन्दु जातीन्द्वगगो नगार्थाः ।
बुधस्य भाग्नीषु कुसप्त षट्स्वराः
ततस्त्रिपञ्चाङ्गगुणा नवेन्दवः ॥७॥
गुरोर्नृपाः खाग्नि गजस्त्रयं च
षड्वह्नयो रामयमा नृपाङ्काः ।
भृगोर्द्विवेदाः कुगजाः खसूर्य्याः
व्योमाह नागेन्द्र भभूस्त्रिशैलाः ॥८॥
शनेर्दिशोऽब्दा कुयमा नवेन्दू
द्विभूमयो मङ्गलमब्धयश्च ।
बीजैस्सुगोप्यैरिह खेचरास्ते
सिद्धान्ततुल्यं खलु संस्कृतं स्यात् ॥९॥

सं.टी.–भौमस्य खाब्धी नगसप्त खेशा देवेन्दु जातीन्द्वगगो नगार्थाः खण्डाङ्काः, बुधस्य भाग्नीषु कुसप्त षट्स्वराः ततस्त्रिपञ्चाङ्गगुणा नवेन्दवः खण्डाकाः, गुरोर्जीवस्य नृपा खाग्नि गजस्त्रयं च षड्वह्नयो रामयमा नृपाङ्काः खण्डाङ्काः, भृगोश्शुक्रस्य द्विवेदाः कुगजाः खसूर्य्याः व्योमाह नागेन्द्र भभूस्त्रिशैलाः खण्डाङ्काः, शनेश्शनिश्च-

रस्य दिशोऽब्दा कुयमा नवेन्दु द्विभूमयो मङ्गलमब्धयश्च खण्डाङ्का भवन्ति, इह खेचरा ग्रहाः सुगोप्यैर्बीजैः संस्कृतं सिद्धान्त तुल्यं स्यात् ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

भा. टी.— मंगल का ४०।७७।११०।१३३।१२२।९७।५७ बुध का २७।५३।७१।७६।५३।३६।१९ बृहस्पति का १६।३०।३८।३६।३२।१६।९ शुक्र का ४२।८१।१२०।१५०।१४८।१२७।७२ शनिश्चर का १०।१७।२१।१९।१२।८।४ खण्डाङ्क है । यहां याने करणशास्त्र में गुप्त बीज से संस्कारितग्रह सिद्धान्त के तुल्य होते हैं ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

भौमशीघ्रखण्डाङ्कान्तरचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	संख्या
०	४०	७७	११०	१३३	१२२	९७	५७	खण्ड
४०	३७	३३	२३	११	२५	४०	५७	अंतर
ध.	ध.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध.ऋ.

बुधशीघ्रखण्डाङ्कान्तरचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	संख्या
०	२७	५३	७१	७६	५३	३६	१९	खण्डा
२७	२६	१८	५	२३	१७	१७	१९	अन्तर
ध.	ध.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध. ऋ.

गुरुशीघ्रखण्डाङ्कान्तरचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	संख्या
०	१६	३०	३८	३६	२३	१६	९	खण्डा
१६	१४	८	२	१३	७	७	९	अन्तर
ध.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध ऋ.

शुक्रशीघ्रखण्डान्तरचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	संख्या
०	४२	८१	१२०	१५०	१५८	१२७	७३	खण्डा
४२	३९	३९	३०	२	२१	५४	७३	अन्तर
ध.	ध.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध ऋ.

शनिशीघ्रखण्डान्तरचक्रम् ।

०	१	२	३	४	५	६	७	संख्या
०	१०	१७	२१	१९	१२	८	४	खण्डा
१०	७	४	२	७	४	४	४	अन्तर
ध.	ध.	ध.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ऋ.	ध. ऋ.

उदाहरण—मध्यम भौम ९४९।१०।३६ को दो स्थान में स्थापित किया, एक स्थान में मंगलका मन्दोच्च ८०० युत किया तो १७४९।१०।३६ हुए, इसमें १२०० का भाग दिया तो शेष मंगल का मन्दकेन्द्र

९४९।१०।३६ हुआ, इसमें १०० का भाग दिया तो फलगत खण्डा ५ वां मिला पाचवां गत खण्डा ११ है, भोग्य खण्डा के अभाव से एही अन्तर हुआ, भाग शेष ४९।१०।३६ को अन्तर ११ से गुणा तो ५४०।५६।३६ हुए इसमें १०० का भाग देने से फल ५।२४। ३४ मिले इसको भुक्त खण्डा ११ में घटाने से मन्दफल ५।३५।२६ हुआ, इसको १७ से गुणा तो ९५।२।२२। हुए इसमें १७ का भाग देने से लब्ध ९।३० १४ मिले इनको, केन्द्र छः राशि से न्यून है इससे दूसरे जगह रक्खे हुए मध्यम भौम २४९।१०।३६ में घटाया तो मन्द स्पष्ट भौम ९३९।४०।२२ हुआ। मन्दस्पष्ट भौम को दो जगह धरि एक जगह इस ९३९।४०।२२ में भौम के शीघ्र ८३।७।४३ को घटाया तो भौमका शीघ्र केन्द्र ८५६।३२।३९ हुआ, इसको १२०० से घटाया तो ३४३। २७।२१ हुए इसमे १०० का भाग दिया तो फल ३ मिला तीसरा भुक्त खंडा ११० भोग्य खंडा १३३ इन दोनों का अन्तर धन २३ हुआ इससे शेष ४३।२७।२१ को गुणा किया तो ९९९।२९।३ हुए इसमें १०० का भाग दिया तो फल ९।५९।४१ मिले इसको भुक्त खंडा ११० मे युत किया तो शीघ्र फल ११९। ५९। ४१ हुआ, शीघ्र केन्द्र छः राशि से अधिक है इससे दूसर जगहधरे हुए मन्दस्पष्ट ९३९।४०।२२ में शीघ्रफल ११९।५९ ४१ को युत किया तो स्पष्ट भौम १०५९।४०।३ हुआ। इसमें १०० का भाग देने से भौम की स्पष्ट राशि आदि १०। १८।६।२ हुई ॥

मध्यम बुध ८३।७।४३ को दोस्थान में स्थापित करके एक स्थान में बुध के मन्दोच्च ९०० को युत कियातो बुध का मन्द केन्द्र ९८३।७।४३ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से लब्ध ९ मिले तो पांचवां भुक्त खंडा ११ है भोग्य खंडा के अभाव से एही अन्तर हुआ इससे शेष ८३। ७। ४३ को गुणा तो ९१४ ।२४ । ९३ हुए इसमें १०० का भाग देने से फल ९। ८। २९। मिले इस को भुक्त खंडा ११ में घटाया तो मन्द फल १। ५१। ३१ हुआ, इस को ७ से गुणा

तो १२ । ५९ । २७ हुए इस में १० का भाग लेने से लब्ध १ । १७ । ५६ मिले इस लब्ध को, केन्द्र छः राशि से न्यून है अतः दूसरे स्थान में स्थापित मध्यम बुध ८३।७।४३ में घटाया तो मन्द स्पष्ट बुध ८१। ४९। ४७ हुआ। मन्द स्पष्ट को दो जगह धरि एक जगह इस ८१।४९।४७ में बुध के शीघ्र ७८०।२८। १९ को घटाना चाहिये सो नहीं घटता इस से मन्द स्पष्ट में १२०० को युत किया तो १२८१।४९।४७ हुए इस में शीघ्र घटाया तो बुध का शीघ्र केन्द्र ५०१ । २१ । ३२ हुआ इस में १०० का भाग देने से लब्ध ५ मिले शेष १ । २१ । ३२ को ३ से गुणा तो ४ । ४ । ३६ हुए इस में १०० का भाग दिया तो फल ० मिला इसके पूर्व फल ५ में युत करने से ५ ही रहे पाचवां भुक्त खण्डा ५३ भोग्य खण्डा ३६ है इन दोनों का अन्तर ऋण १७ हुआ, इससे शेष ४।४।३६ को गुणा कियातो ६९ । १८ । १२ हुए इस में १०० का भाग देने से फल ०।४१।३९ मिले इसको भुक्त खण्डा ५३ में घटायातो शीघ्र फल ५२ । १८ । २९ हुआ, केन्द्र छः राशि से न्यून है इस से दूसरे जगह धरे हुए मन्द स्पष्ट ८१।४९।४७ में शीघ्र फल ५२ ।१८।२५ को घटाया तो स्पष्ट बुध २९ ।३१।२२ हुआ, इसमें १००का भाग देने से बुध की स्पष्टराशि आदि० । ९। ०। ४९ हुई ॥

मध्यम गुरु ६७२।२३।३० को दो जगह धरि के एक जगह गुरुके मन्दोच्च ६०० को युत करने से १२७२।२३।३० हुए इसको १२०० से शेषित किया तो वृहस्पति का मन्द केन्द्र ७२।२३।३० हुआ, इसमें १०० का भाग दिया तो लब्ध ० मिला इससे भुक्त खण्डा का अभाव है भोग्य खंडा ११ है एही अन्तर भी है, इससे शेष ७२।२३।३० को गुणा कियातो ७९८।८।३० हुए इस में १०० का भाग देने से लब्ध ७।५८।५३ मिले भुक्त खंडा के अभाव से एही मन्द फल हुआ

इसको ८ से गुणा तो ६३।५१।४ हुए इस में १० का भाग देने से लब्ध ६ । २३ । ६ मिले इस को, केन्द्र छः राशि से न्यून होने से दूसरे जगह धरे हुए मध्यम गुरु ६७२ । ३३ । ३० में घटाया तो मन्द स्पष्ट वृहस्पति ६६६।१०।२४ हुआ, मन्द स्पष्ट को दो जगह धर॰ के एक जगह इस में वृहस्पति के शीघ्र ८३।७।४३ को घटाया तो वृहस्पति का शीघ्र केन्द्र ९८३।२।४१ हुआ, इस में १०० का भाग दिआ तो लब्ध ९ मिले शेष ८३ । २ । ४१ को ३ से गुणा तो २४९।८।३ हुए इस में १०० का भाग दिया तो लब्ध २ मिले इस को पूर्व के लब्ध ९ में युत किया तो ७ हुए सातवां भुक्त खण्डा ९ है भोग्य खण्डा के अभाव से एही अन्तर ऋण हुआ, इससे शेष ४९ । ८ । ३ को गुणा तो ४३२ । १२ । २७ हुए इस में १०० का भाग देने से फल ४ ।२५।१९ मिले इसको भुक्त खण्डा ९ में घटाया तो शीघ्र फल ४ । ३४ । ४१ हुआ, शीघ्र केन्द्र के छः राशि से न्यून होने से दूसरे जगह धरे हुए मन्द स्पष्ट ६६६ । १० । २४ में शीघ्र फल ४ । ३४ । ४१ को घटाया तो स्पष्ट गुरु ६६१ । ३५ । ४३ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से वृहस्पति की स्पष्टराशि आदि ६ । १८ । ३९ । २५ हुई ॥

मध्यम शुक्र ८३।७।४३ को दो जगह धर के एक जगह इस में शुक्र के मन्दोच्च ९०० को युत किया तो शुक्र का मन्द केन्द्र ९८३।७।४३ हुआ, इसको १२०० में घटाया तो २१६ । ५२ । १७ बचे इस में १०० का भाग दिया तो २ मिले दूसरा भुक्त खण्डा १९ भोग्य खंडा २२ इनदोनों के अन्तर धन ३ से शेष १६ । ५२ । १७ को गुणा किया तो ५० । ३६ । ५१ हुए इस में १०० का भाग देने से लब्ध ० । ३० । २२ मिले इस को भुक्त खण्डा १९ में युक्त किया तो मन्द फल १९। ३० । २२ हुआ, इसको ३ से गुणातो ५८ । ३१ । ६

हुए फिर इसमें १० का भाग दियातो लब्ध ९ । ११ । ७ मिले इसको, केन्द्र छः राशि से अधिक है इससे दूसरे जगह धरे हुए मध्यम शुक्र ८३ । ७ । ४३ में युत कियातो मन्द स्पष्ट शुक्र ८८। ५८ । ५० हुआ, मन्द स्पष्ट को दो जगह धरि के एक जगह इसमें शुक्र के शीघ्र ४०७।३२।३३ को घटाने के लिये १२०० मिला-यातो १२८८।५८।५० हुए इसमें शीघ्र घटाने से शेष शुक्र का शीघ्र केन्द्र ८८१ । २६ । १७ हुआ, इसको १२०० में घटाया तो ३१८। ३३ । ४३ बचे अब इसमें १०० का भाग दियातो लब्ध ३ मिले तीसरा भुक्त खंडा १२० है, और भोग्य खण्डा १५० है, इन दोनों का अन्तर धन ३० हुआ, इससे शेष १८ । ३३ । ४३ को गुणातो ५५६ । ५१ । ३० हुए इसमें १०० का भाग दिया तो लब्ध ५ । ३४ । ७ मिले इसको भुक्त खंडा १२० में मिलाया तो शीघ्र फल १२५ । ३४ । ७ हुआ, शीघ्र केन्द्र छः राशि से अधिक है अतः दूसरे जगह धरे हुए मन्द स्पष्ट ८८ । ५८ । ५० में शीघ्रफल १२५। ३४।७ को युत किया तो स्पष्ट शुक्र २१४।३२।५७ हुआ, इसमें १०० का भाग देने से शुक्र की स्पष्टराशि आदि २।१४।३२।५७ हुई ॥

मध्यम शनि ९६।५९।५७ को दो जगह धर के एक जगह इसमें शनि का मन्दोच्च ४०० को मिलाया तो शनि का मन्द केन्द्र ४९६। ५९।५७ हुआ, इसमें १०० का भाग दियातो फल ४ मिले चौथा भुक्त खंडा १९ है ओर भोग्य ११ है इन दोनों का अन्तर ऋण ८ हुआ, इससे शेष ९६ । ५९ । ५७ को गुणा तो ४९९ । ५९ । ३६ हुए इसमें १०० का भाग देने से लब्ध ४ । ३३ । ३६ मिले इस को भुक्त खंडा १९ में घटाने से मन्द फल १४।२६ । २४ हुआ, इसको १२ से गुणाता १७३।१६।४८ हुए इसमें १० का भाग देने से लब्ध १७।१९ ४१ मिले इस लब्धको, मन्द केन्द्र छः राशि से न्यून है अतः

दूसरे जगह में धरे हुए मध्यम शनि ५६।५९।९७ में बढ़ाया तो मन्द स्पष्ट शनि ३९।४०।१६ हुआ, इस मन्द स्पष्ट शनि को दो जगह धरि एक जगह इस में शनि के शीघ्र ८३।७।४३ को घटाने लगे सो नहीं घटता इससे मन्द स्पष्ट में १२०० को युत किया तो १२३९।४०।१६ हुए, इसमें शीघ्र ८३।७।४३ को घटाया तो शनि का शीघ्रकेन्द्र ११५६।३२।३३ हुआ, इसको १२०० में घटाया तो ४३ । २७ । २७ । हुए इसमें १०० का भाग दियातो लब्ध ० मिला अतः भुक्त खंडा के अभाव से भोग्य खण्डा १० ही अन्तर धन हुआ, इससे शेष ४३ । २७ । २७ को गुणातो ४३४।३४।३० हुए इस में १०० का भाग दिया तो फल ४।२०।४५ मिले भुक्त खंडांक अभावसे ४।२०।४५ ही शीघ्र फल हुआ, केन्द्र छः राशि से अधिक है अतःदूसरी जगह धरे हुए मन्द स्पष्ट शनि ३९ । ४० । १६ में शीघ्रफल ४ । २० । ४५ को युत किया तो स्पष्ट शनि ४४ । १ । १ हुआ इस में १०० का भाग देने से शनिश्चर की स्पष्ट राशि आदि ० । १३ । १२ । ३७ । हुई ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

राहु केतु स्पष्ट विधिः—

अहर्गणं वेदहतं दशाप्तम्
ध्रुवार्द्धयुक्तं भवतीह पातः ।
खखागनेत्रान्तरितो मुखं स्या-
च्चक्रार्द्धयुक्तं स्फुट राहु पुच्छः ॥ १० ॥

स० टी०—अहर्गणं दिनगणं वेद हतं चतुर्भिर्गुणितं दशाप्तं दशभिर्विभाजितं ध्रुवार्द्ध युक्तं ध्रुवार्द्धेन सहितं खखागनेत्रान्तरितो मुखमिह पातोराहुर्भवति, चक्रार्द्ध-

युक्तं राहुपुच्छः केतुः स्यात्, शराकृतिभिर्भक्तो राश्यादिको राहुः केतुश्च भवति ॥ १० ॥

"द्युवृन्दमष्टाहतमत्रदिग्भिर्लब्धं ध्रुवं युग्दलितं भचक्रात्।
संशोधिते राहुरयं प्रतीपाज्ञक्षत्रगो पातगतश्च तद्वत्" ॥१॥

भा०टी०—दिनगण को ४ से गुणि के उसमें १० का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसको पूर्व के ल्याये हुए ध्रुवा में युक्त करके उसको २७०० में घटाने से राहु होता है, उसमें २२५ का भाग देने से राहु की राशि आदिक होती हैं। राहु में चक्रार्द्ध १३५० को युक्त करने से केतु होता है । उसमें २२५ का भाग देने से केतु की राशि आदि होती हैं ॥ १० ॥

उदाहरण—दिनगण २७ को ४ से गुणा तो १०८ हुए इसमें १० का भाग देने से लब्ध १० । ४८ । ० मिले इसको राहु के ध्रुवा ५१ ३०।२५।३९ के आधे २५६५।१२।४९ में युत किया तो २५७६।०।४९ हुए इसको २७०० में घटाया तो राहु १२३।५९।११ हुआ, इसमें २२५ का भाग देने से राहु की राशि आदि ०।१६।३९।४७ हुई, राहु १२३। ५९।११ में चक्रार्द्ध १३५० को युक्त किया तो केतु १४७३।५९।११ हुआ, इसमें भी २२५ का भाग देने से केतु की स्पष्ट राशि आदि ६।१६।२९।४७ हुई ॥ १० ॥

राहु दिनगण सारणीयम् । एकाद्यङ्कानि (एकाई)

१	२	३	४	५	६	७	८	९	दिनगण
०	०	१	१	२	२	२	३	३	अंश
२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	कला
०	०	०	०	०	०	०	०	०	विकला

दशाद्यङ्कानि (दहाई) ।

१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	दिन गण
४	८	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	अंश
०	०	०	०	०	०	०	०	०	कला
०	०	०	०	०	०	०	०	०	विक०

शताद्यङ्कानि (सैकड़ा) ।

१००	२००	३००	दिनगण
४०	८०	१२०	अंश
०	०	०	कला
०	०	०	विकला

ग्रहाणांनक्षत्रगताद्राशिगतकरणराशिगतान्नक्षत्रगतकरण विधिः—

भादिः कृतघ्नोऽङ्कहृतो ग्रहस्तु
राश्यादिरङ्कैर्गुणितः कृताप्तः ।
भादिर्भवेद् भादिषु राशिहारः
शराकृती राशिमुखे शतञ्च ॥११॥

सं० टी०—भादिर्नक्षत्रादिः कृतघ्नोऽङ्कहृतो नवभिर्विभाजितो राश्यादिको भवेत्, एवं राश्यादिको ग्रहोऽङ्कैर्नवभिर्गुणितः कृताप्तश्चतुर्भिर्विभाजितो भादिर्नक्षत्रादि गतग्रहो भवेत् तु भादिषु नक्षत्रादिषु शराकृती राशिहारः, राशिमुखे शतञ्च—अर्थात् नक्षत्रादिषु

शरनेत्रकैर्विभाजिते राश्यादिको भवति, राश्यादिषु शतेन विभाजिते राश्यादिको भवतीति ॥ ११ ॥

भा०टी०—नक्षत्र गत ग्रह की स्पष्टी को ४ से गुणि के उसमें नव का भाग देने से फल राशिगत ग्रह होता है, और राशि गत ग्रह को ९ से गुणिके उसमें ४ का भाग देने से फल नक्षत्र गत ग्रह होता है। नक्षत्र गत ग्रह में २२५ का भाग देने से और राशि गत ग्रह में १०० का भाग देने से ग्रहों की स्पष्ट राशि आदिक होती हैं (पूर्व की स्पष्टी से कुछ न्यूनाधिक अवश्यमेव होता है) ॥ ११ ॥

उदाहरण—स्फुट सूर्य २००।४४।४९ को ४ से गुणा किया तो ८०२।५९।० हुए इस में ९ का भाग देने से ८९।१३।१२।२० हुए फिर इसमें १०० का भाग देने से लब्ध स्पष्ट सूर्य की राशि आदि ० । २६ । ४९ । ५६ । ० हुई, स्फुट भौम १०५९।४०।३ को ९ से गुणा किया तो ९५३७ । ० । २७ हुए इस में ४ का भाग देने से लब्ध २३८४ । १९ । ७ मिले इस में फिर २२५ का भाग दिया तो लब्ध स्पष्ट भौम की राशि आदि १० । १७ । ५६ । ० हुई, ऐसे ही बुध आदि को भी स्पष्ट करै ॥ ११ ॥

मध्यम गतिः—

रवेः स्वरा खं नवतिः खमिन्दोः
केन्द्रे शतं भूस्तमसः खसिद्धौ ।
पादोनद्व्याम घनौ खमेघौ
स्याब्दौ खसप्तावनिजादिकानाम् ॥ १२॥

सं०टी०—रवेः सूर्यस्य स्वराखं, इन्दोश्चन्द्रस्य नवतिः खं, केन्द्रे शतं भूः, तमसः राहोः खसिद्धौ,

अवनिजादिकानां भौमादीनां पादोनदृग्, रामघनौ, खमेघौ त्र्याब्दौ खसतौ मध्यमा भुक्तिरस्ति ॥१२॥

भा०टी०—सूर्य की ७ । ० चन्द्रमा की ९० । ० केन्द्र की १०० । १ राहु की ०।२४ मंगल की १ । ४५ बुध की ३ । १७ गुरु की ० । १७ शुक्र की ३ । १७ शनि की ०।७ मध्यम गती है ॥ १२ ॥

मध्यम भुक्ति चक्रम् ।

सू.	चं.	चं.के.	रा.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
७	९०	१००	०	१	३	०	३	०
०	०	१	२४	४५	१७	१७	१७	७

शीघ्र गतिः—

त्रयोघना विश्वइभानलौ च
त्रयोघनाः पञ्च नखा गुणाब्दाः ।
कुजादि शीघ्रस्य च भुक्तयः स्यु-
रुक्ताः स्मृतीशैर्गणित प्रवीणैः ॥१३॥

सं० टी०-स्मृतीशैर्गणित प्रवीणैः कुजादि मङ्गलादि शीघ्रस्य भुक्तयश्च त्रयोघना, विश्वइभानलौ, त्रयोघना, पञ्चनखा, गुणाब्दाः स्युरित्युक्ताः कथिताः ॥१३॥

"शनैश्चराचार्य महासुतानां शैन्घ्रागतिः स्यात्‌त्रिघनाकलाद्याः विश्वाष्टिरामाशशिजस्य शैन्घ्री शुक्रस्य शैन्घ्री शरपूर्णदस्रा" १॥

भा०टी०—धर्म शास्त्र के ज्ञाता गणित में कुशल ऐसे

विद्वान् लोग मङ्गल की ३ । १७ बुध की १३ । ३८ बृहस्पति की ३ । १७ शुक्र की ५ । २० शनिश्वर की ३ । १७ शीघ्र गति कहा है ॥ १३ ॥

शीघ्र गति चक्रम् ।

म.	बु	बृ	शु	श.
३	१३	३	५	३
१७	३८	१७	२०	१७

मन्द गति विधिः—

घनागनागत्रिरविघ्न भुक्ति-
भोग्याहताया खशताप्तलब्धम् ।
ऊने तु खण्डा सहितान्यथोना
मन्द स्फुटाभुक्तिरियं कुजादेः॥१४॥

सं० टी०—भौमादि भुक्तिः घनागनागत्रिरविघ्न भोग्यहताया खशताप्तलब्धं तु खण्डा ऊने ऋणे सहिता, अन्यथा ऊना इयं कुजादेर्मन्द भुक्तिः स्फुटा ॥ १४ ॥

भा० टी०—भौमादि ग्रहों के मध्यम गति को क्रमशः १७।७।८।३।१२ से गुणा करके फिर मन्द खण्डा के अन्तर से गुणा कर उसमें १००० के भाग से जो लब्ध मिलै उसको खण्डा का अन्तर ऋण होय तो मध्यम गति में युत करने से और खंडा का अन्तर धन होय तो मध्यम गति में हीन करने से मन्द स्पष्ट गति होती है ॥ १४ ॥

उदाहरण—मङ्गल का मध्यमा भुक्ति १ । ४५ को १७ से गुणा तो २९ । ४५ हुई, ऐसे ही बुध आदि की गति गुणक से गुण

ने पर बुध की २२ । ५९ बृहस्पति की २ । १६ शुक्र की ९ । ९१ शनैश्चर की १ । २४ हुई । मंगल की मध्यमा भुक्ति गुणक से गुण ने पर २९ । ४९ हुई है, इसको मन्द खण्डान्तर ऋण ११ से गुणा तो ३२७ । १९ हुए इसमें १००० का भाग देने से लब्ध ० । २० मिले इसको खण्डान्तर ऋण है इससे मध्यम गति १ । ४९ में युत किया तो मंगल की मन्द गति २ । ४ । ३८ हुई । ऐसे ही बुध की ३ । ३२ । १० बृहस्पति की ० । १९ । ३० शुक्र की २ । १९ । १४ शनिश्चर की ० । ७ । ४० मन्द स्पष्ट गति हुई है ॥ १४ ॥

भौमादीनां मन्दस्पष्टगतिः ।

११	८	३	३	८	११	मन्दखण्डान्तर
१ २५ २१ ५४	१ ३० ४३ १२	१ ३९ ३८ ४२	१ ५० २१ १८	१ ५९ १६ ४८	२ ४ ३८ ६	भौम
३ १ ५९ ५१ ३६	३ ५ ५८ ४ ४८	३ १२ ५१ ४६ ४८	३ २१ ८ १३ १२	३ २८ १ ५५ १२	३ ३२ १० ८ २४	बुध
० १५ ३० २४ ०	० १५ [illegible] ४३ १२	० १६ ३५ ३१ १२	० १७ २४ २८ ४८	० १८ ५ १६ ४८	० १८ २९ ३६ ०	गुरु
३ १० २९ ५६ २४	३ १२ १६ १९ १२	३ १५ १३ ३७ १२	३ १८ ४६ २२ ४८	३ २१ ४३ ४० ४८	३ २३ ३० ३ ३६	शुक्र
० ६ ४ ३३ ३६	० ६ १९ ४० ४८	० ६ ४४ ५२ ४८	० ७ १५ ७ १२	० ७ ४० १९ १२	० ७ ५५ २६ २४	शनि

स्पष्ट गति विधिः-

मन्द स्फुटा शीघ्र गतौ विशोध्या
प्राग्वत् कृता भोग्यगुणाच्छताप्ता ।
वह्वल्प भोग्य स्वमृणं यथा स्याद्
वक्रागतिस्याद् विपरीतशुद्धा॥१५॥

सं० टी०—शीघ्र गतौ मन्द स्फुटा विशोध्या शीघ्र केन्द्र गतिर्भवति शीघ्र केन्द्र गतौ प्राग्वत् पूर्ववद् भोग्य गुणाच्छताप्ता वहूवल्प भोग्यं स्वमृणं स्यात् शीघ्र केन्द्र खण्डान्तरं धनं चेत्तदा प्राप्त फलं मन्द गतौ धनं, ऋणं चेदृणं कर्तव्यम् । यदा वक्र गतिः स्यात् तदाविपरीत शोध्या वक्रीग्रहपर घटीसम्भवं ऋणं कार्यं पूर्व घटी सम्भवं धनं कार्यं गतिः स्यात् (स्पष्टभुक्तिरंशादिकाष्टादशभिर्गुणिता कलादिका भवति, नक्षत्रानयनार्थं राश्यादिकमष्टादशभिस्सङ्गुण्याष्टशतैर्हरेल्लब्धमश्विन्यादि नक्षत्राणि भवन्ति शेषं शतद्वयेन हरेल्लब्धनक्षत्र गत पादाः शेषं गतगम्यं प्रकृत्य त्रिंशांशकराशेः कलादिकया स्फुटभुक्त्या भजेल्लब्धानि गतगम्य दिनसमूहान्यवशिष्टं षष्ट्यासङ्गुण्य तथैवाप्ता घटिकादिका भवन्ति) ॥ १५ ॥

*"इष्टनाडीपरापूर्वा भुक्तिघ्ना षष्टिभाजिना ।
लब्धांशादि धनोनं स्युर्ग्रहास्तत्कालिकाः स्फुटाः" ॥१॥

भा० टी०—स्पष्ट मन्द गति को शीघ्र गति में घटाने से शीघ्रकेन्द्र गति होती है, इस शीघ्रकेन्द्र गति को खण्डा के अन्तर से गुणि के १०० का भाग देने से जो फल मिलै उसको अंतर धन होय तो मन्द भुक्ति में युक्त करने से ऋण होय तो हीन करने से स्पष्टगति होती है। वक्री ग्रह होय तो फल में ही मन्द गति को घटाने से स्पष्ट गति होती है (शीघ्र केन्द्र में ५, ६, ७, यह खण्डा मिलने पर वक्री पर ध्यान रक्खै और जहां शीघ्र-केन्द्र के पंचमादि राशि होइ वहां केन्द्रगति को ३ से गुणा करके तब उसे शीघ्र खंडान्तर से गुणा करके भाजक का भाग देवै) ॥ १५ ॥

उदाहरण—मंगल की शीघ्रगति ३ । १७ में मन्दस्पष्ट गति २ । ४ । ३८ को घटाया तो मङ्गल की शीघ्र केन्द्रगति १।१२।२२ हुई, इसको खंडा के अन्तर ऋण २३ से गुणा किया तो २७।४४।२६ हुए इसमें १०० का भाग देने से शीघ्रफल ०।१६।३९ मिले, इसको खंडा के अन्तर धन होने से मन्दगति २ । ४ । ३८ में मिलाया तो मङ्गल की स्पष्टगति २ । २१ । १७ हुई । बुध की शीघ्रकेन्द्र गति १० । ५ । ५० गुरु की ३ । १ । ३० शुक्रकी २ । ४ । ४६ शनि की ३ । ९ । २० शीघ्रकेन्द्र गति हुई । बुध का शीघ्रफल

---

* श्रीसंवत् १९६८ शाका १८३३ वैशाख सुदि १३ वार बृहस्पति के सूर्योदय से इष्ट ५ । ११ पर स्पष्ट करना है, इष्ट ५ । ११ को सूर्य की गति ५८ । १४ से गुणा करके उसमें ६० का भाग देने से फल ०।५।१।१९ मिले, इसको स्पष्ट सूर्य ०।२६।५१।५६।० में युत कियातो तत्कालिक सूर्य ०।२६।५६।५।१९ हुआ ॥

१ । ४२ । ५९ गुरु का ०। १६ । २० शुक्र का ० । ३७ । २६ शनि का ० । १८ । ५६ शीघ्रफल हुआ । बुध की स्पष्टगति १ । ३६ । ४८ गुरु की ० । ३३ । ३० । शुक्र की १ । ५२।४० शनि की ० । २६ । ३६ हुई ॥१५॥

भौमादीनां शीघ्रकेन्द्रगतिः ।

११ घ.	८ घ.	३ घ.	३ ऋ.	८ ऋ.	११ ऋ.	मन्दखण्डान्तर
१ ५१ ३८ ६	१ ४६ १६ ४८	१ ३७ २१ १८	१ २६ ३८ ४२	१ १७ ४३ १२	१ १२ २१ ५४	भौम
१० ३६ १० ८ २४	१० ३२ १ ५५ १२	१० २५ ८ १३ १२	१० १६ ५१ ४६ ४८	१० ९ ५८ ४ ४८	१० ५ ४९ ५१ ३६	बुध
३ १ २९ ३६ ०	३ १ ५ १६ ४८	३ ० २४ २८ ४८	२ ५९ ३५ ३१ १२	२ ५८ ५४ ४३ १२	२ ५८ ३० २४ ०	बृहस्पति
२ ९ ३० ३ ३६	२ ७ ४३ ४० ४८	२ ४ ४६ २२ ४८	२ १ १३ ३७ १२	१ ५८ १६ १९ १२	१ ५६ २९ ५६ २४	शुक्र
३ १० ५५ २६ २४	३ १० ४० १९ १२	३ १० १५ ७ १२	३ ९ ४४ ५२ ४८	३ ९ १९ ४० ४८	३ ९ ४ ३३ ३६	शनि

भौमस्पष्टगतिः ।

मंद खंडांतर	४० घ.	३७घ.	३३घ	२३घ.	११ऋ.	२५ऋ	४० ऋ.	५७ऋ.	शीघ्रखडांतर
	२	२	२	१	१	०	०	१	
	१०	६	२	५१	१३	१	४७	४५	
	१	४०	१२	२	४५	३८	३५	३१	
११	८	६	१६	२७	७	२०	४९	५१	गति
	२४	४९	२२	४६	३२	३०	१२	३	
घ.	०	१२	४८	४८	२४	०	०	३६	
	२	२	२	१	१	०	०	१	
	१३	१०	५	५५	१२	११	३६	३१	
	१७	२	४७	९	१	०	४८	१	
८	५५	३६	३२	४७	४५	३६	५७	७	गति
	१२	५४	३८	२	७	०	३६	४०	
घ.	०	०	२४	२४	१२	०	०	४८	
	२	२	२	२	१	०	०	०	
	१८	१५	११	२	२८	२६	१६	६	
	३५	३९	४६	२	५६	५५	१०	३९	
३	१३	५८	२०	११	९	४२	५१	५५	गति
	१२	५१	४४	५६	५	३०	३६	२२	
घ.	०	३६	२४	२४	४२	०	०	१८	
	२	२	२	२	१	०	०	०	
	२५	२२	१८	१०	४०	४५	६	३७	
	०	२४	५५	१७	५०	२१	३२	४८	
३	४६	४९	४	०	२	१६	५२	२८	गति
	४८	८	१५	३	३४	३०	३०	४३	
ऋ.	०	२४	३६	३६	४८	०	०	१२	
	२	२	२	२	१	१	०	०	
	३०	२८	२४	१७	५०	०	२६	१३	
	२२	१	५५	९	४३	५९	०	३७	
८	४	५०	३९	२०	५०	२४	५७	१६	गति
	४८	२	२१	९	५२	०	३६	१९	
ऋ.	०	२४	३६	३६	४८	०	०	१२	
	२	२	२	२	१	१	०	०	
	३३	३१	२८	२१	५६	१०	३७	०	
	३४	२४	३०	१६	४०	२१	४७	५३	
११	५१	३६	१९	४४	२९	४०	४९	२७	गति
	३६	१०	४	१३	२७	३०	१२	३	
ऋ०	०	४८	४८	१२	३६	०	०	३६	

बुधस्पष्टगतिः ।

मंदखंडांतर	२७घ.	२६ घ.	१८ घ.	५ घ.	२३ऋ.	१७ ऋ.	१७ऋ.	१९ ऋ.	शीघ्रखण्डान्तर
	५	५	४	३	०	२	२	३	
	५३	४७	५६	३३	३५	२२	२२	०	
११	३५	१४	२०	३८	३०	३६	३६	५१	
	४७	६	२९	२२	४३	४१	४१	७	गति
	५२	३७	१०	१	३५	४	४	११	
घ.	४	२६	५५	१२	५२	२	२	५६	
	४८	२४	१२	०	४८	२४	२४	४८	
	५	५	४	३	०	२	२	२	
	५६	५०	५९	३६	४१	१६	१६	५४	
८	३६	१७	४४	४०	३०	३२	३२	१७	
	५९	४५	१	१०	२	५	५	२७	गति
	५४	५७	३२	३३	१८	५७	५७	१५	
घ.	१४	७	९	३६	१४	७	५	५०	
	२४	१२	३६	०	२४	१२	१२	२४	
	६	५	५	३	०	२	२	२	
	१	५५	५	४४	४९	५	५	३७	
३	३८	२३	२३	७	४	५७	५७	२७	
	५९	५५	१५	११	५३	२४	२४	५३	गति
	५७	१	३४	२७	२१	४	४	१९	
घ.	५०	५५	३३	३६	५०	५५	५५	२६	
	२४	१२	३६	०	२४	१२	१२	२४	
	६	६	५	३	१	१	१	२	
	७	१	१२	५१	५९	५३	५३	३०	
३	४१	३१	१०	५८	१५	२७	२७	२८	
	२४	३२	२०	४८	३०	४६	४६	२९	गति
	२	५८	२५	३२	३८	५८	५८	४०	
ऋ.	९	३३	२६	२४	९	४	४	३३	
	३६	३६	२४	०	३६	४८	४८	३६	
	६	६	५	३	१	१	१	१	
	११	६	१७	५८	७	४३	४३	१९	
८	३१	३७	४९	३१	४४	३	३	२	
	२४	२५	३४	४९	२१	६	६	५९	गति
	५	१४	२७	२६	४१	२	२	८	
ऋ.	४५	५२	५०	२४	४५	५२	५२	९	
	३६	४८	२४	०	३६	४८	४८	३६	

मंदखंडांतर	२७घ.	२६घ.	१८घ.	५घ.	३ऋ.	१७ऋ.	१७ऋ.	१०ऋ.	शी.खं.अन्त
	६	६	५	४	१	१	१	२	
	१५	९	२१	२	१२	३६	३६	१३	
११	४५	४१	१३	२७	५९	४८	४८	९	
	७	६	६	३७	४०	१७	१७	१६	गति
	५९	१३	५३	५८	१९	१८	१८	५८	
ऋ.	३१	३३	१६	४८	५५	५७	५७	४३	
	१२	३६	४८	०	१२	०	०	१२	

गुरुस्पष्टगतिः ।

मंदखंडांतर	१६घ.	१४घ	८घ.	२ऋ.	१३ऋ	७ऋ	७ऋ	९ऋ	शीघ्रखण्डान्तर
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	४४	४०	३०	१३	८	२२	२२	३३	
११	३२	५४	१	४	५	३६	३६	२९	
	४४	५६	३४	३६	१४	२४	२४	४७	गति
घ.	९	३८	४	२८	५७	५७	५७	३१	
	३६	२४	४८	४८	४८	३६	३६	१२	
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	४४	४१	३०	१२	११	२२	२२	३२	
८	५३	१५	२५	१७	१५	६	६	५९	
	९	५१	५२	२४	४	५९	५९	५४	गति
	५३	३३	४०	५१	१९	१९	१९	२०	
घ.	१६	७	४८	५०	१२	४०	४०	१२	
	४८	१२	०	२४	०	४८	४८	३६	
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	४५	४१	३१	१२	२१	२१	२१	३२	
३	२९	५०	१	५९	१४	१४	१४	७	
	२६	५६	२८	१	३७	३७	३७	५	गति
	१२	४९	४२	४९	२	२	२	२२	
घ.	२८	५५	१४	२६	५२	५२	५२	३	
	४८	१२	२४	२४	४८	४८	४८	३६	
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	४६	४२	३१	१३	५	२०	२०	३१	
३	८	३३	४६	४८	५६	१९	१९	४	
	३३	३	३१	५८	२०	३२	३२	५४	गति
	४७	१०	१७	१०	१५	४५	४५	३७	
ऋ.	३१	४	४५	३३	२१	७	७	६	
	१२	४८	३६	३६	३६	१२	१२	२४	

मंदखंडांतर	१६घ.	१४घ.	८घ.	२ऋ.	१३ऋ.	७ऋ.	७ऋ	९ऋ.	शी खं. अन्त-
८ ऋ.	० ४७ ४२ ५० ६ ४३ १२	० ४३ ८ ८ २६ ५२ ४८	० ३२ २४ ३ २७ २१ ३६	० १४ ३० ३५ ८ ९ ३६	० ५ १० १४ ० ५७ ३६	० १९ २९ ० ४० १९ १२	० १९ २९ ० ४० १९ १२	० ३० १३ ५ ३९ ५० २४	गति
११ ऋ.	० ४७ ३ १७ १४ २४	० ४३ २९ ४ ४५ ३६	० ३२ ४६ २६ ३७ १२	० १४ ५५ २३ ३१ १२	० ४ ४२ ४६ ३१ १२	० १८ ५९ ३७ ८ २४	० १८ ५९ ३७ ८ २४	० २९ ४२ १४ ३४ ४८	गति

शुक्रस्पष्टगति ।

मंदखंडांतर	४२घ.	३९घ.	३९घ	३०घ.	२ऋ	२१ऋ	५४ऋ	७३ऋ	शी. खं. अन्त
११ घ.	४ ४ ५३ २१ ५४ ७ १२	४ ० ५४ १५ ४८ १४ २४	४ ० ५४ १५ ४८ १४ २४	३ ४९ २० ५७ ० २८ ४८	३ ७ ५४ ३२ १९ ४० ४८	१ ४८ ५४ ४८ ७ ५२ १२	० १९ १७ ३३ २५ ५५ १२	१ ३३ ६ २९ २९ २ २४	गति
८ घ.	४ ५ ५४ ४१ ४४ ९ ३६	४ २ ५ ८ १७ २५ १२	४ २ ५ ८ १७ २५ १२	३ ५० ३५ २५ २६ ६ ०	३ ९ ४२ २ १५ २ २४	१ ५१ ४८ १२ ५ ४५ ३६	० १४ ३८ ५० २९ ५१ ३६	१ २७ २६ ४८ २१ ७ १२	गति
३ घ.	४ ७ ३८ १ २६ ५७ ३६	४ ३ ५२ १८ २९ ३१ १२	४ ३ ५२ १८ २९ ३१ १२	३ ५२ ३९ ३२ २ २४ ०	३ १२ ४३ ५३ ३२ ३८ ३४	१ ५६ ३७ १२ २ ९ ३६	० ६ ५४ १८ ५६ ९ ३६	१ १८ १ ३३ ७ ५५ १२	गति

मंदखंडांतर	४२घ.	३९घ.	३९घ.	३०घ.	२ऋ.	२१ऋ.	४ऋ.	७३ऋ	शीखं.अन्त
	४	४	४	३	३	२	०	०	
	९	६	६	५५	१६	२	२	६	
३	४१	३	३	८	२०	२४	२३	४२	
	१८	५	५	२८	५४	९	६	५०	गति
	१	३०	३०	५७	२७	३३	५६	५२	
ऋ.	२६	२८	२८	३६	२१	५०	९	४	
	२४	४८	४८	०	३६	२४	३६	४८	
	४	४	४	३	३	२	०	०	
	१२	७	७	५७	१९	५	१०	४७	
८	१८	५१	५१	१२	२१	५१	७	१७	
	८	१४	१४	३४	४५	५९	१९	१५	गति
	३	४१	४१	२५	१२	५४	३५	३८	
ऋ.	५०	१६	१६	३६	५७	१४	४५	५२	
	२४	४८	४८	०	३६	२४	३६	४८	
	४	४	४	३	३	२	०	०	
	१२	८	८	५८	२२	१०	१४	४८	
११	२४	५६	५६	२७	१०	६	४६	३६	
	५०	८	८	२	१५	२३	२१	५४	गति
	३	११	११	३१	४०	५५	२६	३०	
ऋ.	१६	४५	४५	१२	१९	४	५२	५७	
	४८	३६	३६	०	१२	४८	१२	३६	

शनिस्पष्टगतिः।

मंदखंडांतर	१०घ.	७घ.	४घ.	२ऋ.	७ऋ	४ऋ.	४ऋ	४ऋ	शीघ्रखण्डान्तर
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२५	१९	१३	२	७	१६	१६	१६	
	१०	२६	४२	१५	१७	५०	५०	५०	
११	६	२६	४६	२७	१९	५	५	५	गति
	१४	२६	३९	४	१३	३४	३४	३४	
घ.	२४	५२	२१	१९	७	४	४	४	
	०	४८	३६	१२	१२	४८	४८	४८	
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२५	१९	१३	२	७	१६	१६	१६	
	२३	४०	५७	३०	१	३३	३३	३३	गति
८	४९	३०	१७	५२	८	९	९	९	
	४३	८	३४	१४	४२	३०	३०	३०	
घ.	१२	३८	४	५७	३८	१४	१४	१४	
	०	२४	४८	३६	२४	२४	२४	२४	

मंदखंडांतर	१०घ.	७घ	४घ.	२ऋ	६ऋ	४ऋ.	४ऋ.	४ऋ	शी खं. अन्त
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२५	२०	१७	२	६	२५	२५	२५	
	४६	३	२१	५६	३४	४	४	४	गति
३	२३	५६	३०	३४	१०	५९	५९	५९	
	३१	२१	४	४१	४५	२	२	२	
घ.	१२	५०	४८	३८	५०	२४	२४	२४	
	०	२४	०	२४	२४	०	०	०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२६	२०	१४	३	६	१५	१५	१५	
	१६	३३	५१	२६	३	५	५	५	
३	५	४८	३०	५५	३३	२	२	२	गति
	४१	८	३५	३०	४४	५९	५९	५९	
	१६	२९	४२	८	३९	८	८	८	
ऋ.	४८	४५	४३	३८	४५	९	९	९	
	०	३६	१२	२४	३६	३६	३६	३६	
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२६	२०	१५	३	५	१५	१५	१५	
	३६	५५	१४	५३	३४	२	२	२	गति
८	१७	२९	४१	७	५१	४६	४६	४६	
	१६	५१	२५	३५	२७	३३	३३	३३	
ऋ.	४८	२१	५५	२	२१	४५	४५	४५	
	०	३६	१२	२४	३६	३६	३६	३६	
	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२६	२१	१५	४	५	१४	१४	१४	
	४९	९	२९	८	१८	४५	४५	४५	गति
११	५३	३३	१३	३२	४०	५४	५४	५४	
	४५	३२	२०	५५	४५	१६	१६	१६	
ऋ.	३६	७	३८	४०	७	५५	५५	५५	
	०	१२	२४	४८	१२	१२	१२	१२	

भा. वा.—जिस ग्रहका जो मन्द खंडान्तर होय उसके समान मन्द स्पष्टगति के चक्र में देखने से मन्द स्पष्टगति मिलैगी, और शीघ्रकेन्द्र गति के चक्र में देखने से शीघ्रकेन्द्र गति मिलैगी । मन्द खंडान्तर और शीघ्र खंडान्तर इन दोनों का जहां समानता पावै वहां स्पष्टगति के चक्र में देखने से स्पष्ट

गति मिलैगी (अन्तर धन है, या ऋण इसका भी स्मरण रक्खे) स्पष्टगति को १८ से गुणने से कलादि स्पष्ट गति होती है ॥

उदाहरण–मंगल का मन्द खंडान्तर ऋण ११ है, इसके समान मन्दस्पष्ट भुक्ति चक्र में देखने से मन्दस्पष्ट गति २।४।२८।० मिली, और इस अन्तर के समान शीघ्रकेन्द्र गति के चक्र में देखने से शीघ्र केन्द्र गति १।१२।२१।२४ हुई, मन्द खंडांतर ११ है, और शीघ्र खंडांतर धन २२ है, इन दोनों के समान कोष्ठ में देखने से स्पष्टगति २।२१।१६।४४।१३।१२ मिली, इसको १८ से गुणा करने पर कलादि स्पष्ट गति ४२।२२।१।१९।५७।३६ हुई ॥

सूर्यादिस्पष्टग्रह चक्रम् ।

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रह
०	६	१०	०	६	२	०	१	७	राशि
२६	१	१८	९	१८	४	१३	१६	१६	अंश
५१	३३	१	०	३९	३१	१२	३९	३९	कला
५६	११	१	४९	२५	४६	३७	४७	४७	विकला
०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिविक.
५८	७-२	४२	२९	१०	६९	७	३	३	कलादि
१४	०	२३	२	३	७	५८	१०	१०	गति
२४	०	१	२४	०	५१	५३	४५	४५	

भौमादीनां चक्रादपरचक्रार्द्धमाससंख्या च वक्रमार्ग दिनादि ज्ञानविषयः—

विश्वाश्विगन्धर्वदशाङ्कमासै-
श्चक्रार्द्धचक्रं क्षितिजादिपूह्यम् ।
षड्वह्नयो द्वादश तर्कवाण
वेदाश्विनः सप्तरसाः क्रमेण ॥१६॥

स्वशीघ्रकेन्द्रस्य च मण्डलार्द्धात्
पूर्वापरावक्रगताश्च राशेः ।
षष्ट्यष्टि भूपाङ्क गुणाःकुदस्रा
चक्रादितःप्राक्परतोऽस्तगःस्यात्॥१७॥
एवं ज्ञभृग्वो वसुपञ्चषड्भात्
प्रागूनखेटः परतोधिकोऽर्कात्॥१८॥

सं०टी०—क्षितिजादिषु विश्वाश्विगन्धर्वं दशाङ्कमासैश्चक्रार्द्धं चक्रमूह्यम्, चक्रं द्वादशशतानि तदर्धं चक्रार्द्धं भौमस्य शीघ्रकेन्द्रो यदा पूर्णचक्रं भवति तस्मात् त्रयोदसे मासे चक्रार्द्धं ज्ञातव्यम्—एवं बुधस्य २ गुरोः ७ भृगोः १० शनेः ६ मासे चक्रार्द्धं भवति, स्वशीघ्रकेन्द्रस्यच मण्डलार्द्धात्पूर्वापरा षड्वन्हयो द्वादशतर्क वाणवेदाश्विनः सप्तरसाः क्रमेण वक्रगवासरा भवन्ति भौमस्य यस्मिन् दिनेषट्शतं शीघ्रकेन्द्रं भवति तद्दिवसात् प्राग् षट्त्रिंशद्दिनैर्भौमो वक्र गातिर्भवति, चक्रात् परतः षट्त्रिंशद्दिनैर्मार्गगा भवति, एतेन भौमस्य वक्रदिनानि ७२ बुधस्य २४ गुरोः ११२ शुक्रस्य ४८ शनेः १३४। चक्रादितः प्राग् परतः षष्ट्यष्टिभूपाङ्क गुणाकुदस्रास्तगः स्यात्, यस्मिन् दिवसे चक्रं द्वादशशतपरिमितं भवति तस्मात् चक्रात्प्रागृषष्टिदिनैर्भौमोऽस्तः चक्रात्

परतःषष्टि दिनैरुदयः-एवं गतगम्यदिनानि सर्वेषां ज्ञेयः मङ्गलस्य १२० बुधस्य ३२ जीवस्य ३२ शुक्रस्य ७८ मन्दस्य ४२ अत्र चक्रेण भौमेज्यशनीनां पश्चादस्तः प्रागुदयः, चक्रेण बुध शुक्रयोः प्रागस्तः पश्चादुदयः, एवं षड्भाद् चक्रार्द्धाद् ज्ञभृग्वोर्वसुपंचदिनानि प्रागस्तः पश्चादुदयः,यस्मिन् दिने षट्शत परिमितं चक्रं भवति तद्दिनात् प्राग् वसुदिनैर्बुधस्यास्तगः-आगामि वसुदिनैरुदयः शुक्रस्य षट्शत परिमित चक्रात् प्राग् पञ्चदिनैरस्तः परतः पञ्चदिनैरुदयः, अत्र बुधशुक्रयोश्चक्रार्द्धेन पश्चादस्तं प्रागुदयः, प्रागूनखेटः-अर्कादून ग्रहः प्रागस्तं याति, अर्कादधिकः परतः पश्चादस्तं याति गणितागतग्रहो यदि रवेराश्यादिभिरूनो भवति तदा तस्य प्रागस्तं योऽधिको भवति तस्यपश्चादस्तं याति, अस्तं ग्रहाणामदृश्यत्वं दृश्यत्वमुदयः॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

"भौमो गच्छति वक्रातां शुचिशराङ्के वै स्वशीघ्रोनिते
तद्वच्चन्द्र सुतस्त्रयोदश मुनौ जीवोऽरिषट् पर्वते ।
शुक्रः खेषुरसे खरांशुतनयो वह्नीन्दु नागे पुनः
कौटिल्यं परि हृत्य पुस्कलगतिर्मार्गीभवेच्छोधिते" ॥१॥

भा०टी०—चक्र १२०० को और चक्रार्द्ध ६०० को कहते हैं, मङ्गलका अपने चक्र से १३ वें मास में बुधका २ रे वृहस्पतिका ७ वें शुक्रका १० वें शनिका ६ वें मास में चक्रार्द्ध होता है, च-

कार्द्धके पूर्व भौमादिक क्रमशः ३६ ।१२।५६।२४।६७ दिन वक्री होते हैं और एतनाही एतनाही दिन तक चक्र के बाद वक्री रह कर फिर मार्गी होते हैं, अर्थात् मगल ७२ दिन, बुध २४ दिन, बृहस्पति ११२ दिन, शुक्र ४८ दिन, शनि १३४ दिन, तक वक्री रहते हैं, मंगल आदि अपने २ पूर्ण चक्र के पहिले क्रमशः ६० । १६ । १६ । ३९ । २१ दिन अस्त होते हैं, और एतनाही एतनाहि दिन चक्र के बाद अस्त रहिके उदय होते हैं, अर्थात् मंगल १२० दिन, बुध ३२ दिन, बृहस्पति ३२ दिन, शुक्र ७८ दिन, शनि ४२ दिन, अस्त रहते हैं। मङ्गल-बृहस्पति-शनिश्चर पश्चिम दिशा में अस्त होके पूर्व दिशा में उदय होते हैं, और बुध शुक्र पूर्वदिशा में अस्त होके पश्चिम दिशा में उदय होते हैं। चक्रार्द्ध के पहिले बुध ८ शुक्र ५ दिन पश्चिम दिशा में अस्त और एतनाही एतनाही दिन चक्र के बाद अस्त रहिके पूर्व दिशा में उदय होते हैं, अर्थात् बुध १६ दिन, शुक्र १० दिन, अस्त रहते हैं, ग्रहों का नियम किए हुए अंश आय जावै वह यदि सूर्य की राशि अंशादि से न्यून होय तो सूर्य के राश्यादि के पहले अस्त होय, और सूर्य से ग्रहकी राशि आदि अधिक होय तो सूर्य की राश्यादिक के बाद ग्रह अस्त होते हैं ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥

भौमादि ग्रहाणां चक्र-चक्रार्द्ध वक्र मार्गबोधक चक्रम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु	श.	ग्रह	
२६	४	१४	८०	१२	चक्रमान	
१३	२	७	१०	६	चक्रार्द्धमान	
० २ १२	२४	० ३ २२	० १ १८	० ४ १४	व. मा. दि.	वक्री,
१ ११ १८	० ३ ६	० १० ८	१ ६ १२	० ७ १६	व. मा दि.	मार्गी

भौमादीनांवक्रमार्गांशबोधक चक्रम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्रह
६५५	७१३	७६६	६५०	८१३	वक्रांश
५४५	४८७	४३४	५५०	३८७	मार्गांश

भौमादीनामस्तोदय बोधक चक्रम् ।

मं.	बु.	बृ.	शु.	श.		ग्रह
०	०	०	०	०	व.	पश्चिमास्त
४	०	१	०	१	मा.	
०	१६	२	१०	१२	दि.	
१	०	१	०	०	व.	पूर्वोदय
१०	१	०	८	१०	मा.	
०	६	२८	१६	१८	दि.	
०	०	०	०	०	व.	पूर्वास्त
०	१	०	२	०	मा.	
०	२	०	१८	०	दि	
०	०	०	०	०	व	पश्चिमोदय
०	१	०	८	०	मा.	
०	६	०	१६	०	दि.	

ग्रहाणामस्तोदयांश ज्ञानविधिः—

भौमोऽस्तं दहनग्रहे खजलदे-
सौम्योऽरिवेदागुरुः
व्योमाष्टैर्भृगुजो यमो रिपुरसैः
केन्द्रे स्वशीघ्रोनिते ।
लब्धास्तं शशिजास्त्रि पन्नगरसैः—
काष्ठारिपौ भार्गवः

ह्यस्मिन् चक्र विशोधिते समुदयं-
यान्ति ध्रुवं खेचराः ॥१६॥

सं०टी०—दहनग्रहे भौमोऽस्तं खजलदे सौम्योबुधः, अरिवेदा गुरुः, व्योमाष्टैर्भृगुजःशुक्रः, रिपुरसैर्यमः शनिः, त्रिपन्नग रसैः शशिजो बुधः, काष्ठारिपौभार्गवः शुक्रो लब्धःप्राग्गोऽस्तं यान्ति, एतस्मिन्नेव स्वशीघ्र चक्र १२०० शोधिते खेचरा ग्रहाध्रुवं समुदयं यान्ति, भौमः ९३ बुधः १७० गुरुः ४६ शुक्रः ८० शनिः ६६ केन्द्रांशगतेऽस्तं मङ्गलः ११०७ बुधः १०३० गुरुः ११५४ शुक्रः ११२० शनि ११३४ केन्द्रांशगते-उदयः भौमेज्यशनीनां पश्चादस्तः प्रागुदयः ज्ञशुक्रयोः प्रागस्तः पश्चादुदयः बुधः ६८३ शुक्रः ६१० केन्द्रांशे पश्चादस्तः, बुधः ५१७ शुक्रः ५९० केन्द्रांशे प्रागुदयः ॥१९॥

भा० टी०—मंगल ९३ बुध १७० वृहस्पति ४६ शुक्र ८० शनि ६६ केन्द्रांश होने पर अस्त होते हैं । मंगल-वृहस्पति-शनि पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं, और बुध-शुक्र पूर्वदिशा में अस्त होते हैं, इसको चक्र में शोधने से मिले अंशों पर मंगल-वृहस्पति-शनि पूर्वदिशा में उदय होते हैं, और बुध-शुक्र पश्चिम दिशा में उदय होते हैं अर्थात् मङ्गल ११०७ बुध १०३० वृहस्पति ११५४ शुक्र ११२० शनि ११३४ अंश पर उत्तर दिशा में उदय होते हैं, और बुध ६८३ शुक्र ६१० अंश पर पश्चिम में अस्त होते हैं, इसको चक्र से शोधे अंश पर अर्थात् बुध ५१७ शुक्र ५९० अंश पर पूर्व में उदय होते हैं॥१९॥

भौमादीनामस्तोदयांशज्ञानचक्रम्।

मं.	बु	बृ.	शु.	श.	ग्रह
९३	६८३	४६	६१०	६६	पश्चिमास्तांश
११०७	५१७	११५४	५९०	११३४	पूर्वोदयांश
०	१७०	०	८०	०	पूर्वास्तांश
०	१०३०	०	११२०	०	पश्चिमोदयांश

अगस्त्योदयविधिः—

पलप्रभा द्वित्रिहता खखाङ्क
युता स्फुटार्केण समो यदि स्यात्।
याम्ये तदास्यादुदयो निशान्ते
मुनेरगस्त्यस्य सुरारि हन्तुः॥२०॥

इति श्रीमच्छतानन्द विरचितायां भास्वत्यां ग्रहस्पष्टाधिकारश्चतुर्थः॥

सं० टी०—पलप्रभा द्वित्रिहता द्वात्रिंशद्गुणिता खखाङ्कयुता (पुनरष्टगुणिताषष्टि विभाजिता) याम्ये स्फुटार्केण समो यदि स्यात् तदा निशान्ते तत्समान राश्यादिके सुरारिहन्तुरगस्त्यस्य मुनेरुदयः स्यात्॥२०॥ *"पलभाष्टवधोन संयुता गजशैलावसुखेचरा लवा।

*उदाहरण—श्रीकाशीजी की पलभा ५। ४५ को ८ से गुणा तो ४६।० हुए इस को दो जगह धर के एक जगह के अंक को ७८ में हीन किया तो अगस्त्य के अस्त का अंश ३२ मिले, दूसरे जगह ९८ को युत किया तो उदय के अंश १४४ हुए, ३२ अंश में ३० का भाग देने से राशि १ अंश २ पर अगस्त्यजी का अस्त और १४४ में ३० का भाग देने से राशि ४ अंश २४ पर अगस्त्यजी का उदय स्पष्ट हुआ॥

इह तावति भास्करे क्रमाद् घटजोऽस्तंह्युदयं च गच्छते" ॥१॥

"चन्द्रश्रृङ्गोन्नतिज्ञानम्—

मीने मेषे गतश्चन्द्रः सततं दक्षिणोन्नतः ।

अन्येपूत्तर श्रृङ्गं स्यात् समं च वृषकुम्भयोः" ॥१॥

भा० टी०—पलभाको ३२ से गुणि उसमें ९०० को मिलावे फिर उसको ८ से गुणि ६० का भाग देने से अंशादि फल मिलते है, उसमें ३० का भाग देने से जो राशि आदि मिलै उसके समान सूर्यकी राशि आदि होनेपर दक्षिण में देवता के शत्रुयोंके नाश करने वाले अगस्त्य मुनिजी उदय होते हैं ॥ (आठ से गुणि कर साठ का भाग लेना एह सूर्य की स्पष्टी से अनुवर्तन किया जाता है) ॥२०॥

उदाहरण—श्री काशीजी की पलभा ५ । ४५ को ३२ से गुणा किया तो १८४ । ० हुए इसमें ९०० को मिलाया तो १०८४ । ० हुए फिर इसको ८ से गुणा तो ८६७२ । ० हुए इसमें ६० का भाग दिया तो फल अंशादि १४४ । ३२ मिले, अंशा १४४ में ३० का भाग दिया तो ४ । २४ । ३२ हुए, सिंहराशि के २४ अंश ३२ कला पर श्री१०८अगस्त्य जी का उदय स्पष्ट हुआ ॥ २० ॥

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुट मणि श्री६छत्रधर सूरिसूनुना गणक-
मातृप्रसाद विरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनीनाम
टीकायां ग्रहस्पष्टाधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥



त्रिप्रश्नाधिकारः ।

अयनांश विधिः—

शकेन्द्र कालात्खशराब्धिहीनात्
षष्ट्याप्तशेषे ह्ययनांशकाःस्यु ।
अहर्गणं तैर्युतमेव कुर्याद्
भवेद् द्युवृन्दं द्युनिशोः प्रमाणे॥१॥

सं० टी०—खशराब्धि हीनात्सार्द्ध चतुश्शतै रहिताच्छकेन्द्रकालाच्छकेन्द्र समयात् षष्ट्याप्तशेषे-अयनांशकाः स्युः, तैरयनांशकैरहर्गणं दिनगणं युतं मिलितमेव कुर्य्याद् द्युनिशोः प्रमाणे द्युवृन्दं दिन रात्रि मान ज्ञानार्थं सायनाख्य दिन गणं भवेत् ॥ १ ॥

भा० टी०—शालिवाहन के बीते हुए शाका में ४५० को घटाकर ६० का भाग देनेसे अयनांश होता है। अहर्गण को अयनांश में युक्त करने से दिन रात्रि का प्रमाण जानने के लिये सायन दिन गण होता है ॥ १ ॥

उदाहरण--शाका १८३२ में ४५० को घटाया तो १३८२ हुए, इसमें ६० का भाग देने से अयनांश २३ । २ हुआ । इसको दिन गण २७ में युत किया तो सायन दिन [illegible] हुआ ॥ १ ॥

चरविधिः--

द्युवृन्दतोऽगाष्टकुभिर्गजाम्बुदैः
स्वल्पंगतैष्योत्तर दक्षिणे तु ।
ततः खरामं क्रमशश्च दद्यात्
सार्द्धं सषष्टं च दलं चरार्द्धम्॥२॥

सं० टी०--द्युवृन्दतः सायन दिन गणाद्-अगाष्ट-कुभिर्गतगम्यं कृत्वा स्वल्पं ग्राह्यं सौम्यगोल संवन्धि चर दलं सौम्यं भवति, यद्यगाष्टि कुभ्योऽधिको दिन गणो भवति,तदागाष्ट कुभिर्हीनं विधाय-अवशिष्टं गजाब्दैर्गम्यं कृत्वा स्वल्पं ग्राह्यं तत्संवन्धि चर दलं भवति, ततः खरामाद्यः क्रमशः त्रिंशत् सार्द्धं पञ्चचत्वारिंशत् सषष्टं पञ्चत्रिंशच्च दलं पञ्चदशं लब्धफलं ग्राह्यम्, भाग शेषं भोग्य खण्डकेन गुणितं पूर्ववत् खरामाप्तं, भुक्तखण्डकेषु युक्तं याम्योत्तर सम्वन्धि चर दलम् जातम् ॥ २ ॥

भा० टी०--सायन दिन गणको १८७ में हीन करने से सौम्य शेष होता है, यदि न घटै तो दिन गण में १८७ हीन करके उसको १७८ में घटाने से याम्य शेष होता है, सौम्य शेष में सौम्य शेष और सायन दिन गण में से जो न्यून होय

उसमें, और याम्य शेष में दोनों शेष में से जो न्यून होय उस में ३० का भाग देने से क्रम से भुक्त खंड ४५।३५।१५ होता है, शेष को भोग्य खण्डा से गुणा करके उसमें ३० का भाग देने से जो लब्ध मिले उस के भुक्त खण्डा में हीन करने से चर होता है ॥ २ ॥

उदाहरण—सायन दिनगण ५०।३ को १८७ में घटाया तो सौम्य शेष १३६।५७ बचे सौम्य शेष से सायन दिनगण अल्प है इससे सायन दिन गण ५०।३ में ३० का भाग दिया तो फल १ मिला पहिला गत खंडा ४५ हुआ, शेष २०।३ बचे इस को भोग्य खंडा ३५ से गुणा तो ७०१।४५ हुए इसमें ३० का भाग देने से फल २३।२३।३० मिले, इसको भुक्त खण्डा ४५ में मिलाया तो सौम्यचर ६८।२३।३० हुआ, कल्पित सायन दिन गण २२५।३ है, यह १८७ में नहीं घटता इससे दिन गण में १८७ को घटाया तो याम्य शेष ३८।३ बचे, इसको १७८ में घटाया तो शेष १३९।५७ बचे, दोनों शेषों में पूर्व शेष ३८।३ अल्प है, इसमें ३० का भाग दिया तो फल १ मिला पहिला गत खंडा ४५ हुआ शेष ८।३ को भोग्य खंडा ३५ से गुणा तो २८१।४५ हुए इसमें ३० का भाग देने से लब्ध ९।२३।३० मिले इसको भुक्त खंडा ४५ में युक्त करने से याम्यचर ५४।२३।३० हुआ ॥ २ ॥

——:०:——

चरसारणीयम् ।

चा.घ.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	शेष
१ ३०	१ ३०	३ ०	४ ३०	६ ०	७ ३०	९ ०	१० ३०	१२ ०	१३ ३०	१५ ०	चर
चा.घ	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	शेष
१ ३०	१६ ३०	१८ ०	१९ ३०	२१ ०	२२ ३०	२४ ०	२५ ३०	२७ ०	२८ ३०	३० ०	चर
चा.घ	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	शेष
१ ३०	३१ ३०	३३ ०	३४ ३०	३६ ०	३७ ३०	३९ ०	४० ३०	४२ ०	४३ ३०	४५ ०	चर
चा.घ	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	शेष
१ १०	४६ १०	४७ २०	४८ ३०	४९ ४०	५० ५०	५२ ०	५३ १०	५४ २०	५५ ३०	५६ ४०	चर
चा.घ	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	शेष
१ १०	५७ ५०	५९ ०	६० १०	६१ २०	६२ ३०	६३ ४०	६४ ५०	६६ ०	६७ १०	६८ २०	चर
चा.घ	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	शेष
१ १०	६९ ३०	७० ४०	७१ ५०	७३ ०	७४ १०	७५ २०	७६ ३०	७७ ४०	७८ ५०	८० ०	चर
चा.घ	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	शेष
० ३०	८० ३०	८१ ०	८१ ३०	८२ ०	८२ ३०	८३ ०	८३ ३०	८४ ०	८४ ३०	८५ ०	चर
चा.घ	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	शेष
० ३०	८५ ३०	८६ ०	८६ ३०	८७ ०	८७ ३०	८८ ०	८८ ३०	८९ ०	८९ ३०	९० ०	चर
चा.घ	९१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	शेष
० ३०	९० ३०	९१ ०	९१ ३०	९२ ०	९२ ३०	९३ ०	९३ ३०	९४ ०	९४ ३०	९५ ०	चर

भाषावार्त्तिक-सौम्य शेष और सायन दिन गण में जो न्यून होय उसके, तथा याम्य में दोनों शेषों में जो अल्प होय उसके तुल्य चर सारणी में देखने से जो चर स्पष्ट मिले उसे एक स्थान में लिखै, फिर शेषके दूसरे अङ्क को पहला चर जिस कोष्ठ का होय उस के चालन से गुणा करने से जो होय उस को एक स्थान हटाकर पूर्व चर में युक्त करने से स्पष्ट चर होता है॥

उदाहरण-दूसरे श्लोक के उदाहरण से सौम्य शेष १३६।२७ है, और सायन दिनगण ५०।३ है, इन दोनों में सायन दिनगण अल्प है अतः इसके तुल्य चरसारणी में (यहां सायन दिन गण का शेष संज्ञा कार्य साधन के लिये है) देखने से याने सायन दिन गण के प्रथम अंक ५० के सामने देखने से ६८।२० मिले, और चालन धन १।१० है इससे शेष के दूसरे अंक ३ को गुणा तो ३।३० हुए इसको एक स्थान हटाकर चर ६८।२० में युक्त करने से स्पष्टचर ६८।२३।३० हुआ॥

दिन रात्रिमान नतविषयः—

पलप्रभाघ्नं शरषड्यमाप्तम्।
पञ्चेन्दुतस्तत् स्वमृणं स्वगोलात्।
अहर्दलं व्यस्तमितोनिशार्द्धम्
तयोर्गतैष्यान्तरितं नतं च॥ ३॥

सं० टी०—पलप्रभाघ्नं चरं शरषड्यमाप्तं फलं तत् पञ्चेन्दुतः स्वमृणं प्रकुर्य्यात् पञ्चदशमध्ये सौम्य याम्य-गोलत्वाद् धनमृणं कृतेसति, अहर्दलं दिनार्द्धं भवति तद्द्विगुणितं दिनमानं भवति दिनार्द्धं त्रिंशन्मध्ये व्यस्तं

निशार्द्धं भवति तद्द्विगुणीतं रात्रिमानं भवति ततस्त-
योर्गतैष्यान्तरितं पूर्व परनतं च भवति ॥ ३ ॥

भा० टी०—चर को पलभा से गुणाकर उस में २६५ का भाग देने से जो फल मिलै वह सूर्य सौम्य गोल में होय तो १५ में युक्त और यदि सूर्य याम्यगोल में होय तो १५ में हीन कर ने से दिनार्द्ध होता है, दिनार्द्ध को दूना करने से दिनमान होता है, दिनार्द्ध को ३० में घटाने से रात्र्यर्द्ध होता है, और रात्र्यर्द्ध को दूना करने से रात्रिमान होता है, और दिनार्द्ध रात्र्यर्द्ध का अन्तर नत होता है, वह दिनार्द्ध अधिक होय तो सौम्यनत, रात्र्यर्द्ध अधिक होय तो याम्यनत होता है ॥३॥

उदाहरण—चर ६८।२३ को पलभा ५।४५ से गुणा तो ३९३।१२ हुए इस में २६५ का भाग दिया तो फल १।२९ मिले सूर्य सौम्य गोल में हैं इस से इसको १५ में युत किया तो दिनार्द्ध १६।२९ हुआ इसको दो से गुणा किया तो दिन मान ३२।५८ हुआ दिनार्द्ध १६।२९ को ३० में घटाया तो रात्र्यर्द्धमान १३।३१ हुआ, इसको दूना किया तो रात्रिमान २७।२ हुआ, दिनार्द्ध रात्र्यर्द्ध का अन्तर करने से सौम्यनत २।५८ हुआ ॥ ३ ॥

प्रभाविधिः-

षड्घ्नं चरार्द्धं दशभाग हीनम्
योम्ये तु रामांशयुतं दशाप्तम् ।
तदर्क्षि हीनात्त वियुक्त युक्तम्
भानोरुदग् दक्षिणतः प्रभा स्यात् ॥४॥

सं० टी०—सौम्यं चरार्द्धं षड्घ्नं षड्गुणीतं स्वदश-भागहीनं दशमांशै रहितं दशाप्तं तदक्षिमध्ये ६०।२२हीने कृते भानोः सूर्यस्योदक मध्यप्रभा भवेत् तु षड्गुणितं चरार्द्धं स्वरामांशयुतं दशाप्तं तदक्षिमध्ये ५८।२२ युते कृते सूर्यस्य दक्षिणतः प्रभा भवेत् ॥ ४ ॥

भा० टी०—चर को ६ से गुणि के दो जगह धरै एक जगह १० का भाग देनेसे जो लब्ध मिलै उसको दूसरी जगह घटावें फिर उस में दश का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसको ६०।२२ में घटाने से सौम्य गोल के सूर्य में प्रभा होती है और याम्य गोल में चर को ६ से गुणा करके अपने तृतीयांश से युत करै फिर उस में १० का भाग देने से जो लब्ध मिलै उसको ५८।२२ में युत करने से प्रभा होती है ॥ ४ ॥

उदाहरण—चर ६८।२३ को ६ से गुणा तो ४१०।१८ हुए इसको दो जगह रक्खे एक जगह इसमें सौम्य गोल में सूर्य है इमसे १० का भाग दिया तो लब्ध ४१।२ मिले इसको दूसरी जगह ४१०।१८ में घटाया तो ३६९।१६ बचे इसमें १० का भाग देने से लब्ध ३६।५९ मिले इसको ६०।२२ में हीन किया तो सौम्यप्रभा २३।२७ हुई ॥ ४ ॥

छाया शङ्कु घटी विषयः—

छायादशघ्ना शतसंयुता च

मध्य प्रभोना भवतीह शङ्कुः ।

शताहताहर्दलतस्तदाप्त-

महर्गतैष्यो घटिकादिकालः ॥ ५ ॥

सं० टी०—दशघ्नादश गुणिता छाया शतसंयुता च पुनः मध्यप्रभोनेह शङ्कु र्भवति । अहर्दलं दिनार्द्धं शताहतं यज्जातं तत्तदाप्तं शङ्कुना विभाजितं महर्गतैष्योघटिकादिकालो भवति ॥ ५ ॥

भा० टी०—इष्ट छाया के १० से गुणि के उसमें १००को युतकर के फिर उसमें मध्य प्रभा घटाने से शङ्कु होता है। दिनार्द्ध को १०० से गुणि के उसमें सवर्णित शङ्कु का भाग देने से फल गत भोग्य (मध्याह्न के पूर्व गत मध्याह्न के वाद भोग्य) घटी होती है ॥ ५ ॥

उदाहरण—कल्पित इष्ट छाया १० है, इसको १० से गुणा किया तो १०० हुए इसमें १०० मिलाया तो २०० हुए, इसमें प्रभा २३। २७ को घटाया तो शङ्कु १७६।३३ हुआ । दिनार्द्ध १६।२९ को १०० से गुणा तो १६४८।२० हुए इसको ६० से गुणि के सवर्णित किया तो ९८९०० हुए, इसमें सजाती शङ्कु १०५९३ का भाग दिया तो घटी आदि ९।२० हुई ॥ ५ ॥

छाया विधिः—

खखेन्दु निघ्नाद्युदला गतैष्य-

नाड्याप्त मध्य प्रभयासमेतम् ।

शतोनितं तद्दशभिर्विभक्तम्

लब्धांगुलाद्या भवतीप्सिताभा ॥ ६ ॥

सं० टी०—खखेन्दु निघ्नाच्छतगुणिताद्युदलाद्-दिनार्धाद् गतैष्यनाड्याप्तफलं मध्यप्रभयासमेतं शतोनितं शतहीनं यत् तद्दशभिर्विभक्तं लब्धाङ्गुलाद्या -इप्सिताभा भवति ॥ ६ ॥

भा० टी०-दिनार्द्ध को १०० से गुणि के इसमें भुक्त या भोग्य घटी जो होय उसका भाग देने से जो फल मिलै उसमें मध्य प्रभा को युक्त कर के उस में १०० को घटाने से जो शेष बचै उसमें दश का भाग देने से (इप्सित्) अभीष्ट छाया होती है ॥६॥

उदाहरण—दिनार्द्ध १६।२९ को १०० से गुणा तो १६४८।२० हुए, इसको सजाती किया तो ९८९०० हुए इसमें घटी ९।२० के सजाती पल ५६० का भाग दिया तो लब्ध १७६।३३ मिले (लब्ध ३६ मिलता है परन्तु घटी ९।२० से कुछ अधिक होने से ३३ ही ठीक है) इसमें मध्य प्रभा २३।२७ युत किया तो २००।० हुए, इसमें १०० को घटाया तो १००।० हुए, इसमें १० का भाग देने से लब्ध इष्ट छाया १०।० अंगुलादि हुई॥६॥

लङ्कावधिदक्षिणाक्षविधेः—

लग्नं तु सूर्य्योदयतः प्रसाध्य
स्वभोदयैस्सौर दिनानुपातात् ।
चन्द्राश्विनिघ्नापलभार्द्धिता च
लङ्कावधेस्स्यादिह दक्षिणाक्षः ॥ ७ ॥

सं० टी०—स्वभोदयैः स्वदेशमानैः सौरादिनानुपातात् सूर्य्योदयतः लग्नं प्रसाध्य चन्द्राश्विनिघ्ना, एकविं-

शतिगुणिता पलभा, अर्द्धिता लङ्कावधेरिह दक्षिणाक्षः स्यात् ॥ ७ ॥

भा० टी०—सायन सूर्य के स्वदेशमान से अनुपात से लग्न को स्पष्टकरै । (अनुपात से लग्न बनावै इससे यह विदित हुआ कि इसके आगे का ४ श्लोक क्षेपक है) पलभा को २१ से गुणा करके उसको आधा करने से यहाँ लङ्का के अवधि से दक्षिणाक्ष होता है ॥ ७ ॥

उदाहरण—श्री काशीजी की पलभा ५।४५ को २१ से गुणा किया तो १२०।४५ हुए, इसको आधा किया तो लंका के अवधिका दक्षिणाक्षध्रुवा ६०।२२।३० हुआ (थोड़े दिन से कोई कोई विद्वान् काशी की पलभा ५।४० मानते हैं तिसपक्ष में दक्षिणाक्ष ५८।३० हुआ) ॥ ७ ॥

लग्नस्पष्टविधिः—

तत्कालिकोऽर्कोऽयन भागयुक्तः
तद्भोग्य भागैरुदयोहतः स्वः ।
खाग्न्युधृतस्तद्रविभोग्यकालम्
विशोधयेदिष्टघटीपलेभ्यः ॥ ८ ॥
तदग्रतो राश्युदयाश्च शेष—
मशुद्धहृत् खाग्निगुणं लवाद्यम् ।
अशुद्धपूर्वैर्भवनैरजाद्यै-
र्युक्तं तनुस्यादयनांशहीनम् ॥ ९ ॥

सं० टी–अयन भागयुक्तः तत् कालिकोऽर्कः तद् भोग्य भागैस्व-उदयोहतः गुणितः तत् खाग्न्युधृतो रविभोग्य कालः स्यात्, भोग्य कालमिष्टघटी पलेभ्यो विशोधयेत् तदग्रतो राश्युदयाश्च विशोधयेत् शेषं खाग्नि-गुणितमशुद्धहृतं लवाद्यमशुद्ध पूर्वैरजाद्यैर्भवनैर्युक्तं ततोऽयनांशहीनं तनुः स्यात् ॥ ८ ॥ ९ ॥

* " भोग्यतोऽल्पेष्टकालात् खरामाहतात् ।
स्वोदयाप्तांशयुग् भास्करःस्यात्तनुः" ॥

भा. टी.—जिस समय का लग्न साधन करना हो उस समय का सूर्य स्पष्ट करके उस में अयनांश युत करने से सायन सूर्य होता है, फिर उस सायन सूर्य की राशि को दूर करके अंशादि को ३० में घटाने से भोग्य अंश आदि होते हैं, फिर जो सूर्य

---

* उदाहरण—शाका १८३३ वैशाखशुक्ल १३ बृहस्पति के दिन सूर्य के उदय से शून्यघटी ४८ पल पर इष्टलग्नसाधन करना है। चालित सूर्य ०।२६।५०।४२ है, इस में अयनांश २३।३ जोड़ा तो सायन सूर्य १।१९।५३।४२ हुआ, इस पर से कही हुई रीति के अनुसार अर्थात् सायन सूर्य के भुक्त अंशआदि को ३० में घटाया तो भोग्यांश १०।६।१८ हुआ, इसको वृष के उदय २५३ से गुणा करके ३० के भाग से भोग्यकाल ८९।१३। ८ मिला, इससे पलात्मक इष्ट काल ०।४८ न्यून है इसलिये इसको ३० से गुणा किया तो १४४० हुआ इस में सायन सूर्य के वृष राशि के उदय २५३ का भाग दिया तो अंशआदि फल ५।४१।३० मिले इसको सूर्य ०।२६।५०।४२ में युत किया तो स्पष्ट लग्न १२।३२।१२ हुआ ॥

की राशि दूर कर दी थी उस राशि के अपने देश के उदय से उन भुक्त भोग्य अंश आदि को गुणाकर के उस में ३० का भाग देने से भुक्त भोग्यकाल होता है, फिर इष्ट काल के घड़ी को पलकर के उसमें (भुक्त) भोग्यकाल को घटावे घटाने से जो शेष बचै उस में सायन सूर्य के राशि के बाद की जितनी राशि घटें उनको घटा देवें फिर ऐसे घटाने से जो अंक शेष रहे उसको ३० से गुण के उस में अशुद्धोदय अर्थात् घटी हुई राशियों के आगे की जो राशि हो उस के मान से भाग देवै उससे जो अंश आदि फल मिले उस में, जिस राशि के मान तक का उदय इष्ट पल में घटा होय उस राशि का मेष से जितनी संख्या होय वह संख्या को राशि के स्थान में युक्त करे फिर उसमें अयनांशा घटाने से स्पष्ट लग्न होता है। (जो भुक्त लग्न बनावै तो जिस राशि के मान से गुणा करै उस उदय से पिछले उदय को घटावे और बाद पूर्ववत् क्रिया करके अंशआदि फल लेके फल में अशुद्ध लग्न राशि के अस्थान पर युक्त करै उस राशि के संख्या में से एक अंक की संख्या घटा कर अंश आदि को घटावै फिर शेष में अयनांशा को घटाने से स्पष्ट लग्न होता है) ॥ ८ ॥ ९ ॥

उदाहरण—सं० १९६८ शाका १८३३ वैशाख शुक्ल १३ वृहस्पति के सूर्य्योदय से इष्ट घड़ी ९ पल ११ है, इस समय पर लग्न साधना है, सूर्य ०।२६।१४।१७ इस में अयनांशा २३।२ को युत किया तो सायन सूर्य १।१९।५७।१७ हुआ, इसके राशिवृष को अलग रक्ख दिया भुक्त अंशआदिकों को ३० में घटाया तो भोग्यांश आदि १०।२।३ हुआ, इसको वृष के उदय २५३ से गुणा किया तो २५३८।२८।३९ हुए इसमें ३० का भाग दिया तो भोग्य काल ८४।३७।१७ हुआ, इष्ट

घटी ५ पल ११ को ६० से गुणि के सजाती किया तो ३११ हुए इस में भोग्यकाल ८४।३७ १७ को घटाया तो २२६।२२।४३ शेष बचे इसमें इसके आगे की राशि मिथुन का उदय ३०४ नहीं घटता इस मे उक्त शेष २२६।२२।४३ को ३० मे गुणा तो ६७०१।२१।३० हुए इस में अशुद्ध लग्न मिथुन के उदय ३०४ का भाग दिया तो लब्ध २२।२०।२४ मिले इसमें शुद्ध लग्न वृष की संख्या मेष से दो हुई इसको युत किया तो २।२२।२०।२४ हुए इस में अयनांश २३।३ को घटाया तो स्पष्ट लग्न १।२९।१७।२४ हुआ ॥ ८ ॥ ९ ॥

चरखण्डविधिः—

द्विगुणा विषुवच्छाया
विभजेत् क्रमशस्त्रिधा ।
सूर्य्याहः षड्गुणैर्लब्धम्
चर खण्डापला भवेत् ॥ १० ॥

सं० टी०—विषुवच्छाया पलभा द्विगुणिता त्रिधा स्थाप्या सूर्याहः षड्गुणैर्द्वादशपञ्चदशषट् त्रिंशद्भिः क्रमशः विभजेत् चर खण्डापला भवेत् ॥ १० ॥

भा० टी०—पलभा को २ से गुणा करके तीन जगह धरै तीनों जगह में क्रम से १२।१५।३६ का भाग देने से फल चर खण्डा होता है ॥ १० ॥

उदाहरण—काशी की पलभा ५।४५ को २ से गुणा तो ११।३० हुए इसको सजाती किया तो ६९० हुए इसको तीन जगह रक्खा पहले जगह १२ का भाग दिया तो फल ५७ मिला, दूसरे जगह १५ का भाग

दिया तो ४६ मिला, तीसरे जगह ३६ का भाग दिया तो फल १९ मिला, एवं काशी का चर खण्डा ५७।४६।१९। हुआ ॥१०॥

लङ्कामानंतन्मानात्स्वदेशमानविधिः—

वस्वर्क्षं नन्दनन्दाक्षि
त्रिरदं च क्रमोत् क्रमात् ।
चरखण्डोनितं युक्तं
विनाड्यो नाडिकादयः ॥११॥

सं० टी०—वस्वर्क्षनन्दनन्दाक्षित्रिरदं चरखण्डाभिः क्रमोत् क्रमादुनितं युक्तं च मेषा दीनांविनाड्यो नाडिका दयो भवन्ति ॥ ११ ॥

भा० टी०-लंका में मेष का २७८ वृष का २९९ मिथुन का ३२३ पलमान है इसका विपरीत करने से कर्कका ३२३ सिंह का २९९ कन्या का२७८ मान हुए, इन छःवो को उत्क्रम याने उलटा करने से तुलादि छः राशि का मान होता है। मेष आदि तीन राशि के मान में चर खण्डा हीन करने से मेष आदि तीन राशि का स्वदेश मान होता है और युत करने से कर्क आदि तीन राशि का स्वदेश मान होता है उसके उलटा करने से तुला से मीन राशि तक की स्वदेश मान होता है ॥११॥

उदाहरण—लंका में मेषादि तीन राशि का मान २७८।२९९। ३२३ है, इसमें काशी का चरखण्डा हीन किया तो मेषादि तीन राशि का स्वदेशमान २२१।२५३।३०४ हुए और खंडा युत किया तो कर्कादि तीन राशि का मान ३४२।३४५।३३५ हुए, इसको व्युत क्रम करने से तुलादि का मान ३३५।३४५।३४२।३०४।२५३।२२१ हुए ॥ ११ ॥

लङ्कोदयराश्युदयः		
मेष	२७८	मीन
वृष	२९९	कुम्भ
मिथु.	३२३	मकर
कर्क	३२३	धनुः
सिंह	२९९	वृश्चि.
कन्या	२७८	तुला

काश्यांराश्युदयः		
मेष	२२१	मीन
वृष	२५३	कुम्भ
मिथु.	३०४	मकर
कर्क	३४२	धनुष
सिंह	३४५	वृश्चिक
कन्या	३३५	तुला

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुटमणि श्रीदेछत्रधरसूरि सूनुना गणक सातृ प्रसादेन विरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनी नाम टीकायां त्रिप्रश्नाधिकारः पञ्चमः ॥ ५ ॥



अथ चन्द्रग्रहणाधिकारः ।

द्विगुणितरवौपर्वकालसंस्कार तत्कालिकराहु स्पष्टशरविधयः-

द्विघ्नो रविः पर्वकृताप्तयुतो
दिग्भिस्तमोऽष्टघ्नदिनं ध्रुवाढ्यम् ।
तमो युतार्कात् खखभाप्तसौम्यम्
याम्यं शरोऽल्पः स्वदशांशहीनः ॥१॥

सं० टी०—द्विघ्नो रविः द्विगुणितसूर्यः पर्वकृताप्तयुतः तत्कालिकोऽर्को भवति। दिनं दिनगणमष्टघ्नं दिग्भिर्विभाजितं तमध्रुवक आढ्यं युक्तं च तमोराहुःस्यात्, अर्काद्युतस्तम खखभाप्तं सप्तविंशतिशतैर्विभाजितं फलं सौम्ययाम्यशरः (एकेन त्रिभिर्याम्यः, द्वाभ्यां शून्येन सौम्यः) खखभैर्भक्ते सप्तविंशतिशतेन गत गम्यं कृत्वा यदल्पं भवेत्तद्ग्राह्यं स्वदशांशेनहीनः स्पष्टशरो भवति ॥१॥

भा० टी०—स्पष्ट सूर्य के दूना कर उसमें पर्वान्त नाड़ी का चतुर्थांश युत करने से पर्वकाल संस्कारित द्विगुणित सूर्य होता है। दिन गणको ८ से गुणि के उसमें १० का भाग देने से जो लब्ध मिलै वहराहु के ध्रुवा में युत करने से राहु होता है। पर्वकाल से संस्कारित द्विगुणित सूर्य में राहु के युक्त कर के २७०० का भाग देने से फल (१।३ मिलैतो) याम्य (०।२।४ मिलैतो) सौम्यशर होता है (जिस दिशा का शर होता है उसी दिशा का ग्रास होता है) शेष को २७०० में हीन करने

से जो शेष बचै वह और पूर्व शेष इन दोनों में जो न्यून होय उसको अपने दशांश से हीन करने से स्पष्टशर होता है ॥ १ ॥

उदाहरण–श्रीसंवत् १९६९ शाका १८३४ चैत्रशुक्ल पूर्णिमा के दिन चन्द्र ग्रहण का साधन करते हैं।

सूर्य २६१३।३०।२५ को दूना किया तो । ५२२७। ०। ५० हुआ, पर्वकाल ५३ घटी २३ पल में चार का भाग दिया तो लब्ध १३।२०।४५ मिले, इसको द्विगुणित सूर्य ५२२७।०।५० में युत किया तो पर्व-काल संस्कारित द्विगणित सूर्य ५२४०।२१।३५ हुआ । दिनगण ३५३ को ८ से गुणा तो २८२४ हुए इस में १० का भाग देने से फल २८२।२४।० मिले इसके राहु के ध्रुवा ९१३०।२९।२९ में युत किया तो तत्कालिक राहु ९४१२।४९।३९ हुआ । पर्व काल संस्कारित द्विगु-णीत सूर्य ५२४०।२१।३५ है इस में राहु ९४१२।४९।३९ को युत किया तो राहु युत पर्व काल संस्कारित सूर्य १०६५३।११।१४ हुआ, इसमें २७०० का भाग दिया तो फल ३ मिले इसमे योग्य शर हुआ शेष २५५३।११।१४ बचे इसको २७०० में हीन किया तो शेष १४६।४८।४६ बचे इन दोनो शेषों में दूसरा शेष १४६ ४८।४६ न्यून है अतः इसमें इसके दशमांश १४।४०।५२ को घटाया तो स्पष्टयाम्य शर १३२।७।५४ हुआ ॥ १ ॥

चन्द्र राहु मान ग्रास विषयः—

मानं हिमांशोर्गतिरग्निहीना
द्विघ्नं चतुर्भिश्चतमः प्रमाणम् ।
तद्योगतोऽर्द्धशरवर्जितं च
ग्रासःसुधांशोः स्फुटपर्वसन्धौ ॥२॥

सं० टी०—हिमांशोश्चन्द्रस्याग्निहीना वह्निरहितागतिर्हिमांशोः मानं भवति, इदं दशघ्नं दिग्भिर्गुणितं चतुर्भिर्विभाजितं तम प्रमाणं राहुमानं भवति तद्योगतोऽर्द्धं मानयोर्योगार्द्धं शरवर्जितं च सुधांशोः चन्द्रस्य स्फुटपर्वसन्धौ ग्रासःस्फुटः स्पष्टः स्यात् ॥ २ ॥

"छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुं भूमिभा-
छादकछाद्यमानैक्यखण्डं कुरु ।
तच्छरोनं भवेच्छन्नमेतद्यदा-
ग्राह्य हीनावशिष्टं तु खच्छन्नकम्" ॥ १ ॥

भा० टी०—चन्द्रमा की गति में ३ घटाने से चन्द्रमान होता है। चन्द्रमान को १० से गुणि के उसमें ४ का भाग देने से जो फल मिलै वह तमोमान होता है। चन्द्र-राहु मान के योग के आधे में शर घटाने से ग्राश होता है। (न घटै तो ग्रहण नहीं लगैगा यह जानै) ॥ २ ॥

उदाहरण—चन्द्रमा की गति १०२ में ३ को घटाया तो चन्द्रमान ९९ हुआ। चन्द्रमान ९९ को १० से गुणो तो ९९० हुए इसमें ४ का भाग देने से फल तमोमान २४७। ३० हुआ। चन्द्रमा के मान का और राहु के मान का योग किया तो ३४६। ३० हुए इस का आधा किया तो योगार्द्ध १७३। १५ हुआ इस में शर १३२। ७। ५४ को घटाया तो ग्रास ४१। ७। ६ हुआ ॥ २ ॥

स्थित्यर्द्ध स्पर्श-मध्य मोक्षकालविधयः—

स्थित्यर्द्धमङ्गाहतमिन्दुखण्डम्
खपञ्चयुक्खण्डफलं विमर्दम् ।

हीनं धनं पर्वणि शीतरश्मेः
स्पर्शोऽथमुक्तिश्च तदिष्टकालः ॥ ३ ॥

सं० टी०—इन्दुखण्डमेकत्राङ्गहतं षड्गुणितं, अन्यत्र खपञ्च युक् खण्डविखण्डितं पञ्चाशद् युक्तेन ग्रासेन विभाजितं स्थित्यर्द्धं भवति तद्दिनमान हीन पूर्णिमा घटिकासु हीनं धनं स्पर्श मोक्ष कालौ भवतः, पर्व घटिकासु हीने कृते सति स्पर्शकालः पर्वघटिकासु युते सति मोक्ष कालो भवति पर्व घटिकैव मध्यकाल इति ॥३॥

भा० टी०—ग्रास के दो जगह धर के एक जगह के अंक को ६ से गुणि सजाती कर लेवें फिर दूसरे जगह धरे हुए अंक में ५० को युत करि सजाती करके इसका सजाती षड् गुणित ग्रास में भाग देने से फल स्थित्यर्द्ध होती है। पर्वकाल में स्थित्यर्द्ध को घटाने से स्पर्शकाल होता है, और युक्त करने से मोक्षकाल होता है, और पर्वान्त के समान मध्यकाल होता है ॥ ३ ॥

उदाहरण—ग्रास ४१।७।६ है, इसको दो जगह रक्खे एक जगह के अंक को ६ से गुणा तो २४६।४२।३६ हुए, इसका एक राशि किया तो ८८८१९६ हुए, दूसरे जगह ग्रास ४१।७।६ रक्खा है इसमें ५० को युत किया तो ९१।७।६ हुए, इसको सजाती किया तो ३२८०२६ हुए इसका ८८८१५६ में भाग दिया तो फल स्थित्यर्द्ध २।४२ हुई। पर्व काल ५३। २३ में स्थित्यर्द्ध २।४२ को हीन किया तो स्पर्शकाल ५०।४१ हुआ, पर्व काल में स्थित्यर्द्ध को युत किया तो मोक्ष काल ५६।३ हुआ पर्व काल के तुल्य ५३।२३ मध्य काल हुआ ॥ ३ ॥

शरकृतिविधि—

खखेन्दुवेदाधिक भास्करस्य
प्रागवद्भचक्राप्तदिशः शरश्च ।
तत् खाष्ट भागस्य कृतिः सुधांशो-
र्यथा दिशं व्यस्तमितः खरांशोः ॥४॥

सं० टी०—खखेन्दु वेदाधिकभास्करस्य पर्वकाल-संस्कारितद्विघ्न सूर्यस्य प्राग्वत् पूर्ववत् भचक्राप्तदिशः शरश्च तत् खाष्टभागस्य सुधांशोश्चन्द्रस्य यथा दिशं कृतिः, इतः खरांशोःसूर्यस्य व्यस्तं, चन्द्रग्रहणे याम्यशरे याम्या सौम्यशरे सौम्याकृतिः, सूर्यग्रहणे याम्यशरे सौम्या सौम्य-शरे याम्याकृतिरिति ॥ ४ ॥

भा० टी०—पर्वकाल से संस्कारित द्विगुणित सूर्य में ४१०० को युत करके उसमें २७०० का भाग देके पूर्ववत् याम्य सौम्य दिशा का शर स्पष्ट करै (अर्थात् २७०० का भाग देने से लब्ध १।३ मिलै तो याम्य शर, और ०।२।४ मिलै तो सौम्य शर होता है। फिर शेष को २७०० में गत गम्य करने से जो शेष बचे वह और पूर्व शेष इनमें से जो न्यून होय उसके अपने दशमांश से हीन करने से स्पष्टशर होता है) स्पष्टशर में ८० का भाग देने से जो फल मिलै उसका कृति (वर्ग) बनावै। चन्द्रग्रहण में जिस दिशा का शर रहता है उसी दिशा की कृति होती है, और सूर्यग्रहण में याम्यशर में सौम्य कृति और सौम्यशर में याम्यकृति होती है ॥ ४ ॥

उदाहरण—पर्वकाल से संस्कारित द्विगुणित सूर्य ९२४०।२१।३९ है, इसमें ४१०० को युत किया तो ९३४०।२१।३९ हुए इस में २७०० का भाग दिया तो फल ३ मिले इससे याम्यशर हुआ शेष १२४०।२१।३५ को २७०० में हीन किया तो शेष १४५९।३८।२५ बचे इन दोनों शेषों में पहला शेष न्यून है अतः उसमें उसके दशमांश १२४।२।९ को हीन किया तो स्पष्ट याम्यशर १११६।१९।२६ हुआ । इसमें ८० का भाग देने से फल १३।५७।१४ मिले इसकी कृति याम्य १९४।३७ हुई ॥ ४ ॥

नत वलनविधी—

मध्यं दिनात् प्राक् परतश्चसौम्यम्
याम्यं नतं स्यादथ तत् कृतिश्च ।
कृत्यस्तु तुल्यान्यदिशोः क्रमेण
योगान्तरं वा वलनं रवीन्दोः ॥५॥

इति श्रीमच्छतानन्द विरचितायां भास्वत्यां
चन्द्रग्रहणाधिकारःषष्ठः ।

सं० टी०—सूर्यग्रहणे दिनार्द्धं मध्यदिनं चन्द्रग्रहणे दिनमानयुतं निशार्द्धं पर्वकालः मध्यादिनात् मध्यरात्रेः प्राग्सौम्यं परतः याम्यं नतम् पर्वकालादिनार्धयो रात्र्यर्धयोर्वान्तर कृते यदवशिष्टं तन्नतं स्यात । पर्वकालमध्यदिन मध्यरात्रि तुल्यतायाम् नताभावः । अथ तत् कृतिश्च नतकृतिः पूर्वकृति तुल्यान्यदिशो क्रमेण योगान्तरं कार्यम्- रवीन्दोःसूर्यसोमयोः याम्यसौम्य वलनं स्यात् ॥ ५ ॥

भा० टी०--मध्य दिन या मध्य रात्रि के पूर्व का पर्वकाल होतो सौम्य, पर का होय तो याम्य अर्थात् दिनार्द्ध, या मध्यरात्रि में पर्वकाल घटै तो सौम्यनत होता है और यदि पर्वकाल में दिनार्द्ध या मध्यरात्रि घटै तो याम्यनत होता है। नतका कृति बनावे यदि यह कृति और पूर्वकृति एकादिशा की होय तो योग करने से अन्य दिशा की होय तो गत गम्य करने से सूर्यचन्द्र का वलन होता है ॥ ५ ॥

उदाहरण—दिनमान ३०।४८ रात्रिमान २९।१२ अर्द्धरात्रि १४।३६ है; दितमान ३०।४८ में रात्रिमान का आधा १४।३६ युत किया तो मध्मरात्रि ४५।२४ हुई, पर्वकाल ५३।२३ इसके बाद का है इससे पर्वकाल में मध्यरात्रि मान को घटाया तो याम्यनत ७।५९ हुआ इसकी याम्यकृति ६३।४४ हुई, पहले की भी याम्यकृति १९४।३७ दोनो के एक दिशा के होने से योग किया तो याम्यवलन २५८।२१ हुआ ॥ ५ ॥

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुट मणि श्रीदेछत्रधर सूरिसूनुना गणकमातृप्रसाद विरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनीनाम टीकायां चन्द्रग्रहणाधिकारःषष्ठः ॥ ६ ॥



अथ सूर्यग्रहणाधिकारः ।

लम्बनविधिः ।

नताद् दशघ्ना जिनयुक् नताप्तम्
तल्लम्बनं तेन युतं नतं च ।
तत्खाङ्क निघ्नोन युतस्य भानोः
प्राचीप्रतीच्योरत्र शरः प्रसाध्यः ॥ १ ॥

सं० टी०—पूर्वानीत प्रकारेणानीतं नतं स्थान-द्वये स्थाप्यमेकत्रदशघ्नान्नतात्, अन्यत्राजिनयुक् नतातं चतुर्विंशति युतेन नतेन प्राप्तलब्धं लम्बनं, एवं पुनः पुनः कृतेसति स्थिरलंबनं भवति, तत् स्थिरलंबनं तेननतं युतं खाङ्कघ्नं पर्वान्तसंस्कृत द्विघ्न रवौ सौम्यनतत्वात् खाङ्कनिघ्नेन नतेन हीनं याम्यनतत्वाद् युक्तं भचक्रा-द्यादिक्रियाभिः प्राचीप्रतीच्योः शरः प्रसाध्यः चेति ॥ १ ॥

"तत् खाङ्क निघ्नु ऋणेऽधिकेऽर्काद् शतघ्नाकृनयश्चदेया ।
तत्खाङ्कहीनादथ चार्कहीनाच्छोध्यःशरो दृग्गुणितं यदूनः" १

भा० टी०—नतको दो जगह धर के एक जगह के नत को १० से गुणै उसमें दूसरे जगह रक्खे हुए नत में २४ युक्त कर के भाग देवै तो प्रथम लम्बन होता है, अब प्रथम लम्बन में नत को युतकरके दो जगह धर कर एक जगह १० से गुणा करके उसमें दूसरे जगह २४ को युत करके भाग देने से फल

द्वितीय लम्बन होगा ऐसे ही दूसरे वल न में न त को युत करके उक्त क्रिया करने से तृतीय वलन होगा, फिर जब तक स्थिर लंबन न आवे तब तक से इसी प्रकार से स्थिर लम्बन बनाने का प्रयत्न करता रहै (जिसके आगे उक्त क्रिया करने से न्यूनाधिक न होय उसको स्थिर लम्बन कहते हैं) स्थिर लम्बन में नत युक्त करके उसको ९० से गुणा करै गुणनफल को सौम्य नत होय तो पर्व काल से संस्कारि द्विघ्नरवि में हीन करे (न घटै तो ५४०० युत करके घटावै) याम्य नत होय तो युक्त करै, फिर पूर्व चन्द्रग्रहण धिकार के प्रथम श्लोक के अनुसार शरस्पष्ट करै, वह शर उक्त अधिकार के कहे हुए दिशा का होता है यहां पर प्राचीप्रतीची का जो नाम लिया है उसका सम्बन्ध विशेष करके परिलेखाधिकार के दूसरे श्लोक से है अर्थात् वहां पर इसको स्पष्ट रीति से दर्शाया जायगा ॥१॥

उदाहरण—श्री संवत् १९६८ शाका १८३३ कार्तिक वदि ३० रविवार के ४ घटी १६ पल पर सूर्य ग्रहण साधते हैं । दिनगण १९१ पर्वान्त ४।१६ सूर्य १३८४।५२।४ सूर्य की गति ७।२९ अंतर ७ चन्द्र १३७८।४४।४६ चन्द्रमा की गति ९५।० अन्तर ५ दिनार्द्ध १४।८ है। दिनार्द्ध १४।८ में पर्वान्त ४।१६ को घटाया तो सौम्यनत ९।५२ हुआ, इसको दो जगह रक्खे एक जगह के अंक को १० से गुणा किया तो ९८।४० हुए इसको एक राशि की या तो भाज्य ५९२० हुआ, दूसरी जगह के अंक में २४ को युत किया तो ३३।५२ हुए इस को सजाती किया तो भाजक २०३२ हुआ, इस भाजक का भाज्य ५९२० में भाग देने से प्रथम लम्बन २।५४ हुआ, इस को नत में युक्त करके पूर्ववत् क्रिया करने से द्वितीय ३।२८ तृतीय ३।३४ चतुर्थ ३।३५ पञ्चम लम्बन ३।३५ हुए, पञ्चम लम्बन चतुर्थ लम्बन के समान है, अतः चतुर्थ

लम्बन स्थिर लम्बन हुआ, स्थिर लंबन में नत ०।१२ को युत किया तो १३।२७ हुए फिर इस को ९० से गुणा तो १२१०।३० हुए, सूर्य १३८४।५२।० को दूना किया तो द्विगुणित सूर्य २७६९।४४।८ हुआ, पर्व ४।१६ में ४ का भाग देने से फल १।४ मिले इसको द्विगुणित सूर्य २७६९।४४।८ में मिलाया तो पर्वकाल संस्कारित द्विगुणित सूर्य २७७०।४८।८ हुआ इसमें पूर्वनत होने से ९० से गुणे हुए स्थिर लंबन १२१०।३० को घटाया तो १५६०।१८।८ बचे इसमें २७०० का भाग दिया तो फल० सौम्यशर हुआ, शेष १५६०।१८।८ को हर २७०० में घटाया तो शेष ११३९।४१।५२ बचे इन दोनों शेषों में दूसरा शेष न्यून है अतः इसमें इसके दशमांश ११३।५८।११ को घटाया तो सौम्यशर १०२५।४३।४१ हुआ ॥ १ ॥

नतिलम्बनस्य रवौसंस्कारसूर्यमानविधिः —

पृथक् शतांशाधिकरुद्रभक्त-
स्तदक्षयोगान्तरितो नतिः स्यात्।
तल्लम्बनं दिग्गुणितं गुणाप्तम्
हीनं धनं प्राक्परयोः खरांशोः॥२॥
ततस्तमः संप्रयुताच्छरश्च
शरावनत्यान्तरयुक् स्फुटः स्यात्।
मानं रवेर्भोग्ययुताङ्गनन्दा
तद्ग्राहकोऽधःस्थित एव चन्द्रः॥३॥

सं० टी०—सशरः पृथक् स्थानद्वये स्थाप्य एकत्र शतांशाधिकरुद्रभक्तोऽन्यत्र फलं तदक्षयोगान्तरितः, यदा

याम्य फलं तदा योगः यदा सौम्य फलं तदान्तरितो नतिः स्यात्, पूर्वानितस्थिरलम्बनं दिग्गुणितं गुणाप्तं प्राक् परयोःसौम्ययाम्ययोः खरांशोः हीनं धनं सौम्यनते हीनं याम्यनते धनं कार्यम् । ततस्तमः संप्रयुतात् पर्वकालसंस्कारितद्विघ्नभास्कराच्छरः साध्यः (स च शून्येन द्वाभ्यां च सौम्यः, एकेनत्रिभिर्याम्यः) शरावनत्यान्तरयुक् शरावनत्योरेकदिशो योगः भिन्नदिशोरन्तरकृते स्फुटः स्यात् । भोग्ययुताङ्कनन्दारवेर्मानं तद्राहुकोधः स्थितएवचन्द्रः ॥ २ ॥ ३ ॥

भा० टी०-शर को दो जगह धरके एक जगह के अंक में १०० का भाग देने से जो फल मिले उसमें ११ युक्त करके उसका दूसरे जगह धरे हुए अंक में भाग देने से जो फल मिले उसको "तदक्ष" में हीन युत करने से नति होती है। स्थिर लंबन को ११ से गुणिके उसमें ३ का भाग देने से जो फल मिलै उसको सौम्यनत होय तो पर्वकाल संस्कारित द्विघ्न रवि में हीन याम्यनत होय तो युक्त करै, फिर उसमें उस दिन के राहु के स्पष्ट करके युत करने से सूर्ययुत राहु होता है। सूर्ययुत राहु से स्पष्ट शर पूर्व को कही हुई रीति से बनावै । सूर्य के खण्डान्तर को ९६ में युक्त करने से सूर्य का मान होता है, आगे कहे हुए प्रकार से चन्द्रमान आदि बनाकर ग्रास स्पष्ट करै (मान योग के आधे में शर न घटै तो जानै ग्रहण न लगैगा) ॥ २ ॥ ३ ॥

उदाहरण—शर १०२५।४३।४१।को दो जगह रक्खे एक

जगह इसमें १०० का भाग दिया तो फल १०।१५ मिले इसमें ११ को मिलाया तो २१।१५ हुए इनका दूसरे जगह रक्खे हुए १०२५।४३।४१ में भाग दिया तो सौम्यफल ४८।१६ मिले इसको "तदक्ष" ६०।२२ में हीन किया तो सौम्य नति १२।६ हुई, स्थिर लंबन ३।३५ को १० से गुणा किया तो ३५।५० हुए इसमें ३ का भाग दिया तो फल ११।५७ मिले, इसको सौम्यनत होने से पर्वकाल संस्कारित द्विघ्न सूर्य २७७०।४८।८ में घटाया तो २७५८।५१।८ हुए, इसमें स्पष्टराहु ५२८३।१४।३९ को युत किया तो सूर्य युत राहु ८०४२।५।४७ हुआ। इसमें २७०० का भाग देने से फल सौम्यशर २ हुआ, शेष २६४२।५।४७ को हर २७०० में घटाया तो शेष ५७।५४।१३ बचे पूर्व शेष से यह शेष अल्प है इससे इसको अपने दशांश ५।४७ से हीन किया तो सौम्यशर ५२।७।१२ हुआ। नति के और शर के एक दिशा का होने से दोनों का योग किया तो स्पष्टशर ६४।१३।१२ हुआ। सूर्य के खण्डान्तर ७ को ९६ में मिलाया तो सूर्य मान १०३ हुआ, और चन्द्रभुक्ति ९५ में ३ हीन किया तो चन्द्रमान ९२ हुआ। इन दोनों मानों का योग किया तो मानयोग १९५ हुआ, इसको आधा किया तो मान योगार्द्ध ९७।३० हुआ, इसमें स्पष्टशर ६४।१३।१२ को घटाया तो ग्रास ३३।१६।४८ हुआ ॥ २ ॥ ३ ॥

स्थितिविधिः—

ग्रासाच्चतुघ्नात् सवितुः खराम
ग्रासैक्यलब्धं स्थितिमदनार्द्धम् ।
इतीहसूर्य ग्रहणे विशेषः
शेषस्तु चन्द्रग्रहवद् विचिन्त्यः ॥४॥

इति श्रीमच्छतानन्द विरचितायां भास्वत्यां
सूर्यग्रहणाधिकारः सप्तमः ॥ ७ ॥

०—सवितुःसूर्यस्य चतुर्भाद् ग्रासात् खराम-
स्थितिमर्द्दनार्द्धम् (पूर्वानीतग्रासः स्थानद्व-
त्रचतुर्भिर्गुणितोऽन्यत्र त्रिंशद् युक्तेन विभा-
र्द्ध तत् स्थानद्वये स्थाप्यमेकत्र दशघ्नमन्यत्र
युक्तेन भक्तं पूर्वानीतस्थित्यर्द्धे युक्तं जातं स्पष्ट-
) सूर्यग्रहणे इतीह विशेषः शेषस्तु चन्द्रग्र-
चिन्त्यः ॥ ४ ॥

०—ग्रास को दो स्थान में स्थापित करके एक स्थान
४ से गुणा करै द्वितीय स्थान के अंक में ३० को
चार से गुणे हुए गुणन फल में भाग देने से लब्ध
र्द्ध होती है, (इसको दो स्थान में धर के एक
क को १० से गुणै दूसरे स्थान के अंक में २४ को
क १० से गुणे हुए स्थित्यर्द्ध के गुणनफल में भाग
फल मिलै उसको पूर्व के स्थित्यर्द्ध में युक्त करने
त्यर्द्ध होती है) यहाँ सूर्यग्रहाधिकार में एही एतना
ा है शेष चन्द्र ग्रहणे के समान जानै ॥ ४ ॥

हरण—ग्रास ३३।१६।४८ को दो जगह रक्खे एक जगह
ो ४ से गुणा तो १३३।७।१२ हुए, दूसरे स्थान में रक्खे हुये अंक
: में ३० को युक्त किया तो ६३ । १६।४८ हुए इसका चार
ए ग्रास १३३।७।१२ में भाग दिया तो फल स्थित्यर्द्ध २।६ हुई,
को दो जगह धर के एक जगह के स्थितिमर्दनार्द्ध २।६ को १० से
या तो २१।० हुए, दूसरे जगह धरे हुए स्थितिमर्दनार्द्ध २।६ में
युत किया तो २६ । ६ हुए इसका दश से गुणी हुई स्थितिमर्दनार्द्ध

में भाग दिया तो लब्ध ०।४८ मिले इसको स्थितिमर्दनार्द्ध २।६ में युत किया तो स्पष्ट स्थित्यर्द्ध २।५४ हुई। इस स्थित्यर्द्ध २।५४ को पर्व काल ४।१६ में हीन किया तो स्पर्श काल १।२२ हुआ, स्थित्यर्द्ध २।५४ को पर्व काल ४।१६ में युक्त किया तो मोक्षकाल ७।१० हुआ, पर्व काल के समान मध्य काल ४।१६ हुआ। पूर्वानीत पर्वकाल संस्कारित द्विघ्न सूर्य २७७०।४८।८ है, इसमें ४१०० को युत किया तो ६८७०।४८।८ हुए इस में २७०० का भाग दिया तो फल सौम्य शर का सूचक २ मिले, शेष १४७०।४८।८ को २७०० में हीन किया तो शेष १२२९।११।५२ बचे, पूर्व शेष से यह दूसरा शेष न्यून है इससे इस में इसके दशमांश १२२।५३।११ को हीन किया तो सौम्य शर ११०६।१६।४१ हुआ, इसमें ८० का भाग दिया तो लब्ध १३।४९ मिले इसका याम्य क्रान्ति १९०।५४ हुई, और सौम्यनत ८५२ इसकी सौम्य क्रान्ति ९७।२१ हुई, दोनों क्रान्ति भिन्न भिन्न दिशा की हैं इससे अन्तर किया तो याम्य वलन ९३।३३ हुआ ॥

इति श्रीज्यौतिषीन्द्र मुकुटमणि श्रीछत्रधर सूरि सूनुना गणक मातृप्रसादेन विरचितायां भास्वत्यां छात्रबोधिनी नाम टीकायां सूर्यग्रहणाधिकारः सप्तमः ॥ ७ ॥



अथ परिलेखाधिकारः ।

शरादेरङ्गुलादि मानविधिः-

मानं शरादेस्त्वनतस्य पञ्च-
भागोनदिक् शेषहृताङ्गुलाद्याः ।
चन्द्रार्कमानाङ्गुलसंगुणा सा
खखागभक्ता वलनाङ्गुलानि ॥ १ ॥

सं० टी०—स्वनतस्य पञ्चभागोन दिक्शेषो हरः भाजकः स्यात्, शरादेः शेषहृताङ्गुलाद्याः मानं स्यात्, चन्द्रार्कमानाङ्गुल संगुणा सा खखागभक्ता वलनाङ्गुलानि भवेयुः ॥ १ ॥

"ग्राह्योनखण्डारससंगुणाच्चखपञ्चयुक्खण्डफलंविमर्दम् ।
हीनंधनंपर्वणिचन्द्रभानोर्निमीलकोन्मिलनकौभवेताम्"॥

"स्फुट तिथ्यावसाने तु मध्यग्रहणमादिशेत् ।
स्थित्यर्द्धनाडिकाहीने ग्रासं मोक्षं तु संयुते ॥ १ ॥
निमीलनोन्मीलनाद्ये भवतां सफल ग्रहे ।
तद्वदेव च मर्दार्द्धे नाडिकाहानिशं युतमिति" ॥२॥

भा० टी०—नत के पञ्चमांश को १० में हीन करने से हर (भजक) होता है, इसका चन्द्र ग्रहण में शर-चन्द्रमान-राहुमान और ग्रास में भाग देने से, और सूर्य ग्रहण में शर-सूर्यमान चन्द्रमान-और ग्रास में भाग देने से शरादिकों

का अङ्गुलादिक मान होता है। सूर्य ग्रहण में वलन का सूर्य के मानांगुल से और चन्द्र ग्रहण में चन्द्रमा के मानांगुल से गोमूत्रिका की रीति से गुणि के उसमें ७०० का भाग देने से अंगुलादि वलन होता है ॥ १ ॥

उदाहरण—चन्द्र ग्रहण में नत ७।९९ है, इसमें ५ का भाग दिया तो लब्ध १।३६ मिले इसको १० में हीन किया तो हर ८।२४ हुआ। शर १३२।७ है, इसको सजाती किया तो ७९२७ हुए इसमें सजाती हर ५०४ का भाग दिया तो चन्द्रमान का अंगुल आदि १५।४३ मान हुआ। चन्द्रमान ९९।० है, इसको सजाती किया तो ५९४० हुए इसमें सजाती हर ५०४ का भाग दिया तो चन्द्रमान का अंगुल आदि ११।४७ मान हुआ। राहुमान २४७।३० है, इसको सजाती किया तो १४८५० हुए इसमें सजाती हर ५०४ का भाग दिया तो राहुमान का अंगुलआदि २९।२८ मान हुआ। ग्रास ४१।७ है, इसको सजाती किया तो २४६७ हुए इसमें सजाती हर ५०४ का भाग दिया तो ग्रास का अंगुलआदि ४।५३ मान हुआ, वलन २९८।२१ को चन्द्रमा के मान अंगुल ११।४७ से गुणा किया तो ३४४।४७ हुए, इस में ७०० का भाग दिया तो फल अंगुलादि वलन ४ २१ हुआ।

सूर्य ग्रहण में नत ९।५२ है, इसका पंचमांश १।५८ होता है इसको १० में हीन किया तो हर ८।२। हुआ। शर ६४।१३ है, इसको सजाती किया तो ३८५३ हुए इस में सजाती हर ४८२ का भाग दिया तो शर का अंगुल आदि ७।५९ मान हुआ सूर्यमान १०३।० है, इसको सजाती किया ६१८० हुए इसमें सजाती हर ४८२ का भाग दिया तो सूर्य का अंगुल आदि १२।४९ मान हुआ। चन्द्रमान ९२।० है, इसको सजाती किया तो ५५२० हुए

इसमें सजाती हर ४८२ का भाग दिया तो चन्द्रमान अंगुल आदि ११।२७ हुआ। ग्रास ३३।१७ है, इसको सजाती किया तो १९९७ हुए इस में सजाती हर ४८२ का भाग दिया तो ग्रास का अगुलादि ४।८ मान हुआ। बलन ९३।३२ है, इसको सूर्य के मान अगुल १२।४९ से गुणा तो ११९९।२० हुए इसमें ७०० का भाग दिया तो बलन का अंगुल आदि १।४२ मान हुआ ॥ १ ॥

बलनदानविधिः—

चन्द्रार्कयोर्दिक्समसमण्डलस्य
सव्यापसव्ये वलनाग्रसूत्रे ।
मध्यादुदग्दक्षिणतः शरान्तात्
तमोर्द्धसूत्रेण रवीन्दुखण्डः ॥ २ ॥

सं० टी०—रवीन्दुखण्डः मध्यादुदग्दक्षिणतः चन्द्रार्कयोर्दिक्सममण्डलस्याग्रसूत्रे सव्यापसव्येन वलनं देयं, शिलातले भूमौ वा मण्डलं कृत्वा केन्द्रमध्ये दक्षिणोत्तररेखां कुर्यात् तत्रेन्दुमण्डले पूर्वभागस्सौम्यः पश्चिमभागो याम्यः, अर्कमण्डले रेखापश्चिमभागस्सौम्यः रेखा पूर्वभागो याम्यः, यदि चन्द्रस्य सौम्यशरस्तदोत्तरे वलनदानं यदि याम्यशरस्तदादक्षिणे वलनदानं, यदि सूर्यस्य सौम्य शरस्तत्तादिक्सममण्डलादुत्तरभागे वलनदानं यदि याम्यशरस्तदादिक् सममण्डलाद्दक्षिणेभागे वलनदानं देयं ततश्चन्द्रस्य सूर्यस्य वा मण्डलमध्याद् वलनमार्गेण शराङ्गु-

लानिदद्यात्, यत्र शरान्तात्तमोर्द्ध शरस्यान्तस्तत्रराहोर्मध्यान्तः (राहुशब्देन छादक ग्रहणं ज्ञेयम्)राहोर्मध्ये मानांगुलार्द्ध धृत्वा सूत्रं भ्रामयेत् तेन सूत्रेण चन्द्रस्य यावत्यङ्गुलान्याच्छाद्यन्ते तावन्ति ग्रासाङ्गुलानि वाच्याऽनीति, यत्र सूर्यग्रहे शरस्यान्तस्तत्र चन्द्रस्य मध्यान्तः तस्मिन् चन्द्रमध्ये मानाङ्गुलार्द्ध धृत्वा सूत्रं भ्रामयेत् तेनार्कस्य यावत्यङ्गुलानि छाद्यन्ते तावन्ति ग्रासाङ्गुलानि वाच्यानीति, ततो वलनदानं-यदि याम्यवलनं सौम्यशरस्तदा पश्चिमाभिमुखे वलनं देयं, यत्र सौम्यवलनं याम्य शरस्तत्र पूर्वाभिमुखे वलनं देयं, सूर्यग्रहणे विपरीतं ज्ञातव्यमिति ॥ २ ॥

"शरवलनयोः स्यातामेक राशौ यदा शशी ।
वलनं हि तदा पूर्वे भिन्ने जातौ तु पश्चिमे" ॥१॥

भा० टी०—चन्द्रमा या सूर्य के मानैक्य खण्डको मण्डल करके केन्द्रके मध्य में उत्तर दक्षिण रेखा करे, चन्द्रमण्डल में पूर्व भाग सौम्य पश्चिम भाग याम्य, और सूर्य मण्डल में पश्चिम भाग सौम्य पूर्व भाग याम्य संज्ञक होता है। चन्द्र का या सूर्य का सौम्यशर होय तो उत्तर वलनदान याम्य शर होय तो दक्षिण वलनदान करे, जहां पर शरका अंत होता है वहां राहु (छादक) का मध्यान्त होता है, राहु के मध्य में मानाङ्गुलार्द्ध धर के सूत्र को भ्रमावे उस से चन्द्रमा का जितने अंगुल ढँके उतने ग्रासके अंगुल कहै, सूर्य ग्रहण में जहां शरका

अंत होता है वाँ चन्द्रमा का मध्यान्त होता है तिस चन्द्रमा के मध्य में मानाङ्गुलार्द्ध धर के सूत्र को भ्रमावे उससे सूर्य के जेतने अंगुल ढँके उतने ग्रास के अंगुल कहै, चन्द्र ग्रहण में यदि वलन दक्षिण का और शर उत्तर का होय तो पश्चिम वलन को देवे, यदि वलन उत्तर का और शर दक्षिण का होय तो पूर्वमें वलन को देवे सूर्य ग्रहण में इससे विपरीत अर्थात् यदि वलन दक्षिण का और शर उत्तर का होय तो पूर्व में वलन को देवे यदि वलन उत्तर का शर दक्षिण का होय तो पश्चिम में वलन को देवे ॥२॥

चन्द्रसूर्ययोर्मानाङ्गुलस्पष्ट करणविधिः—

स्थित्यर्द्धनिघ्नै रसवेदभक्तै-
र्मानाङ्गुलैः प्राक्परतस्तदग्रात् ।
स्पर्शोथ मुक्तिश्च तदिष्ट काला-
दिन्दुग्रहेऽर्क ग्रहणे प्रतीपात् ॥३॥

सं टी०-चन्द्रमानाङ्गुलानि सूर्यमानाङ्गुलानि च स्थित्यर्द्धनिघ्नै रसवेदभक्तैर्लब्धानि स्पर्श मोक्षाङ्गुलानि स्युः, अथ स्पर्शोऽमुक्तिश्च तदग्रात् प्रागपरतः दातव्यानीति, वलनाग्रात् स्पर्शे पूर्वभागे दातव्यानि मोक्षाङ्गुलानि परतःपश्चिमभागे दातव्यानीति तदिष्टकालादिन्दु ग्रहे तत्पूर्वोक्त स्पर्शकालो वा मोक्षकालो ज्ञानतव्यः, अर्कग्रहणे प्रतीपात् पश्चिमभागे स्पर्शकालः पूर्वभागे मोक्ष काल इति ॥३॥

*"ग्रासं नखहतं कृत्वा विंबमानेन भजितम्।
लब्धं विंशोपका ज्ञेया ग्रहणे सूर्यचन्द्रयोः" ॥१॥
"धूम्रः कृष्णः पिङ्गलोऽल्पार्धसर्व
ग्रस्तश्चन्द्रोऽर्कस्तु कृष्णः सदैव"।
+"स्थान त्रये स्थाप्य कलेर्गताब्दा-

---

*उदाहरण—चन्द्रमा का ग्रास ४१। ७। ३८ को २० से गुणा किया तो ८२२। ३३। ४० हुए इस में बिम्ब ९९ का भाग दिया तो लब्ध ८ विंशोपका हुआ। सूर्यका ग्रास ३३। १६। ४८ को २० से गुणा तो ६६५।३६ हुए इसमें विम्ब १०३ का भाग दिया तो लब्ध ६ विंशोपका हुआ॥

+उदाहरण-चन्द्रग्रहण-संवत् १९६९ का है, यहां कलिका गताब्द संख्या ५०१३ है इसको तीन जगह में स्थापित किया। तीसरे जगह में ३१ को भाग दिया ता लब्ध १६१ मिले इसको दूसरे स्थान के अंक ५०१३ में घटाया तो ४८५२ हुए इसमें १८ का भाग दिया तो लब्ध २६९ मिले इस को प्रथम स्थान में स्थापित किये हुये अंक ५०१३ में युत किया तो ५२८२ हुए इस को २ से गुणा तो १०५६४ हुए इसमें ६ को युत किया तो १०५७० हुए इस में ७ का भाग देने से शेष ७ बचे इस से सातवां पर्वाधिप यम हुआ॥

सूर्य ग्रहण-संवत् १९६८ का है यहाँ कलिगताब्द संख्या ५०१२ है, इसको तीन जगह रक्खे तीसरे जगह के अंक ५०१२ में ३१ का भाग दिया तो लब्ध १६१ मिले इसको दूसरे जगह में रक्खे हुए ५०१२ में हीन किया तो ४८५१ हुए इस में १८ का भाग दिया तो लब्ध २६९ मिले इस को पहले जगह में रक्खे हुए ५०१२ में युत-

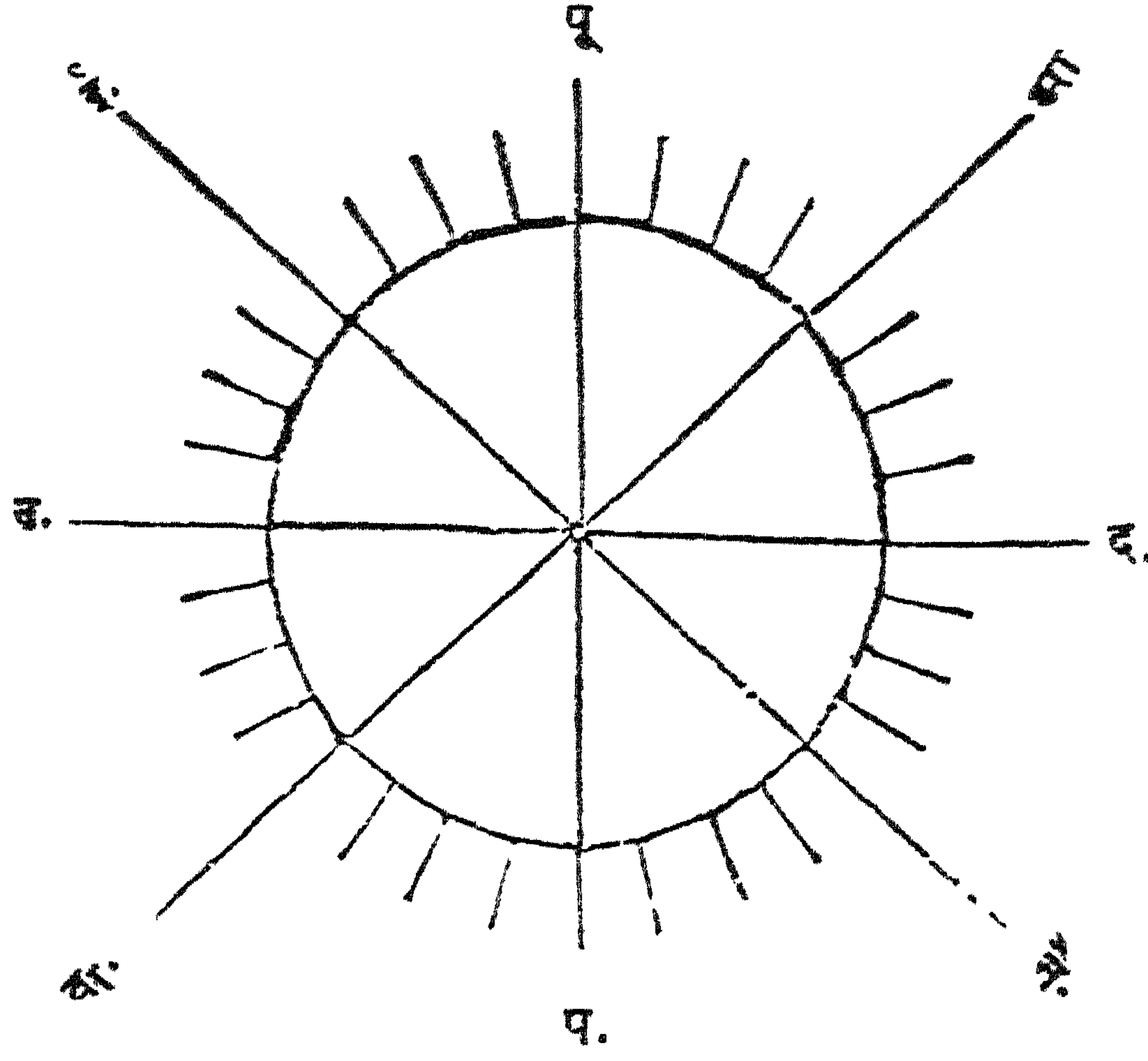
नन्त्यं भजेच्चन्द्रगुणैः फलोनः ।
द्विस्थस्तदृष्टेन्दु लवे तद्युक्त-
स्त्रिस्थः द्विनिघ्नोऽङ्गयुतोऽद्रिभक्तः ॥१॥
शेषे भवन्तीन्दु रविग्रहेऽस्मिन्
पर्वाधिनाथाः शदशाः फलैश्च ।
ब्रह्मेन्दु शक्रोत्तरदिक्प-
पाशि कुपीटयोन्यन्तकृतः क्रमेण" ॥२॥

भा० टी०–चन्द्रग्रहण में चन्द्रमा के मानांगुल को स्थित्यर्द्ध से गुणा करके उस में ६ का भाग देने से और सूर्य ग्रहण में सूर्य के मानाङ्गुल को अपने स्थित्यर्द्ध से गुणा कर के उस में ४ का भाग देने से लब्ध स्पर्श-मोक्ष के अङ्गुलादि होते हैं, वह बलन के आगे से स्पर्श काल के अंगुल को पूर्वभागदेवे मोक्ष-काल के अंगुल को पश्चिम भाग में देवे, सूर्य ग्रहण में पश्चिम भाग में स्पर्श काल पूर्व भाग में मोक्ष काल देवे ॥३॥

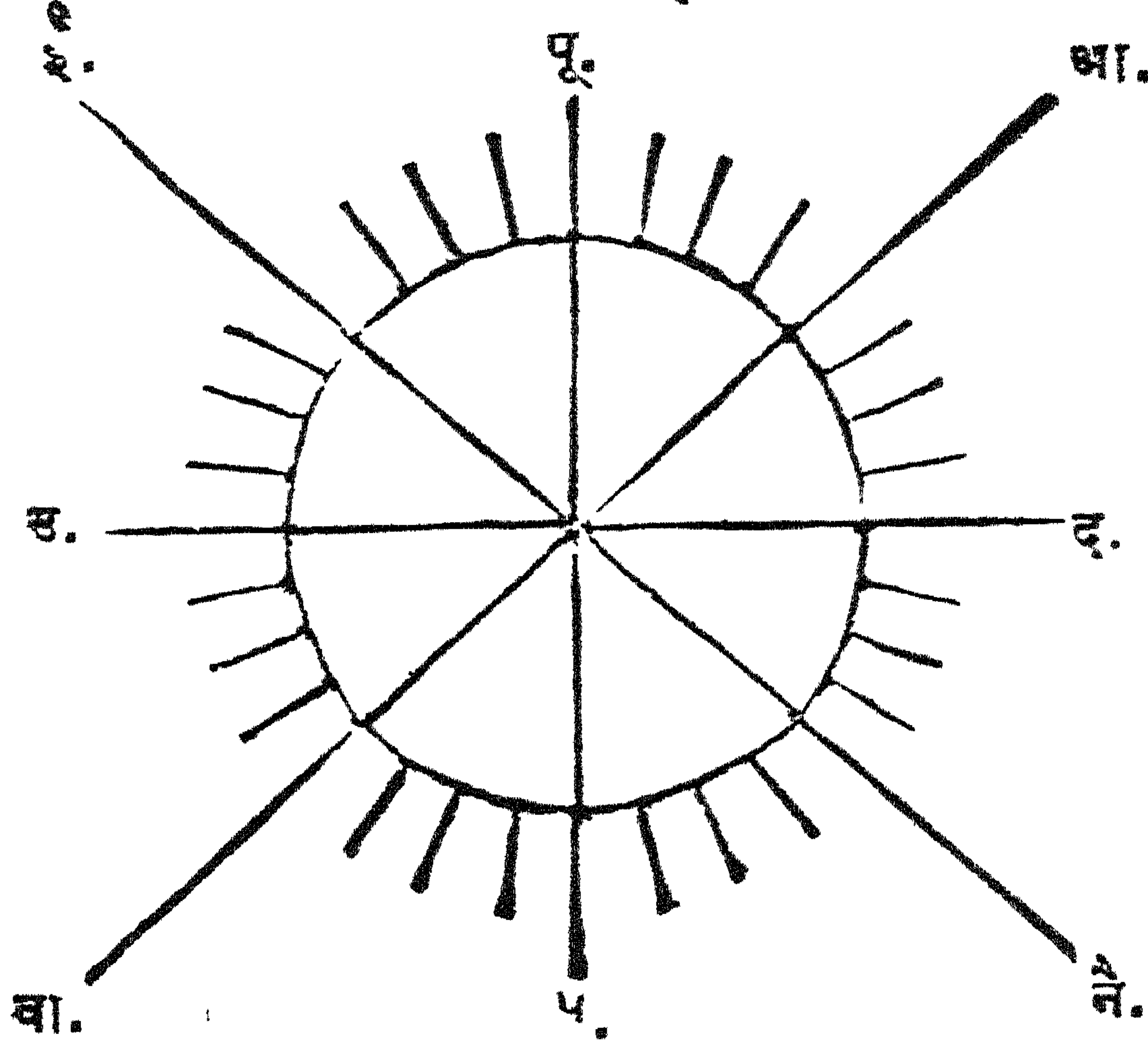
उदाहरण–चन्द्रमानाङ्गुल ११ । ४७ को स्थित्यर्द्ध २ । ४२ से गुणा किया तो ३१ । ४९ हुए इसमें ६ का भाग देने से लब्ध अङ्गु-लादि ५ । १८ मिले, सूर्यमानाङ्गुल १२ । ४९ को स्थित्यर्द्ध २।५४ से गुणा किया तो ३७ । १० हुए इस में ४ का भाग देने से लब्ध अंगुलादि ९ । १७ मिले ॥ ३ ॥

किया तो ५२८१ हुए इस को २ से गुणा किया तो १०५६२ हुए इस में ६ को युत किया तो १०५६८ हुए इस में ७ का भाग देने से शेष ५ बचे इस से पाँचवाँ पर्वाधिपति वरुण हुआ ॥

चन्द्रग्रहणम् ।



सूर्यग्रहणम् ।



ग्रन्थनिर्माणकालज्ञानम्—

खखाश्विवेदोपगते युगाब्दे
दिव्योक्तितः श्रीपुरुषोत्तमस्य ।

श्रीमाञ्छतानन्द इतीदमाह
सरस्वतीशङ्करयोस्तनूजः ॥४॥

इति श्रीमाञ्छतानन्द विरचितायां भास्वत्याः
परिलेखाधि कारोऽष्टमः ॥८॥

सं० टी०—सरस्वती शङ्करयोस्तनूजः श्रीमाञ्छतानन्द इति खखाश्विवेदोपगते युगाब्दे श्रीपुरुषोत्तमस्य सूर्यस्य दिव्योक्तित इदमाह ॥४॥

भा० टी०--सरस्वती शंकर के पुत्र जो श्रीमान् शतानन्द वह श्री सूर्य भगवान् की दिव्य उक्ति से ४२०० युगाब्द (शाका १०२१) में इस भास्वती पुस्तक को बनाया ॥४॥

इति श्रीज्यौतिषीन्द्रमुकुट मणि श्रीदछत्रधर सूरिसूनुना गणक-
मातृप्रसाद विरचितायां भास्वत्याः छात्रबोधिनीनाम
टीकायां परिलेखाधिकारोऽष्टमः ॥ ८ ॥

श्री १०८ सांकृत्य कुले मनीषि मुकुटो विश्वेश्वरोऽभूत्ततः
श्री १०८ कालीचरणोऽङ्ग दर्शन बुधो सद्धर्म वेत्ता ततः ।
श्री ६ मच्छत्रधराद् धरैक गणकान्मातृ प्रसादोऽस्तियस्-
त्र्यग्नीभेन्दु लसच्छके व्यरचयत् टीकां शिवप्रीतये ॥ १ ॥

पञ्चाङ्ग रचना क्लेश निश्शेषकरणोन्मुखी ।
कृता मातृप्रसादेन भास्वत्यां छात्रबोधिनी ॥ २ ॥

